चरवाही करने के लिए बुलाए गए

# परमेश्वर के लोग

पोर्टेबल स्कूल्स् के लिए
२०० पाठ की रूपरेखाएँ

संपादिका
थेल्मा ब्राउन

द्वितीय संस्करण
(मार्च 2022)

**AIDA**
**Association for International Discipleship Advancement**

विलिस को,
जिन्होंने ज़ायरे में
पोर्टेबल बाइबल स्कूल मूवमेंट को जन्म दिया,
तथा हमारे तीन प्रशंसनीय बेटों को,
तथा उन्हें जिन्होंने अफ्रीका के
हमारे जीवन तथा सेवकाई में
सृजनात्मकता एवं आनन्द लाया था।

CALLED TO SHEPHERD

GOD'S PEOPLE

- Hindi Translation

- Second Edition (2022)

Charwahi Karne Ke Liye Bulaye Gaye

PRAMESHWAR KE LOG

Second Edition (2022)

Copyright © **(AIDA) Association for International Discipleship Advancement**

Published by : **(AIDA) Association for International Discipleship Advancement**

**For Private Circulation Only**

चरवाही करने के लिए बुलाए गए

# परमेश्वर के लोग

## –: विषय–वस्तु :–


• प्राक्कथन ..... 4

1. बाइबल की पुस्तकें ..... 5

2. बाइबल के सिद्धान्त ..... 34

3. धर्मोपदेशकला ..... 68

4. झुंड की चरवाही ..... 84

5. पवित्र जीवन ..... 117

6. डिनॉमिनेशनल संबंध ..... 133

• संदर्भिका ..... 135

# प्राक्कथन

यह पुस्तक एक बहुत ही विशेष समूह के लोगों के लिए तैयार की गई है, प्रभु यीशु मसीह के अनुयायियों के लिए जिन्होंने उसकी बुलाहट को सुना है कि गाँव और शहरों के उन लोगों के मध्य उसकी सेवकाई करें जिन्हें प्रभु की आवश्यकता है। आपने अध्ययन, कार्य तथा प्रार्थना के लिए यह समय अलग कर लिए हैं ताकि आप उस कार्य के लिए तैयार हो जाओ जिसके लिए प्रभु ने आपकी अगुवाई की है। आप बहुत ही विशेष लोग हैं।

इस पुस्तक में 200 पाठ हैं। इनका अध्ययन चालीस दिनों की कक्षाओं में, प्रतिदिन पाँच घन्टे का अध्ययन करते हुए, पूरा करना है। हम यहां समय सारणी का एक सुझाव प्रस्तुत करते हैं जो परंपरागत आठ सप्ताहों की कक्षाओं के काम में लाया जाता है

07:30 - 08:00 - आराधना
08:00 - 08:50 - बाइबल की पुस्तकें
08:50 - 09:40 - बाइबल के सिद्धान्त
09:40 - 10:30 - धर्मोपदोशकला
10:30 - 10:50 - अवकाश
10:50 - 11:40 - झुंड की चरवाही
11:40 - 12:30 - पवित्र जीवन (प्रथम चार सप्ताह);
- डिनॉमिनेशनल संबंध (द्वितीय चार सप्ताह)

दोपहर तथा संध्या का समय पाठों के अध्ययन, कक्षा में पढ़ाए गए विषयों पर चर्चा के लिए तथा–सबसे अधिक महत्वपूर्ण–स्कूल के आस-पास 'मनुष्यों के मछुवे' बनने के द्वारा पाठों को व्यावहारिक रूप से उपयोग में लाने में लगाया जा सकता है। ये दिन के सबसे अधिक महत्वपूर्ण घन्टे हो सकते है!

हमें एक स्पष्टिकरण देने की अनुमति दीजिए। कुछ पाठ बहुत लम्बे या बहुत कठिन लगेंगे और कक्षा में सभी उन्हें एक घन्टे के अध्ययन में पूर्णत: समझ नहीं पाएँगे। एक ही पाठ दूसरे दिन की कक्षा में भी पढ़ने का मोह हो सकता है। परन्तु इसलिए कि पाठों को 200 घन्टों में से हर एक घन्टे के लिए सावधानी से विभाजित किया गया है, तथा इसलिए कि उन 200 घन्टों में से प्रत्येक घन्टा महत्वपूर्ण है, ऐसा करना सम्भव नहीं होगा। यदि किसी पाठ का अध्ययन अधूरा रह जाए तो उसे दोपहर की कक्षा में पूर्ण कीजिए तथा अगले दिन के नये पाठ के लिए तैयार हो जाइए।

ये 40 दिन, जो आपने अलग किए हैं कि परमेश्वर के अद्‌भुत वचन का अध्ययन करें तथा उसकी राजसी सेवकाई के लिए तैयार हो, आपके जीवन के सबसे अधिक सुन्दर दिन हो सकते हैं। हमारी प्रार्थना है कि यह सच होगा, और जो कुछ आपने सीखा है उसे आप स्नातक हो जाने के बाद परमेश्वर की सेवा करने में, और लोगों की अगुवाई करने में--किसी को उद्धार पाने हेतु तथा दूसरों को आत्मिक विकास तथा उसकी संगति में लाने हेतु--व्यावहारिक रूप से उपयोग में लाएँगे। ❐

# 1 बाइबल की पुस्तकें

-:परिचय:-

66 पुस्तकों की विषय सामग्री पर, जिसे हम बाइबल कहते हैं, प्रावीण्य प्राप्त करने के लिए आठ सप्ताह का समय बहुत ही कम है–संसार के सबसे अधिक उम्र के व्यक्ति का जीवन-काल भी इसके लिए कम है। परन्तु इस पाठ्यक्रम में सम्भव होगा कि इसके प्रत्येक पृष्ठ में पाई जाने वाली सम्पदा का स्वाद चखें तथा ऐसी आदत अपना लें कि अपने जीवन के हर एक दिन उसमें और अधिक खोजते रहें! परमेश्वर का वचन बुद्धि की बात कहता है, "अपने आपको परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और ऐसा काम करने वाला ठहराने का प्रयत्न कर" (2 तीमु 2:15)। जितना अधिक आप पवित्र शास्त्र बाइबल को जानेंगे, उतना अधिक आप उससे और उसके लेखक से प्रेम करेंगे। और यह आपके जीवन तथा आपकी सेवकाई में अनकही आशीष जोड़ेगा।

आपके लिये मेरी प्रार्थना:

"हमारे प्रेमी स्वर्गीय पिता, इस पाठक को इस बात में आशीषित कर कि उसमें अनंत सत्य के संतोषकारी समृद्ध वचन के लिये गहरी और हर्ष से भरी प्यास हो, जिसे तूने हमारे लिये अपने पवित्र पुस्तक में लिखा है। यीशु के नाम में, आमीन!"

इन पाठों को तैयार करने में तीन बहुत ही सहायक पुस्तकों का उपयोग किया गया है:

- 'व्हाट द बाइबल इज़ आल अबाउट'-लेखक हेनरित सी. मीयर्स;
- 'ब्रिफींग द बाइबल',-लेखक जे. वर्नन मेक्जी तथा
- 'द काम्पेक्ट सर्वे ऑफ द बाइबल',-लेखक जॉन बल्चीन।

इनमें से किसी भी पुस्तक का और अधिक अध्ययन करना हमें हमारे प्रभु की सेवकाई के लिये तैयार करने में अत्याधिक उपयुक्त एवं लाभदायक होगा।

# पाठ 1 - परिचय

बाइबल मनुष्यों के लिए परमेश्वर की इच्छा का लिखित प्रकाशन है। इसका केन्द्रीय विषय है: 'यीशु मसीह के द्वारा उद्धार!'

बाइबल में 66 पुस्तकें हैं, जिन्हें 40 लेखकों ने लगभग 1600 वर्षों के अंतराल में लिखा हैं।

पुराना नियम मुख्यत: इब्रानी (हीब्रू) भाषा में तथा नया नियम यूनानी (ग्रीक) भाषा में लिखा गया है। इसके लेखक राजा और राजकुमार, कवि और दार्शनिक, भविष्यद्वक्ता और राजनीतिज्ञ थे। कुछ उच्च शिक्षा प्राप्त किए हुए थे तो कुछ अशिक्षित मछुवे थे।

पुराना नियम 39 पुस्तकों से मिलकर बना है जिनके विषय इस प्रकार है:

| | |
|---|---|
| व्यवस्था | 5 पुस्तके |
| इतिहास-संबंधी | 12 पुस्तकें |
| काव्यात्मक | 5 पुस्तकें |
| भविष्यवाणी-संबंधी | 17 पुस्तकें, (5 बड़े और 12 छोटे भविष्यद्वक्ता) |

नया नियम में 27 पुस्तकें हैं जिन्हें चार समूहों में बांटा जा सकता है:

| | |
|---|---|
| सुसमाचार | 4 पुस्तके |
| आरंभिक कलीसिया का इतिहास | 1 पुस्तक |
| पत्रियां | 21 पुस्तकें |
| भविष्यवाणी-संबंधी | 1 पुस्तक |

बाइबल मानवजाति में उपलब्ध सबसे महान दस्तावेज है।
- इसे पढ़ने, - इसे अध्ययन करने, - इस पर विश्वास करने तथा
- इसे मानने की आवश्यकता है।

# पुराना नियम की पुस्तकें

## पाठ 2 - उत्पत्ति

बाइबल की प्रथम पाँच पुस्तकें मूसा द्वारा लिखी गई हैं और पंचग्रथ कहलाती हैं। "उत्पत्ति" शब्द का अर्थ मूल या जन्म होता है। उत्पत्ति 'आरम्भों' की पुस्तक है:– सृष्टि का आरम्भ (1:1-25), मानवजाति का आरम्भ (1:26-27), संसार में पाप का आरम्भ (3:1-7), उद्धार की प्रतिज्ञा का आरम्भ (3:8-24), पारिवारिक जीवन का आरम्भ (4:1-15), मानव-निर्मित सभ्यता का आरम्भ (4:16-9:29), विश्व के राष्ट्रों का आरम्भ (10, 11) तथा इब्री जाति का आरम्भ (अध्याय 12-50)।

उत्पत्ति मानव की असफलता का इतिहास है। यह पुस्तक "परमेश्वर" के साथ आरम्भ होकर "शव सन्दूक" में अन्त होती है। नीचे एक रूपरेखा प्रस्तुत है जो इस पुस्तक को दो बड़े विचारों में विभाजित करती है:

1. पृथ्वी पर पाप का प्रवेश (अध्याय 1-11)।
    1. सृष्टि (अध्याय 1, 2)।
    2. पतन (अध्याय 3, 4)।
    3. जल-प्रलय (अध्याय 5, 9)।
    4. बाबुल का गुम्मट तथा भाषा में गड़बड़ी (अध्याय 10, 11)।
2. उद्धारकर्त्ता के आने के लिए तैयारी (अध्याय 12-50)।
    1. इब्राहीम, विश्वास का पुरुष (अध्याय 12-23)।
    2. इसहाक, प्रिय पुत्र (अध्याय 24-26)।
    3. याकूब, परमेश्वर द्वारा प्रिय जाना गया और दंडित किया गया (अध्याय 27-36)।
    4. यूसुफ, जिसने दु:ख उठाया तथा परमेश्वर के प्रति सच्चा रहा (अध्याय 37-50)।

## पाठ 3 - निर्गमन

निर्गमन का अर्थ "बाहर जाने का मार्ग" है।

मात्र सत्तर लोग मिस्र गए थे परन्तु मिस्र छोड़ने से पहले वे तीस लाख के एक राष्ट्र के रूप में बढ़ चुके थे। उत्पत्ति मनुष्य के पतन के विषय में बताती है; निर्गमन सर्वसामर्थी परमेश्वर द्वारा छुटकारे के कार्य को बताती है। इस पुस्तक का आरम्भ अन्धकार एवं उदासी से होता है और अन्त महिमा से होता है।

निर्गमन अध्याय 12, फसह के पर्व की रोमांचक कहानी है। यह प्रभु यीशु मसीह

के बहाए लहू पर विश्वास करने से हमें मिलने वाले व्यक्तिगत उद्धार का पुराना नियम का सर्वाधिक स्पष्ट चित्र है। निर्गमन की रूपरेखा इस प्रकार है:

1. परमेश्वर मूसा को (एक छुड़ाने वाले को) तैयार करता है (अध्याय 1-11)।
2. लहू और सामर्थ के द्वारा छुटकारा (अध्याय 12-14)।
3. सीनै पर्वत की ओर प्रस्थान, लोगों का आत्मिक शिक्षण (अध्याय 15-18)।
4. व्यवस्था का दिया जाना (हमें हमारा अत्यधिक पापीपन दिखाने के लिए परमेश्वर का दर्पण) (अध्याय 19-24)।
5. निवासस्थान का नक्शा तथा निर्माण - परमेश्वर अपने लोगों के मध्य रहता था इसका प्रमाण (अध्याय 25-40)।

## पाठ 4 - लैव्यव्यवस्था, गिनती तथा व्यवस्थाविवरण

लैव्यव्यवस्था की पुस्तक इस्राएल की संतान को उनके धार्मिक प्रशिक्षण में सहायता करने वाली परमेश्वर की चित्र-पुस्तिका है। प्रत्येक चित्र यीशु मसीह द्वारा भविष्य में किए जाने वाले कार्य की ओर संकेत करता है। यह प्रायश्चित्त की पुस्तक कहलाती है। बलिदान कहते है: "ठीक हो जाओ"। पाँच बलिदान हैं: होमबलि, अन्नबलि, मेलबलि, पापबलि, दोषबलि। पर्व कहते हैं: "ठीक रहो"। आठ पर्व हैं। विश्रामदिन (23:1-3), अखमीरी रोटी का पर्व (23:4-5), पिन्तेकुस्त (पचासवे दिन) का पर्व (23:15-22), तुरहियों का पर्व (23:23-25), प्रायश्चित्त का दिन (23:26-32), झोपड़ियों का पर्व (23:33-36), परमविश्राम का वर्ष (25:1-7) तथा जुबली वर्ष (25:8-24)। बलिदानों ने उस लहू के विषय में बताया जिसने बचाया। पर्व उस भोजन के विषय में बताते हैं जो जीवन को बनाए रखता है।

गिनती की पुस्तक सीनै पर्वत से कनान देश (प्रतिज्ञा के देश) की सीमा तक जंगल में भ्रमण की पुस्तक है। इसे कुड़कुड़ाने की पुस्तक भी कह सकते है। इसका मुख्य विचार अनुशासन है। गिनती विश्वासी की चाल से संबंधित बातों का वर्णन करती है।

अध्याय 1-16 हमें ईश्वरीय विधि-व्यवस्था देते हैं।

अध्याय 17-30 इस्राएल राष्ट्र के पतन का वृत्तान्त बताते हैं।

अध्याय 31-36 इस्राएलियों के यहोवा की ओर लौट आने तथा जंगल में भी अन्तिम विजय प्राप्त करने का वर्णन है।

इस पुस्तक में मूसा, हारून, मरियम, यहोशू तथा कालेब प्रमुख व्यक्ति हैं।

व्यवस्थाविवरण स्मरण की पुस्तक है। यह मूसा के उन संदेशों तथा गीतों का संकलन है जो उसने इस्राएल की संतानों को अपनी विदाई के रूप में दिए थे। यह

पुस्तक आज्ञाकारिता की आशीषों तथा अनाज्ञाकारिता के शाप के विषय में बताती है। यह मात्र दो महीनों का वर्णन है; जिसमें वे तीस दिन भी हैं जिनमें मूसा की मृत्यु पर शोक मनाया गया था। यीशु प्राय: व्यवस्थाविवरण का संदर्भ देता था। उसने शैतान को इसी पुस्तक के पदों से उत्तर दिए थे। व्यवस्थाविवरण की पुस्तक पृथ्वी पर स्वर्ग का स्वाद देती है।

पुनर्विचार : हम उत्पत्ति में मनुष्य को बिगड़ा हुआ; निर्गमन में मनुष्य को उद्धार किया गया; लैव्यव्यवस्था में मनुष्य को आराधना करता हुआ; गिनती में मनुष्य को सेवा करता हुआ; व्यवस्थाविवरण में मनुष्य को आज्ञा मानना सीखता हुआ देखते हैं।

## पाठ 5 - यहोशू, न्यायियों तथा रूत

यहोशू की पुस्तक इतिहास की पुस्तकों का आरम्भ है। यह आत्मिक सच्चाई, प्रोत्साहन तथा बुद्धि से भरी हुई है। मूसा मर चुका था, परन्तु आगे बढ़ना जारी रहना था। जिस कार्य को मूसा ने आरम्भ किया था उसे यहोशू ने पूर्ण किया। इस महान अगुवे के विषय में लिखित इस पुस्तक को दो भागों में बाँट सकते हैं:

1. प्रतिज्ञा के देश पर विजय पाना (अध्याय 1-12)।
2. प्रतिज्ञा के देश को अधिकार में कर लेना (अध्याय 13-24)।

न्यायियों की पुस्तक इस्राएलियों के अन्धकारमय युग का वृत्तान्त है। इस्राएलियों ने परमेश्वर को त्याग दिया (न्यायि 2:13) और परमेश्वर ने भी उन्हें त्याग दिया (2:23)। न्यायियों की पुस्तक में, उनके महान अगुवे यहोशू के मरने के बाद से लेकर शाऊल के इस्राएल के राजसिंहासन पर विराजने तक का काल सम्मिलित है। प्रतिज्ञा के देश में उन पहले 350 वर्षों में कोई राजा नहीं था। "जिसको जो ठीक सूझ पड़ता था वही वह करता था," यह वाक्यांश पूरी पुस्तक में पाया जाता है। यह पुस्तक मनुष्य की निरंतर असफलता तथा परमेश्वर की निरंतर करुणा को दिखाती है। इसकी रूपरेखा इस प्रकार हो सकती है: सात स्वधर्मत्याग, सात मूर्तिपूजक देशों की सात गुलामी, तथा सात छुटकारे!

रूत की पुस्तक, हमें यीशु मसीह, हमारे 'छुड़ानेवाले कुटुम्बी,' के विषय में बताती है। यह पुस्तक न्यायियों की काली पृष्ठ-भूमि पर चमकता हुआ चित्र है तथा साथ ही मसीह और कलीसिया का सुंदर चित्र है। यह गिदोन तथा यिप्तह के शासनकाल के समय की घटनाओं को अंकित करती है। रूत उस दाऊद की परदादी थी जो मसीह का पूर्वज था। यह पुस्तक मसीह से संबंधित उस परिवार तथा राष्ट्र का आरम्भ बताती है जिसमें मसीह को पैदा होना था। रूत एक मोआबी कन्या थी, उस

मोआबी जाति की जिसके लोग लूत के वंशज, मूर्तिपूजक लोग थे। परमेश्वर के अनुग्रह का, अन्यजातियों को मसीह के परिवार में अपनाने का, कैसा अनोखा चित्र!

## पाठ 6 - पहला तथा दूसरा शमूएल

पहला शमूएल राजाओं की छः पुस्तकों में से पहली पुस्तक है। ये छः पुस्तकें शमूएल, राजा तथा इतिहास की दो-दो पुस्तकें हैं। पहले शमूएल में अंकित घटनाएँ लगभग 115 वर्षों के काल को सम्मिलित करती है। अर्थात् उस काल को जो शमूएल के जन्म से लेकर राजा शाऊल के समस्याग्रस्त शासन से होते हुए दाऊद के राज्य के आरम्भ तक का था। इस पुस्तक को इसके तीन प्रमुख व्यक्तियों के नाम पर विभाजित किया जा सकता है:

1. शमूएल, परमेश्वर का भविष्यद्वक्ता (अध्याय 1-17)।
2. शाऊल, परमेश्वर के प्रति अनाज्ञाकारी एवं असफल राजा (अध्याय 8-15)।
3. दाऊद, परमेश्वर का जन (अध्याय 16-31)।

दूसरा शमूएल - पहला शमूएल मनुष्यों के द्वारा चुने गए राजा शाऊल की असफलता का वर्णन करता है। दूसरा शमूएल परमेश्वर के द्वारा चुने गए राजा दाऊद के सिंहासन पर बैठने का तथा "दाऊद के घराने" की स्थापना का वर्णन है जिससे भविष्य में मसीह का आना होना था। दाऊद परमेश्वर के 'मन के अनुसार' व्यक्ति था—वह सिद्ध नहीं था, पर जब पाप में गिरा तो उसने पश्चात्ताप किया। वह अत्यंत बहुमुखी व्यक्ति था—चरवाहा बालक, राजदरबार में संगीतकार, सैनिक, सच्चा मित्र, निष्कासित कप्तान, राजा, महान सेनापति, कवि, पापी तथा टूटे हृदयवाला वृद्ध परन्तु सर्वदा परमेश्वर से प्रेम करने वाला जन था। इस पुस्तक को दो भागों में बाँटा जा सकता है:

1. दाऊद की विजय, अध्याय 1-10
2. दाऊद की समस्याएँ, अध्याय 11-24

## पाठ 7 - पहला तथा दूसरा राजा

शमूएल की पुस्तकों में आरम्भ किया गया वृत्तान्त राजाओं की पुस्तकों में जारी रहता है। राजाओं की दोनों पुस्तकों में 400 वर्ष का समय सम्मिलित है जिसमें पहले इस्राएल के राज्य के विकास फिर विनाश तथा विभाजन का विवरण है। दक्षिणी राज्य यहूदा में 20 राजा तथा उत्तरी राज्य इस्राएल में 19 राजा थे। यहूदा तथा इस्राएल दोनों ही बन्धुवाई में ले जाए गए थे। तब परमेश्वर के लिए दो शक्तिशाली आवाजें थीं:- पहला राजा में न्याय तथा कठोरता का भविष्यद्वक्ता एलिय्याह, तथा दूसरा राजा में

अनुग्रह तथा कोमलता का भविष्यद्वक्ता एलीशा। इन दो पुस्तकों के महत्वपूर्ण भाग ये हैं:

1. दाऊद की मृत्यु (1 राजा 1, 2)।
2. सुलैमान के राज्य का वैभव (1 राजा 3-11)।
3. राज्य का विभाजन (1 राजा 12 - 2 राजा 16)।
4. अश्शूर द्वारा इस्राएल को बन्धुवाई में ले जाना (2 राजा 17)।
5. बाबुल द्वारा यहूदा का पतन तथा बन्धुवाई (2 राजा 18-25)।

## पाठ 8 - पहला तथा दूसरा इतिहास

इतिहास की पुस्तकें, राजा की पुस्तकों की ही घटनाओं का वर्णन एक भिन्न दृष्टिकोण से करती हैं। राजा की पुस्तकों में राष्ट्र का इतिहास सिंहासन से दिया गया है, इतिहास में वह वेदी से दिया गया है। राजाओं में राजमहल तो इतिहास में मंदिर केन्द्र है। राजा की पुस्तकें राजनैतिक इतिहास का तथा इतिहास की पुस्तकें धार्मिक इतिहास का वर्णन करती हैं। राजा हमारे सम्मुख मनुष्य के दृष्टिकोण को व्यक्त करते हैं, परन्तु इतिहास परमेश्वर के दृष्टिकोण को व्यक्त करते हैं। दूसरा इतिहास पाँच महान बेदारियों का वर्णन करता है: आसा की अधीनता में (अध्याय 15); यहोशापात की अधीनता में (अध्याय 20); योआश की अधीनता में (अध्याय 23, 24); हिजकिय्याह की अधीनता में (अध्याय 29-31); योशिय्याह की अधीनता में (अध्याय 35)।

पहला इतिहास की रूपरेखा

1. वंशावलियाँ (अध्याय 1-9)।
2. शाऊल का राज्य (अध्याय 10)।
3. दाऊद का राज्य (अध्याय 11-29)।

दूसरा इतिहास की रूपरेखा

1. सुलैमान का राज्य (अध्याय 1-9)
2. राज्य का विभाजन तथा यहूदा का इतिहास (अध्याय 10-36)।

## पाठ 9 - एज्रा, नहेमायाह तथा एस्तेर

एज्रा तथा नहेमायाह परमेश्वर के चुने हुए लोगों का, बाबुल की बन्धुवाई के बाद वापस लौटने का वृत्तान्त देते हैं। एज्रा याजक था, नहेमायाह अयाजक जन था। इस्राएली लोगों का प्रथम निर्गमन मिस्र से मूसा की अगुवाई में हुआ था; दूसरा बाबुल से एज्रा की अगुवाई में हुआ था। कुछ यहूदी पहले ही लौट चुके थे और जब एज्रा यरूशलेम पहुँचा तो उसने वहाँ की हालत को अपनी अपेक्षा से भी अधिक बुरी पाया। यहूदियों ने उस देश के लोगों से अन्तर्विवाह किया था और वह सब कुछ किया था

जो उन्हें मूर्तिपूजकों ने सिखाया था (9:1-4)। एज्रा अत्यंत दु:खी हुआ (9:5-15); तब लोग उसके समीप एकत्रित हुए तथा अपने पापों की गम्भीरता को समझ सके (10:1-44)। एज्रा ने तुरन्त परमेश्वर के साथ पवित्र वाचा बांधने में उनकी अगुवाई की।

नहेमायाह, एज्रा के तेरह वर्षों बाद यरूशलेम पहुँचा। वह यरूशलेम की शहरपनाह का निर्माण करने हेतु फारस के राजा का अधिकार लेकर आया था। वह यथार्थ में एक इंजीनियर था, बहुत विरोध के बाद भी 52 दिनों में कार्य पूर्ण हो गया था।

दो पुस्तकों की रूपरेखा इस प्रकार है:

1. जरूब्बाबेल की अगुवाई में बाबुल से लौटना (एज्रा 1-6)।
2. एज्रा की अगुवाई में बाबुल से लौटना (एज्रा 7-10)।
3. शहरपनाह का पुनर्निमाण (नहेमायाह 1-7)।
4. आत्मिक-जागृति तथा धर्म-सुधार (नहेमायाह 8-13)।

एस्तेर - इस सुन्दर वृत्तान्त में परमेश्वर का नाम नहीं मिलता, परन्तु प्रत्येक पृष्ठ परमेश्वर से परिपूर्ण है जो स्वयं को प्रत्येक शब्द के पीछे छिपाए है। यह पुस्तक परमेश्वर की विशेष अनुकम्पा की शिक्षा देती है। परमेश्वर इस सृष्टि का चालक है। पुस्तक की सम्पूर्ण घटनाएँ तीन जेवनारों पर केन्द्रित हैं:

1. फारस के राजा क्षयर्ष की जेवनार - इसमें वश्ती को पटरानी पद से हटाया गया और मोर्दकै को अवसर मिला कि एस्तेर, जो उसके संरक्षण में पली एक अनाथ युवती थी, को राजा क्षयर्ष के महल में प्रस्तुत करे कि वह रानी बनाई जाए (अध्याय 1 तथा 2)।
2. एस्तेर की जेवनार - जब यहूदियों के शत्रु हामान का भेद खुल गया तथा उसे मृत्युदंड मिला और मौर्दकै की पदोन्नति हुई (अध्याय 7)।
3. पूरीम की जेवनार - जिसे यहूदियों के एक भयावह संकट से छुटकारे के उत्सव के रूप में मनाया गया (अध्याय 9)।

## पाठ 10 - अय्यूब

अय्यूब काव्य की पाँच पुस्तकों में प्रथम है। ये पाँच पुस्तकें हृदय के अनुभवों को बताती हैं। अय्यूब संभवत: बाइबल की सबसे पुरानी पुस्तक है। "धर्मी लोग दु:ख क्यों उठाते हैं?," यह पुस्तक इस प्रश्न का उत्तर है। वृत्तान्त का आरम्भ स्वर्ग के एक दृश्य से होता है, तत्पश्चात् वह अय्यूब के संपन्नता से निर्धनता में पतन को बताती है। इसके बाद अय्यूब और उसके मित्रों के बीच हुई बड़ी चर्चा का वर्णन है।

1. वृत्तान्त का आरम्भ स्वर्ग के एक दृश्य से होता है (1:1-12; 2:1-6),
2. तत्पश्चात्, अय्यूब संपन्नता से निर्धनता में आ जाता है (1:13-22; 2:7-10), तत्पश्चात्,
3. अय्यूब और उसके चार मित्रों, एलीपज, बिलदद, सोपर तथा एलीहू, में बड़ी चर्चा होती है (2:11-37:24),
4. अंतत:, जब परमेश्वर बोलता है, चर्चा चरम सीमा पर पहुँचती है (38-42)। यहोवा ने अय्यूब को समझाया कि जब लोग परमेश्वर को देखते हैं तब हमेशा ही कुछ-न-कुछ होता है। धर्मी लोग दु:ख उठाते हैं ताकि वे अपने आप को जाँच सकें; तब परमेश्वर उन्हें ऊँचा उठाता है। सारे दु:खों के पीछे उसका बुद्धिपूर्ण अभिप्राय होता है। वह चाहता है कि आग में ताया हुआ सोना बाहर निकाले।

## पाठ 11 - भजन संहिता

भजन संहिता प्रशंसा, प्रार्थना तथा आराधना की पुस्तक है। ये भजन परमेश्वर की प्रशंसा और स्तुति करते हैं। प्रत्येक मानवीय अनुभव परमेश्वर से जुड़ा है। विश्वासी का जीवन उसके आनन्द और दु:ख, विजय और असफलता के सारे अनुभवों में चित्रित किया गया है। ये भजन मसीह से परिपूर्ण हैं। वे उसके दु:खभोग और मृत्यु के सम्पूर्ण कार्यक्रम का वर्णन करते हैं। भजन संहिता की रूपरेखा पंचग्रथ के ढाँचे के अनुसार बनाई जा सकती है:

1. उत्पत्ति खण्ड, (भजन संहिता 1-41), मनुष्य को आशीष की अवस्था में देखता है, उसके बाद उसका पतन और पूर्वस्थिति में आना है।
2. निर्गमन खण्ड, (भजन संहिता 42-72), इस्राएल के विनाश और छुटकारे का चित्रण करता है।
3. लैव्यव्यवस्था खण्ड, (भजन संहिता 73-89), दर्शाता है कि अन्धकार और अरुणोदय दोनों में परमेश्वर हमारा शरणस्थान है।
4. गिनती खण्ड, (भजन संहिता 90-106), यह भाग पृथ्वी, उसके संकट तथा सुरक्षा पर ध्यान केन्द्रित करता है।
5. व्यवस्थाविवरण खण्ड, (भजन संहिता 107-150), ये भजन परमेश्वर के वचन की परिपूर्णता और प्रशंसा व्यक्त करते हैं।

## पाठ 12 - नीतिवचन, सभोपदेशक तथा श्रेष्ठगीत

सुलैमान अपनी बुद्धि तथा समृद्धि के लिए प्रसिद्ध एक महान राजा था। उसने 3000 नीतिवचन तथा 1005 गीत लिखे थे (1 राजा 4:31,32)। सुलैमान एक

दार्शनिक, वैज्ञानिक, संसार के आश्चर्यों में से एक ऐसे मन्दिर का निर्माता, तथा राजा था। नीतिवचन बुद्धि की बातों से परिपूर्ण है। इसे इस प्रकार विभाजित किया जा सकता है:

1. युवा वर्ग के लिए परामर्श (अध्याय 1-10)।
2. सब मनुष्यों के लिए परामर्श (अध्याय 11-20)।
3. राजाओं और शासकों के लिए परामर्श (अध्याय 21-31)।

सभोपदेशक में उस सब का विवरण है जिसे मानवीय सोच-विचार तथा प्राकृतिक धर्म जीवन के अर्थ एवं उद्देश्य के विषय में ढूँढ निकालने में सफल हुए हैं। इस पुस्तक में लिखे तर्क-वितर्क परमेश्वर के तर्क नहीं हैं, परन्तु यह मनुष्यों के तर्क-वितर्क का परमेश्वर द्वारा लिखा गया वृत्तान्त है। इसका लेखक सुलैमान है। यह पुस्तक उसके उस समय के अनुभवों तथा पुनर्मनन की नाटकीय आत्मकथा है जब वह परमेश्वर की संगति से अलग था। सुलैमान बुद्धिमान रहा होगा परन्तु उसने अपनी बुद्धि का अनुसरण नहीं किया।

इसमें दो संकेत-शब्द हैं : "व्यर्थ" तथा "सूरज के नीचे" (धरती पर)।

श्रेष्ठगीत को एक मसीही का प्रेम-गीत कहा गया है। इस पुस्तक में चार महत्वपूर्ण अर्थ पाए जाते हैं:

1. यह "वैवाहिक प्रेम की महिमा" प्रस्तुत करती है।
2. यह इस्राएल के प्रति यहोवा के प्रेम को प्रस्तुत करती है।
3. यह कलीसिया तथा मसीह का चित्रण है।
4. यह मसीह तथा एक विश्वासी के बीच की सहभागिता का चित्रण करती है।

जब यीशु से प्रश्न किया गया था कि सब से बड़ी आज्ञा कौनसी है तो उसने उत्तर दिया था: "तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण से और अपनी सारी बुद्धि से और अपनी सारी शक्ति से प्रेम रखना। और दूसरी यह है कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना; इससे बड़ी और कोई आज्ञा नहीं।"

## पाठ 13 - यशायाह

यह भविष्यवाणी-संबंधी 17 पुस्तकों में प्रथम पुस्तक है। भविष्यद्वक्ता वे लोग थे जिन्हें परमेश्वर ने इस्राएल के इतिहास के अन्धकारमय दिनों में उभारा था। उन्हें परमेश्वर की ओर से उसके लोगों के लिये विशिष्ट संदेश दिये गये थे। भविष्यद्वक्ताओं का समय ईसा पूर्व नौंवीं सदी से चौथी सदी तक 500 वर्ष का था। इन भविष्यद्वक्ताओं

ने निडर होकर राजाओं और लोगों को उनके पापों और उनकी असफलताओं के बारे में बताया। यशायाह की पुस्तक में दो स्पष्ट बातों पर बल दिया गया है। प्रथम भाग में भविष्यद्वक्ता ने इस्राएल को चित्रित किया है। पुस्तक के अन्त में उसने यीशु को हमारे पापों का बोझ उठाते हुए, तत्पश्चात् मसीह को उन्नत और महिमान्वित होते प्रकट किया है।

यशायाह की पुस्तक अपनी बनावट में एक छोटी बाइबल है। इसमें 66 अध्याय हैं जैसे कि बाइबल में 66 पुस्तकें हैं। इसमें दो बड़े भाग हैं, ठीक वैसे ही जैसे बाइबल में है। पहले भाग में 39 अध्याय हैं जैसे पुराना नियम में 39 पुस्तकें; और दूसरे भाग में 27 अध्याय हैं जैसे नया नियम में 27 पुस्तकें हैं। इस पुस्तक को "यशायाह रचित सुसमाचार" कहा गया है। मसीह का कुंवारी से जन्म, मसीह का चरित्र, मसीह का जीवन, मसीह की मृत्यु, मसीह का पुनरुत्थान और मसीह का दूसरा आगमन इन सब बातों की भविष्यवाणी इस में सुनिश्चतता एवं स्पष्टता से की गई हैं।

## पाठ 14 - यिर्मयाह तथा विलापगीत

यिर्मयाह को "विलाप करने वाला भविष्यद्वक्ता" कहा गया है। जिस संदेश को देने के लिये वह बुलाया गया था उस संदेश ने उसका अपना हृदय तोड़ दिया था। वह ऐसा सर्वाधिक अप्रिय संदेश था जैसा कभी किसी लोगों को नहीं दिया गया था। उसे देशद्रोही कहा गया क्योंकि उसने कहा था कि उन्हें बाबुल के अधीन होना होगा। (38:17-23)। इस्राएल के लिए मात्र एक ही काम करना रह गया था–समर्पण करना। बाबुल के साथ "अन्यजातियों का काल" आरम्भ हो गया था जिसे दानिय्येल के दर्शन में सोने के सिर के रूप में दर्शाया गया था।

यिर्मयाह ने बाबुल की बन्धुवाई में 70 वर्षों तक रहने संबंधी भविष्यवाणी की थी (25:9-12)। तथापि उसने अन्धकार से आगे प्रकाश को देखा; और अन्य कोई भविष्यद्वक्ता भविष्य के विषय में इतनी उज्ज्वलता के साथ नहीं बोला था जैसे वह बोला (23:3-8,30,31; 33:15-22)। यिर्मयाह ने लोगों को सिखाने के लिए यहोवा द्वारा उसे दिए गए अनेक वस्तुपाठों का प्रयोग किया था। उसका संदेश मात्र अप्रिय ही नहीं था परन्तु उसे ठुकराया भी गया, और उसके शत्रुओं ने उसकी मृत्यु की माँग भी की थी।

ऐसा माना जाता है कि विलापगीत को यिर्मयाह ने ही लिखा जो कविता की उत्कृष्ट पुस्तक है, जिसमें पाँच भिन्न कविताएँ हैं। इसमें मात्र विलाप ही नहीं है। अपने लोगों के पापों के कारण कवि के विलाप के बादलों के ऊपर परमेश्वर का सूरज अभी भी चमक रहा है: अध्याय 3 वचन 22 से 27 पढ़िए।

## पाठ 15 - यहेजकेल

यहेजकेल बाबुल में बन्धुवाई के समय भविष्यद्वक्ता था। उसने शीघ्र पलस्तीन लौटने की इस्राएल की झूठी आशाओं को दूर करने का तथा उन्हें उनके प्रिय यरूशलेम के भयंकर विनाश के समाचार हेतु तैयार करने का प्रयास किया था।

उसका संदेश, सारे भविष्यद्वक्ताओं में सबसे अधिक आत्मिक था क्योंकि वह अधिकतर परमेश्वर के व्यक्तित्व के विषय में बताता है। उसने इस्राएल राष्ट्र के सबसे अधिक अन्धकारमय दिनों में सन्देश दिया। लोग उसे या उसके संदेश को नहीं सुने होते इसलिए उसने एक नया तरीका प्रयोग में लाया था। दृष्टान्तों में बोलने के बदले उसने उन्हें अभिनीत किया (24:24)। यहेजकेल ने विशेषकर यहोवा की महिमा के विषय में भविष्यवाणी की है। इस पुस्तक का सरसरी अवलोकन प्रस्तुत है–यह यरूशलेम के विनाश पर केंद्रित है:

1. घेराबन्दी से पूर्व (1-24 अध्याय)। यहेजकेल ने यरूशलेम के विनाश के छः वर्ष पूर्व ही अपनी भविष्यवाणियाँ आरम्भ कर दी थीं तथा जब तक विनाश नहीं हुआ तब तक उसकी निश्चितता की भविष्यवाणी करता रहा।
2. घेराबन्दी (25-32 अध्याय)। तत्पश्चात् इन अध्यायों में उसकी भविष्यवाणियाँ यहूदा के शत्रुओं तथा उन मूर्तिपूजक राष्ट्रों के विनाश के विषय में हैं।
3. घेराबन्दी के बाद (33-48 अध्याय)। अन्त में यहूदा का वापस लौटना तथा उसकी पुर्नस्थापना चित्रित है।

## पाठ 16 - दानिय्येल

दानिय्येल को स्वप्नों का भविष्यद्वक्ता कहा गया है क्योंकि परमेश्वर ने अपने भेदों को उस पर प्रकट किया था। उसने भविष्य में दूर तक देखा था तथा प्रकाशितवाक्य में उसके सर्वाधिक उद्धरण दिए गए हैं। उसके जीवन तथा सेवकाई में संपूर्ण 70 वर्ष का समय सम्मिलित है। उसे 16 वर्ष की आयु में बन्धुवाई में ले जाया गया तथा वह 90 वर्ष से अधिक का होने तक जीवित रहा। यद्यपि वह एक बन्धक था, वह बाबुल का प्रधानमंत्री बना। अद्‌भुत बात यह है कि वह यहोवा परमेश्वर के प्रति सर्वदा विश्वासयोग्य बना रहा।

इस पुस्तक की रूपरेखा इस प्रकार है:

1. दानिय्येल का व्यक्तिगत जीवन (1:1-2:3)।
2. दानिय्येल का सार्वजनिक जीवन–अन्यजातियों के समय का एक चित्रण (2:4-7:28)।
3. दानिय्येल के भविष्यवाणी-संबंधी दर्शन–राष्ट्रों का भविष्यवाणी-संबंधी इतिहास (अध्याय 8-12)।

## पाठ 17 - होशे, योएल तथा आमोस

होशे उन 12 पुस्तकों में से प्रथम पुस्तक है जो उनमें लिखित विषय-वस्तु की मात्रा के कारण छोटे भविष्यद्वक्ता कहलाते हैं। होशे, जिसके नाम का अर्थ "उद्धार" है वह उत्तरी साम्राज्य का यिर्मयाह कहलाया। वह एक अयाजकीय जन था जिसे परमेश्वर ने भटके हुए इस्राएल को सुस्पष्ट संदेश देने के लिए बुलाया था कि परमेश्वर उनसे प्रेम किया।

होशे को आज्ञा दी गई थी कि वह एक वेश्या से विवाह करे। उससे उसे दो पुत्र तथा एक पुत्री उत्पन्न हुई। जब उसने फिर वेश्यावृत्ति की तब होशे ने उसे अपने घर से बाहर निकाल दिया। परन्तु परमेश्वर ने होशे को उसे घर में वापस लाने तथा उससे पुनः प्रेम करने की आज्ञा दी।

संदेश यह था कि इस्राएल राष्ट्र परमेश्वर के प्रति अविश्वासयोग्य था तब भी परमेश्वर ने उससे प्रेम किया तथा उसे स्वदेश वापस लाएगा। होशे की रूपरेखा :

1. होशे भविष्यद्वक्ता तथा उसकी विश्वासहीन पत्नी गोमेर (अध्याय 1-3)।
2. परमेश्वर तथा विश्वासहीन राष्ट्र इस्राएल (अध्याय 4-14)।

योएल यहूदा के लिए भविष्यद्वक्ता था, जिसने टिड्डियों की महामारी के समय में लिखा। उसने इसकी तुलना भविष्य में होने वाले न्याय से की। उसने न्याय की ओर संकेत करते हुए "यहोवा के दिन" के विषय में पाँच बार बताया।

योएल की पुस्तक की महान केन्द्रीय प्रतिज्ञा आत्मिक छुटकारा है। योएल को यह बताने का सौभाग्य मिला था कि परमेश्वर अपना आत्मा सारे प्राणियों पर उँडेलेगा (2:28)। यह पिन्तेकुस्त के दिन पूरा हुआ (प्रेरितों 2:16)।

आमोस एक चरवाहा था, तथा उसका संदेश मुख्यतः उत्तरी साम्राज्य को संबोधित किया गया था। उसके सर्वसाधारण संदेश ने, जैसे कि आमोस 5:21-27 में लिखा है, इस्राएल के धार्मिक पाखंड और उनके द्वारा दरिद्रों पर किये जाने वाले अन्याय और उपेक्षा को उजागर किया। परमेश्वर, आमोस के द्वारा इस्राएल को बुलाता है कि वे उस सच्ची आराधना की ओर लौट आये जिससे, "न्याय नदी के समान" और "धर्म को महानद के समान" बहने दिया जायेगा।"

## पाठ 18 - ओबद्याह, योना तथा मीका

ओबद्याह पुराना नियम की सबसे छोटी पुस्तक है। इसमें केवल 21 पद हैं, परन्तु यह आज भी हमारे लिए महत्वपूर्ण है। यह एदोम के विरुद्ध न्याय की भविष्यवाणी है। इसमें दो महत्वपूर्ण विषय हैं–घमंडी एवं विद्रोहियों का सर्वनाश तथा दीन एवं नम्र

लोगों का छुटकारा। एदोमी लोग एसाव के वंश के थे जिसने अपने पहलौठे के जन्म-सिद्ध अधिकार को तुच्छ जाना था। एदोम निरंतर इस्राएल का शत्रु बना रहा। एदोम नष्ट कर दिया गया, जैसे ओबद्याह ने चेतावनी दी थी।

ओबद्याह ने दूसरे भविष्यद्वक्ताओं के समान ही यहोवा के दिन के आने तथा मसीह के राज्य की स्थापना के विषय में भविष्यवाणी की थी।

योना की पुस्तक में कोई भविष्यवाणी नहीं है, यद्यपि योना एक भविष्यद्वक्ता था। यह योना के व्यक्तिगत जीवन की प्रमुख घटना का विवरण है, जो विश्व के इतिहास की सबसे महान घटना 'यीशु मसीह का पुनरुत्थान' का चिन्ह थी। इस पुस्तक में, परमेश्वर ने चार वस्तुएँ तैयार की थीं–एक बड़ा-सा मच्छ (1:17), एक रेंड़ का पेड़ (4:6), एक कीड़ा (4:7) तथा पुरवाई (4:8)। परमेश्वर अपने भविष्यद्वक्ता की देखभाल कर रहा था!

इस पुस्तक में दो अत्यंत महत्वपूर्ण घटनाएँ हैं : बड़े मच्छ द्वारा योना को निगल लेना, तथा विशाल मूर्तिपूजक नगर नीनवे का एक अज्ञात विदेशी मिशनरी द्वारा मात्र कुछ ही दिनों में मन परिवर्तन होना।

हमें इस पुस्तक में दो विशेष बातों पर ध्यान देना चाहिए। पहली बात यह कि योना मसीह की मृत्यु, गाड़ा जाना तथा पुनरुत्थान का प्रतीक है। दूसरी, योना परमेश्वर के प्रति अनाज्ञाकारी इस्राएल का भी प्रतीक है जिसे संसार के राष्ट्रों द्वारा निगल लिया गया है जो मसीह के आने पर उसे उगल देंगे। तब इस्राएल सर्वत्र परमेश्वर का गवाह ठहरेगा।

मीका ने यरूशलेम तथा इस्राएल के शहरों पर न्याय की घोषणा की। परन्तु उसने आशा के वचनों को बताने की जल्दी की। उसने सर्वनाश एवं दंड से आगे महिमा के उस दिन की ओर देखा जब मसीह राज्य करेगा। मसीह आएगा (4:8)। वह बेतलेहेम में जन्म लेगा (5:2,4)।

मीका के तीन संदेशों से स्वाभाविक चेतावनी मिलती है; प्रत्येक "सुनो!" इस आह्वान से आरम्भ होती है।

1. पहली सब लोगों को संबोधित की गई थी (1:2)।
2. दूसरी इस्राएल के अगुवों को संबोधित की गई थी (3:1)।
3. तीसरी इस्राएल के लिए बिनती की व्यक्तिगत पुकार थी कि पश्चात्ताप करो और परमेश्वर की ओर वापस लौट आओ (6:1)।

## पाठ 19 - नहूम, हबक्कूक तथा सपन्याह

नहूम का विषय नीनवे का विनाश है, उसी नगरी का जिसे योना ने चेतावनी दी थी। योना के दिनों में हुई आत्मिक-जागृति के 150 वर्षों बाद नहूम की पुस्तक लिखी गई। वह पश्चात्ताप अधिक दिनों तक नहीं रहा और नीनवे नगरी अपने पाप के कारण नाश कर दी गई (3:1-7)।

नीनवे उन सारे राष्ट्रों का प्रतीक है जो परमेश्वर से मुँह मोड़ लेते हैं। वह व्यक्ति या राष्ट्र जो जान-बूझकर परमेश्वर का तिरस्कार करता हैं वह जान-बूझकर और अनिवार्यत: विनाश को चुनता है।

हबक्कूक ने प्रश्न किए और उसे उनके उत्तर मिले। "दुष्ट क्यों समृद्ध होता है?" इस प्रश्न पर तर्क दिए गए हैं। हबक्कूक अपनी समस्त कठिनाइयों के समय प्रार्थना में परमेश्वर के पास गया तथा धीरज से उसके उत्तर की प्रतीक्षा करता रहा (2:1)। एक हार्दिक प्रार्थना के बाद (3:1-16) परमेश्वर की महिमा प्रकट हुई।

"धर्मी अपने विश्वास के द्वारा जीवित रहेगा" इन शब्दों का मसीही प्रोटेस्टंट धर्मान्दोलन में बड़ा महत्व था (2:4)। इन शब्दों का उद्धरण नया नियम में भी दिया गया है (रोम 1:17, गल 3:11, और इब्रा 10:38)।

सपन्याह की पुस्तक परमेश्वर के क्रोध तथा न्याय से भरी है (1:15; 3:8), परन्तु वहाँ परमेश्वर के प्रेम का मन्द स्वर है (3:17)। सपन्याह ने मूर्तिपूजा के विभिन्न प्रकारों की निन्दा की। संभवत: योशिय्याह के शासन-काल में हुई बेदारी के लिए सपन्याह मुख्यत: उत्तरदायी रहा होगा।

इस पुस्तक का आरम्भ दु:ख से परन्तु अन्त गीत से होता है।

## पाठ 20 - हाग्गै, जकर्याह, मलाकी

पुराना नियम के अधिकांश भविष्यद्वक्ताओं ने इस्राएल के बन्धुवाई में जाने के पूर्व भविष्यवाणी की थी। मात्र दो ने, अर्थात् यहेजकेल तथा दानिय्येल ने, बन्धुवाई के समय भविष्यवाणी की। हाग्गै, जकर्याह और मलाकी ने इस्राएल के बन्धुवाई से लौटने के पश्चात् भविष्यवाणी की।

मन्दिर का पुनर्निर्माण करना और उसे पुन: संवारना ये हाग्गै की सर्वोच्च लगन थीं। उसने लोगों को मन्दिर के निर्माण में सुस्ती करने के लिए डाँटा और उनके इस साहसिक कार्य में उन्हें प्रोत्साहित किया तथा सहायता दी। यह पुस्तक चार माह के काल में लिखे गए चार संक्षिप्त संदेशों की श्रृंखला है।

जिम्मेवारी के प्रति उसके सख्त आह्वान को स्वीकार किया गया था। लोग

उत्साहित हुए तथा उन्होंने मन्दिर का निर्माण आरम्भ कर दिया (1:12-15)।

युवा भविष्यद्वक्ता जकर्याह, वृद्ध भविष्यद्वक्ता हाग्गै के साथ कंधे-से-कंधा मिलाकर खड़ा रहा, इस्राएल की प्रजा को उनके मन्दिर निर्माण के समय हिम्मत देता रहा, और उन्हें चेतावनी दी कि वे परमेश्वर को निराश न करें जैसा उनके पूर्वजों ने किया था। उसने इस्राएल के लिए दूर भविष्यकाल में आने वाली अनन्त आशीषों का चित्रण उज्ज्वल रंगों में किया।

यशायाह के अतिरिक्त मात्र जकर्याह ही एक ऐसा भविष्यद्वक्ता है जिसने उद्धारकर्त्ता के विषय में सबसे अधिक भविष्यवाणी की। उसने भविष्य में दूर तक दृष्टि डालते हुए पहले उसे (उद्धारकर्त्ता को) अपमानित होते, दु:ख सहते और पुन: वैभव तथा महान महिमा में देखा।

मलाकी पुराना नियम तथा नया नियम के मध्य का पुल है। मलाकी तथा यूहन्ना बपतिस्मादाता की "प्रभु का मार्ग तैयार करो" आवाज के मध्य 400 वर्ष का मौन है।

पुराना नियम का अन्त "सर्वनाश" शब्द से होता है जब कि नया नियम का अन्त आशीष के साथ होता है। आत्मिक-जागृति के काल के पश्चात् (नहेमायाह 10:28-39) लोग आत्मिक रूप से ठंडे तथा नैतिक रूप से सुस्त हो गए थे। मलाकी एक धर्म-सुधारक के रूप में आया, तथा उसने डाँटने के साथ-साथ ही उन्हें प्रोत्साहित भी किया।

मलाकी 3:16-4:3 में, मसीह के दूसरे आगमन, जिसकी हम बाट जोहते हैं, से संबंधित मलाकी की गम्भीर घोषणा पढ़िए (3:16-4:3)।

# भाग दो - नया नियम की पुस्तकें

## पाठ 21 - सुसमाचारों का परिचय

"सुसमाचार" शब्द का अर्थ "आनन्द का संदेश" है। चारों लेखक सुसमाचार-प्रचारक अर्थात् आनन्द का संदेश लाने वाले कहलाते हैं। मत्ती, मरकुस और लूका सहदर्शी सुसमाचार कहलाते हैं क्योंकि वे, यूहन्ना से अलग, मसीह के जीवन का सारांश एक सह-दर्शन, एक मिले-जुले दृष्टिकोण के रूप में प्रस्तुत करते हैं।

सहदर्शी सुसमाचार मुख्य रूप से मसीह की गलील में की गई सेवकाई का वर्णन करते हैं, जबकि यूहन्ना यहूदिया में की गई सेवकाई के विषय में बताता है। सहदर्शी सुसमाचार मसीह के आश्चर्यकर्मों, दृष्टांतों तथा भीड़ को संबोधित किए गए प्रवचनों का वर्णन करते हैं; यूहन्ना उसके गम्भीर प्रवचनों, उसके वार्तालापों तथा प्रार्थनाओं को

प्रस्तुत करता है। तीन सहदर्शी सुसमाचार मसीह को कार्य करते हुए दर्शाते हैं, जब कि यूहन्ना उसे मनन तथा सहभागिता में दिखाता है।

वह सब जो भविष्यद्वक्ताओं ने कहा था, हमारे प्रभु के पृथ्वी पर के जीवन तथा कार्य की ओर ले चलता है और वह सब जो बाद में पत्रियों में आता है वह उनसे आगे बढ़ता है। सुसमाचार मूल कारण हैं।

सुसमाचार हमें बताते हैं कि मसीह **कब** और **कैसे** आया।

पत्रियाँ हमें बताती हैं कि मसीह **क्यों** और **किसलिए** आया।

## पाठ 22 - मत्ती

मत्ती यीशु को राजा के रूप में प्रस्तुत करता है। प्राथमिक रूप से यहूदी लोगों के लिए लिखा गया यह सुसमाचार यीशु को दाऊद के पुत्र के रूप में प्रस्तुत करता है। उसकी राजसी वंशावली अध्याय एक में दी गई है जो इब्राहीम तक जाती है। इसमें पुराना नियम के 29 उद्धरण दिए गए हैं, जो अन्य सुसमाचारों से अधिक हैं, यह स्पष्ट करते हुए कि यीशु उन भविष्यवाणियों की पूर्णता था जो मसीह के विषय में की गई थीं।

जब यीशु ने मत्ती को चुना तब वह रोमी शासन के अधीन कफरनहूम में महसूल लेने वाला था (9:9; 10:3)। दूसरे सुसमाचार लेखक उस महाभोज के विषय में बताते हैं जो मत्ती ने यीशु को दिया तथा इस महत्वपूर्ण सच्चाई को लिखते हैं कि यीशु के पीछे चलने के लिए उसने सब कुछ छोड़ दिया था। इसमें कोई संदेह नहीं कि वह धनवान था।

मत्ती, परमेश्वर के अभिषिक्त जन मसीह का सुसमाचार है। इस पुस्तक का प्रमुख उद्देश्य यह दिखाना है कि यीशु नासरी ही वह प्रतिज्ञात मसीह है जिसके विषय में मूसा तथा भविष्यद्वक्ताओं ने लिखा था। मात्र मत्ती ही पूर्व से आए ज्योतिषियों की भेंट के विषय में बताता है। पहाड़ी उपदेश परमेश्वर के राज्य के संविधान को प्रस्तुत करता है। मत्ती में "राज्य" शब्द 55 बार आया है क्योंकि यह राजा का सुसमाचार है। मत्ती 24-25 में दिए गए यीशु के प्रवचन का अधिकांश भाग उसके दूसरे आगमन के विषय में है।

मत्ती में यीशु के स्वर्गारोहण का वर्णन नहीं है। मत्ती में मसीह जब पृथ्वी पर ही था तभी परदा गिरता है, क्योंकि पृथ्वी पर ही दाऊद के पुत्र को आखिरकार महिमा में राज्य करना है।

## पाठ 23 - मरकुस

मरकुस यीशु को एक सेवक के रूप में चित्रित करता है। यह सुसमाचार रोमी

लोगों के लिए लिखा गया था, इसमें वंशावली नहीं है। क्यों? क्योंकि लोग सेवक की वंशावली में रुचि नहीं रखते।

इसका लेखक यूहन्ना मरकुस था जो मरियम का पुत्र तथा बरनबास का चचेरा भाई था। वह पौलुस और बरनबास के साथ अन्ताकिया गया और दोनों के बीच किसी झगड़े का कारण बना (प्रेरि 12:25; 13:5)। बाद में, संभवत: कठिनाइयों के कारण, उसने उन्हें छोड़ दिया (प्रेरि 13:13)। अन्त में वह पौलुस के लिए महान सहायक बना (कुलु 4:10,11; 2 तीमु 4:11)। पतरस उसके मन परिवर्तन का साधन बना और उसे "मेरा पुत्र" कहता है (1 पत 5:13)। हम इस सुसमाचार में पतरस का प्रभाव देखते हैं।

यह सबसे छोटा सुसमाचार है; कार्यों तथा उपलब्धियों से भरा है। मरकुस ने यह सुसमाचार रोम में, स्पष्ट रूप से रोमियों के लिए लिखा था। वे व्यस्त रहने वाले लोग थे और सामर्थ एवं कार्य में विश्वास रखते थे। वे शब्दों से अधिक कार्यों को पसन्द करते थे। इसमें पुराना नियम से कम उद्धरण लिए गए हैं। मात्र चार दृष्टांत दिए गए हैं। लम्बा परिचय नहीं है। "तुरन्त" और उसके समानार्थी शब्द (जो गति बताते है उदा. - जल्द, शीघ्र, देखते ही, पहुँचते ही) 40 बार आए हैं।

मरकुस में आश्चर्यकर्मों को प्रमुख स्थान दिया गया है; 20 आश्चर्यकर्मों का वर्णन लिखा गया है।

## पाठ 24 - लूका

लूका यीशु को सिद्ध मनुष्य के रूप में प्रस्तुत करता है। यह सुसमाचार यूनानियों को लिखा गया था इसलिए यीशु की वंशावली इब्राहीम के बजाय प्रथम मानव आदम तक जाती है। एक सिद्ध मनुष्य के रूप में यीशु को अत्यन्त प्रार्थना करते तथा स्वर्गदूतों को उसकी सेवा करते देखा गया है।

लूका एक वैद्य था। वह पौलुस का साथी था। नया नियम की पुस्तकों के लेखकों में वही एकमात्र यूनानी था। वह शिक्षित पुरुष तथा तेज निरीक्षक था। वह प्रेरितों के काम का भी लेखक था। वह यीशु को मनुष्यत्व के आदर्श रूप में प्रस्तुत करता है।

यह सुसमाचार पापियों के लिए हैं। यह यीशु के मानव बनकर मानव को बचाने में, उसके दयापूर्ण प्रेम को दिखाता है।

डॉक्टर लूका ने हमें यीशु के आश्चर्यजनक जन्म के विषय में सम्पूर्ण विवरण दिया है। मात्र वही चरवाहों के भेंट करने की बात बताता है। मात्र लूका ही है जो यीशु के 12 वर्ष की उम्र में मन्दिर में जाने की बात बताता है। एक मनुष्य के रूप में यीशु ने अपने हाथों से कठोर परिश्रम किया तथा दु:ख उठाया। इस सुसमाचार में छ: में से पाँच आश्चर्यकर्म चंगाई के आश्चर्यकर्म हैं। मात्र लूका ही मलखुस के कान की

चंगाई के विषय में बताता है (22:51)।

लूका की पुस्तक पृथ्वी पर त्यागे हुए लोगों के लिए सुसमाचार है। उसने स्त्रियों के विषय में सबसे अधिक कहा है। यह सुंदर गीतों की काव्यमय पुस्तक है। किसी अन्य लेखक की तुलना में, लूका प्रभु की प्रार्थनाओं के विषय में अधिक बताता है।

## पाठ 25 - यूहन्ना

यूहन्ना यीशु को परमेश्वर के पुत्र के रूप में चित्रित करता है। इस सुसमाचार की हर एक बात यीशु के ईश्वरीय सम्बन्ध का चित्रण एवं प्रदर्शन करती है।

इस सुसमाचार का लेखक यूहन्ना "गर्जन का पुत्र", वह चेला था "जिस से यीशु प्रेम रखता था"। उसका पिता जब्दी एक धनी मछुआ था। उसकी माता सलोमी प्रभु की समर्पित विश्वासिनी थी। उसका भाई याकूब था।

यूहन्ना ने अन्य सुसमाचार प्रचारकों के लगभग एक पीढ़ी के बाद लिखा। जब यीशु ने उसे बुलाया तब वह लगभग 25 वर्ष का रहा होगा। वह यूहन्ना बपतिस्मादाता का अनुयायी था। उसके जीवन के आख़िरी दिनों में, लगभग 80 ईसवी से 100 ईसवी के बीच, वह पतमुस नाम टापू में निर्वासित किया गया था, जब मात्र उसके लेखन-कार्य को छोड़कर सम्पूर्ण नया नियम पूरा हो चुका था।

दूसरे सुसमाचारों की तुलना में यूहन्ना भाव में अधिक ऊँचा और दृष्टिकोण में अधिक उन्नत है। यूहन्ना में यीशु 35 बार परमेश्वर को "मेरा पिता" कहता है और अधिकार के साथ बोलते हुए 25 बार "सच-सच" कहता है।

यूहन्ना कहता है कि उसने अपना सुसमाचार इसलिए लिखा कि लोग विश्वास करें कि यीशु ही मसीह है। इसके लिए यूहन्ना सात गवाहों को प्रस्तुत करता है (1:34; 1:49; 6:69; 10:36; 11:27; 20:28 तथा 20:31)। वह सात आश्चर्यकर्मों का वर्णन करता है (2:1-11; 4:46-54; 5:1-47; 6:1-14; 6:15-21; 9:1-41 तथा 11:1-57)। तथा इस पुस्तक के सात "मैं हूँ" में यीशु मसीह के ईश्वरीय स्वभाव को प्रकट करता है (6:15; 8:12; 10:9,11; 11:25; 14:6; 15:1)।

## पाठ 26 - प्रेरितों के काम

लूका ने अपने सुसमाचार में उन बातों के विषय में लिखा जिन्हें यीशु ने पृथ्वी पर "आरम्भ में किया और करता" रहा। प्रेरितों के काम में वह दिखाता है कि यीशु ने कलीसिया के माध्यम से पवित्र आत्मा के द्वारा किन कार्यों को करना जारी रखा।

हमारे प्रभु का स्वर्गारोहण लूका में अन्तिम दृश्य है। प्रेरितों के काम में यह पहली सच्चाई है।

प्रेरितों के काम, पवित्र आत्मा के उन कामों का विवरण है जो उसने प्रेरितों के

द्वारा किए। पवित्र आत्मा का नाम लगभग 70 बार आया है। "गवाह" शब्द का प्रयोग 30 से अधिक बार हुआ है।

इस पुस्तक का आरम्भ यरूशलेम में सुसमाचार-प्रचार के साथ होता है, यरूशलेम यहूदी राष्ट्र की महानगरी थी। इसका अन्त रोम में सुसमाचार प्रचार के साथ होता हैं, रोम विश्व शक्ति की महानगरी थी। एक पीढ़ी में ही प्रेरित हर एक दिशा में जा चुके थे तथा उस समय के ज्ञात जगत के हर एक राष्ट्र में प्रचार कर चुके थे (कुलु 1:23)।

प्रेरितों के काम के 1-12 अध्यायों में हम पतरस को यहूदियों के सामने गवाही देते हुए पाते हैं। उसका संदेश है, "मन फिराओ।" इसके 13-28 अध्यायों में पौलुस को अन्यजातियों के मध्य गवाही देते हुए पाते हैं। वह कहता है, "विश्वास कर।"

प्रेरितों के काम मिशन के लिए एक उत्तम निर्देशिका है। यह दर्शाती है कि मिशन का उद्देश्य मनुष्यों को यीशु मसीह के द्वारा मिलने वाले उद्धार के अनुभव में लाना है। प्रथम कलीसिया ने अपनी योजनाओं को कार्यान्वित करने के लिए एक निश्चित कार्यक्रम का अनुसरण किया—उन्होंने जनसंख्या के दूर तक फैले हुए केन्द्र को अपना कार्यस्थल चुना। उनका भरोसा पवित्र आत्मा पर था और उत्साह बड़ा था। पौलुस की तीन मिशनरी यात्राएँ प्रभावकारी मिशनरी कार्य की उत्तम उदाहरण थीं।

## पाठ 27 - रोमियों की पत्री

यह पत्रियों में प्रथम है। 13 पत्रियाँ पौलुस के द्वारा लिखी गईं, इसलिए उन्हें पौलुस की पत्रियाँ कहते हैं (इनमें इब्रानियों की पत्री भी सम्मिलित है, यद्यपि हम निश्चित नहीं हैं कि पौलुस ही इसका लेखक था)। पौलुस का जन्म शुद्ध यहूदी वंश में हुआ था। रोमी नागरिकता, यूनानी शिक्षा तथा इब्रानी धर्म के मिश्रण ने उसे अद्‌भुत रूप से इस योग्य बनाया था कि वह एशिया माइनर के नगरों में बहु-जातीय कलीसियायी समुदायों के नेटवर्क की स्थापना कर पाया।

रोम से यरूशलेम में फसह का पर्व मनाने आए यात्री, जिन्होंने पिन्तेकुस्त के दिन मन फिराया वे वापस राजधानी (रोम) लौटे। वे अपने साथ सुसमाचार का बीज ले गए तथा वहाँ कलीसिया की स्थापना की। 28 वर्षों के बाद पौलुस वहाँ जाने के लिए उत्सुक था। उसने कुरिन्थुस से इस पत्र को भेजा जहाँ उसने अपनी तीसरी मिशनरी यात्रा के समय तीन महीने बिताए थे।

रोमियों की पत्री बताती है कि परमेश्वर किस तरीके से एक दोषी व्यक्ति को धर्मी बनाता है। हमारे उद्धार पर यह सबसे महान दस्तावेज है।

रूपरेखा : 1 से 8 अध्याय सिद्धान्त-संबंधी हैं। प्रथम तीन अध्याय मनुष्य की भयानक पापपूर्ण स्थिति को दर्शाते हैं (1:18 तथा 3:20 विशेष रूप से देखिए)।

तत्पश्चात्, धर्मी ठहराए जाने के द्वारा दी जाने वाली परमेश्वर की धार्मिकता का वर्णन है (3:21-5:11)। इसके आगे संतों के पवित्रीकरण का संदेश है (5:12; 8:39)।

9 से 11 अध्याय छुटकारे से संबंधित हैं, इतिहास के प्रत्येक भाग में इस्राएल से जुड़े परमेश्वर के अभिप्राय को दिखाते हैं।

अन्तिम चार अध्याय, 12 से 16, व्यावहारिक हैं; मसीही व्यक्ति के कर्त्तव्य को दर्शाते हैं।

## पाठ 28 - पहला तथा दूसरा कुरिन्थियों

शारीरिक कुरिन्थुस पौलुस के दिनों में रोमी साम्राज्य का पाप का केन्द्र था। वह सम्पूर्ण यूनान का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण शहर था। वहाँ सम्पत्ति बहुतायत से थी। घृणित अनैतिकता अनियंत्रित थी।

इस भ्रष्ट पृष्ठ-भूमि के बीच पौलुस ने कुरिन्थुस में सुसमाचार का प्रचार किया, कलीसिया की स्थापना की, तथा इन दो पत्रियों को लिखा।

कुरिन्थुस की कलीसिया ने एक प्रतिनिधि मंडल को एक पत्र के साथ भेजा था (7:1; 16:17) तथा पहला कुरिन्थियों उस कलीसिया में पाई जाने वाली परिस्थितियों से संबंधित पौलुस का उत्तर है। कलीसिया में सांसारिकता प्रवेश कर चुकी थी और उसमें फूट थी। मसीही लोग मसीहियों के विरुद्ध अदालत जा रहे थे, और प्रभु भोज की मेज पर उनका व्यवहार लज्जाजनक था। महिलाओ में शालीनता नहीं थी और कलीसिया के सदस्य विवाह तथा आत्मिक वरदानों पर वाद-विवाद करते थे।

अध्याय 15 में पौलुस मसीह के पुनरुत्थान के अनेक प्रमाण देता है।

पौलुस ने दूसरा कुरिन्थियों की पत्री उसकी प्रथम पत्री कैसे ग्रहण की गई इसकी उत्साह देने वाली सूचना मिलने पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त करने के लिए तथा अपने प्रेरित पद का बचाव करने के लिए लिखी। अपना व्यक्तिगत इतिहास वह इस पत्री में अन्य पत्रियों की अपेक्षा अधिक देता है।

यह पत्री "शान्ति" के साथ आरम्भ होती है तथा "शान्ति" के साथ समाप्त होती है (1:3; 13:11)।

## पाठ 29 - गलातियों

पौलुस ने अपनी दूसरी मिशनरी यात्रा के समय गलतिया, एक ग्रामीण क्षेत्र, में कलीसियाओं की स्थापना की थी। पौलुस के बाद व्यवस्था के शिक्षक यह सिखाते हुए आए कि कर्मों के द्वारा उद्धार है। झूठे शिक्षकों ने, यह सिखाते हुए कि सब प्रकार के रीति-रिवाजों का पालन करना अवश्य है, लोगों को मोह लिया था। पौलुस चाहता था कि वे जान लें कि कुछ भी, कोई भी कर्म, उन्हें मसीह के पास नहीं ला सकता।

उद्धार मसीह में विश्वास करने से होता है–और किसी बात से नहीं। पौलुस ने जब सुना कि गलतिया के लोग इन झूठें शिक्षकों के विचारों को ग्रहण करने ही वाले हैं तो मामले की ओर ध्यान देना इतना अनिवार्य दिखाई दिया कि उसने यह पत्र अपने हाथ से लिखा (6:11)।

यह पत्री मसीही की 'स्वतंत्रता की घोषणा' है। यह व्यवस्था और अनुग्रह में भेद दिखलाती है।

यह कठोर, खरा और गम्भीर सन्देश है। इसमें प्रशंसा या स्तुति या धन्यवाद नहीं है। किसी का भी नाम से उल्लेख नहीं है। इसमें भावना तथा गहन संवेदना है। यह संघर्ष करने वाली पत्री है। यह मार्टिन लूथर की प्रिय पत्री थी। यह पत्री विश्वास द्वारा धार्मिकता के सिद्धान्त की सम्पूर्ण पवित्र शास्त्र में सर्वाधिक सशक्त घोषणा तथा बचाव-पत्र है।

## पाठ 30 - इफिसियों

यह कैद में से लिखी गई चार पत्रियों में से एक है (अन्य तीन हैं: फिलिप्पियों, कुलुस्सियों और फिलेमोन)। यह कलीसिया के महान भेद को प्रकट करती है। यह कभी-कभी "पौलुस का परमपवित्रस्थान" या "पौलुस की तीसरे स्वर्ग की पत्री" कहलाती है।

पवित्र आत्मा ने पौलुस को दूसरी मिशनरी यात्रा के समय एशिया में–जहाँ इफिसुस प्रमुख केन्द्र था–प्रवेश करने से मना कर दिया था। वह यूरोप में कुरिन्थुस तक चला गया, तत्पश्चात् वह इफिसुस होता हुआ लौटा। वह अपनी तीसरी यात्रा में वहाँ लौटा और उसने वहाँ दो वर्ष तक सेवकाई की (प्रेरि 18:19 तथा 19:8-10)। पौलुस से इफिसुस के लोगों ने, किसी और लोगों की तुलना में, सबसे अधिक बाइबल की शिक्षा पाई। उसे वहाँ विरोध का सामना करना पड़ा, परन्तु परमेश्वर ने उसे सँभाला। वह इफिसुस की कलीसिया से प्रेम करता था।

इस गहन आत्मिक पुस्तक की रूपरेखा सहायक हो सकती है:

1. मसीही विश्वासी का स्थान–"मसीह में", "स्वर्गीय स्थानों में" (अध्याय 1-3)।
2. मसीही विश्वासी की चाल (अध्याय 4-6)।
    1. कलीसिया से संबंधित (अध्याय 4)।
    2. नैतिकता से संबंधित (अध्याय 5)।
    3. सामाजिक जीवन से संबंधित (अध्याय 5:21-6:9)।
    4. आत्मिक युद्ध से संबंधित (अध्याय 6:10-24)।

## पाठ 31 - फिलिप्पियों तथा कुलुस्सियों की पत्री

ये पत्रियाँ, इफिसियों तथा फिलेमोन के ही समान कैद से लिखी गई थीं।

फिलिप्पियों की पत्री मूल रूप से "धन्यवाद" पत्र है। यह इपफ्रास द्वारा फिलिप्पी की कलीसिया के पास पहुँचाई गई थी। इसमें पौलुस और तीमुथियुस ने उस दान के प्रति आभार प्रदर्शन किया था जो उन्होंने प्राप्त किया था।

फिलिप्पी की कलीसिया के प्रति पौलुस का विशेष प्रेम था। नदी किनारे महिलाओं के एक समूह से उसकी भेंट हुई थी और लुदिया का मन-परिवर्तन हुआ था। बाद में पौलुस और सीलास को पीटा गया और बन्दीगृह में डाल दिया गया। लगभग आधी रात को, जब वे प्रार्थना करते हुए परमेश्वर के भजन गा रहे थे, एक बड़े भूकम्प ने बन्दीगृह को हिला दिया। दारोग़ा और उसके परिवार ने यीशु पर विश्वास किया और उन्हें बपतिस्मा दिया गया (प्रेरि 16)।

इस पुस्तक का मुख्य सन्देश आनन्द है : दु:ख में आनन्द (अध्याय 1); सेवकाई में आनन्द (अध्याय 2); मसीह में आनन्द (अध्याय 3); तथा सन्तोष में आनन्द (अध्याय 4)।

पौलुस ने कुलुस्सियों की पत्री को लिखा क्योंकि वहाँ गलत शिक्षाओं को सिखाया जा रहा था और उसे उन्हें सुधारना आवश्यक था। मसीहियों ने सोचा था कि उन्हें खतना, भोजन संबंधित नियम तथा पर्वों और स्वर्गदूतों को मध्यस्थ बनाने की प्रथा को बनाए रखना चाहिए। वे मसीह के ईश्वरत्व के अभिप्राय को समझ नहीं पाए थे इस कारण वे समझे नहीं थे कि जो कुछ उन्हें आवश्यक है वह यीशु में मिल सकता है।

पौलुस उन्हें सुधारता है:

1. सिद्धान्त-संबंधी (अध्याय 1 तथा 2)।
2. व्यवहार-संबंधी (अध्याय 3 तथा 4)।

## पाठ 32 - पहला तथा दूसरा थिस्सलुनिकियों

पौलुस और सिलास ने पौलुस की दूसरी मिशनरी यात्रा के समय थिस्सलुनिके में कलीसिया की स्थापना की थी (प्रेरि 17:1-10)। वे वहाँ, यहूदियों के द्वारा एकत्रित की गई भीड़ के कारण, महीने भर से भी कम रहे थे। उस नयी कलीसिया ने असाधारण सामर्थ का प्रदर्शन किया था। इसके सदस्य मुख्य रूप से अन्यजाति थे जो मूर्तिपूजक धर्म से मन फिराकर मसीही बने थे तथा वे प्रतिकूल और मूर्तिपूजक वातावरण का सामना कर रहे थे।

पौलुस जानने के लिए उत्सुक था कि वे कैसे बढ़ रहे थे। तीमुथियुस ने उसके

पास समाचार लाया था (3:6) और वह उन्हें विश्वास में दृढ़ बने रहने के लिए प्रोत्साहित करना चाहता था। पहला थिस्सलुनिकियों में सिद्धान्त कम परन्तु प्रोत्साहन अधिक है। पौलुस मसीह के दूसरे आगमन को मसीही जीवन तथा सेवा के प्रोत्साहन के रूप में अधिक बताता है (1:10; 2:19; 3:13; 4:16-18 तथा 5:23)।

दुसरा थिस्सलुनिकियों पहले पत्र के कुछ ही दिनों बाद लिखी गई। इसका विषय मसीह का दूसरा आगमन है। पहली पत्री को पढ़कर कुछ लोग इसके विषय में उलझन में पड़ गए थे। यह पत्री यीशु के आगमन से पहले होने वाली घटनाओं को बताती है तथा मसीहियों को प्रोत्साहित करती है कि वे सताव में स्थिर रहें, कठोर परिश्रम करें तथा धीरज के साथ मसीह के आने की बाट जोहते रहें।

## पाठ 33 - पहला तथा दूसरा तीमुथियुस

तीन पत्रियाँ–तीमुथियुस की पहली तथा दूसरी पत्री तथा तीतुस पास्तरीय पत्रियाँ कहलाती हैं क्योंकि इनमें एक परिपक्व पासबान पौलुस द्वारा उन युवा सेवकों को दिया गया परामर्श हैं जो फिर दूसरों को पासबानी कार्य के लिए प्रशिक्षित करेंगे।

तीमुथियुस का पिता यूनानी था परन्तु उसकी माता यहूदिनी थी। वह संभवत: पन्द्रह वर्ष की आयु में तब मसीही बना था जब पौलुस उसके गृह-नगर लुस्त्रा में गया था (प्रेरि 16:1-3; 1 तीमु 1:2)। सात वर्षों के बाद वह पौलुस का मिशनरी साथी बना।

पहला तीमुथियुस - अपनी पहली कैद के पश्चात् पौलुस इफिसुस गया। जब उसका जाने का समय आया तो उसने तीमुथियुस को काम की देखरेख करने के लिए वहीं छोड़ दिया। पौलुस ने उसे उत्साहित करने तथा कुछ व्यावहारिक परामर्श देने के लिए कुरिन्थुस से पत्र लिखा।

मुख्य वचन 3:15 है। तीमुथियुस को झूठी शिक्षाओं के विरुद्ध चेतावनी देने तथा प्रार्थना के महत्व पर बल देने की सलाह दी गई। कलीसिया के अधिकारियों के लिए तथा एक अच्छे सेवक के गुणों के लिए स्पष्ट निर्देश दिए गए हैं।

दूसरा तीमुथियुस पौलुस की अन्तिम पत्री है जो उसके द्वारा, यह सोचते हुए कि उसके कुच का समय निकट आ गया, रोमी कालकोठरी से लिखी गई थी। उसे त्रोआस में अचानक ही पकड़ लिया गया था और उसके पास अपनी पुस्तकें, चर्म्मपत्रों (4:13) तथा बाहरी बागा लेने का समय नहीं था। वह अकेला था (4:10-12); और उसे मृत्युदंड दिया जाना अपेक्षित था। वह तीमुथियुस से आग्रह करता है कि अपने

साथ मरकुस को तथा जो वस्तुएँ उसने पीछे छोड़ी थीं उनमें से कुछ को ले आए। उसमें मुख्य विषय सताव, सेवा, धर्मत्याग तथा पवित्र शास्त्र हैं।

## पाठ 34 - तीतुस तथा फिलेमोन

तीतुस एक विशुद्ध अन्यजातीय तथा पौलुस के द्वारा मन फिराए मसीहियों में से एक था (1:4)। पौलुस ने तीतुस को कुरिन्थुस की कलीसियाओं में पाई जाने वाली समस्याओं को सुलझाने का कठिन काम सौंपा था (2 कुरि 7:6,7)। पौलुस को तीतुस की योग्यताओं पर बड़ा विश्वास था, क्योंकि बाद में उसे क्रेते में उस कठिन कलीसिया के जीवन में प्रमुख भूमिका निभाने के लिए छोड़ दिया गया (1:5)। तीतुस "संकट निवारक", नाजुक परिस्थिति को संभाल सकने वाला व्यक्ति था। वह तीमुथियुस से अधिक मजबूत पुरुष तथा संभवत: अधिक परिपक्व लगता है।

यह पत्री व्यावहारिक परामर्श तथा झूठी शिक्षाओं के विरुद्ध चेतावनियों से भरी है। इसके मुख्य विषय में सेवकाई की जिम्मेवारियों तथा सिद्धान्तों से संबंधित परामर्श तथा प्रोत्साहन है, और साथ ही अच्छे कार्यों को बनाए रखने पर विशेष महत्व दिया गया है।

फिलेमोन मध्यस्थता की सुंदर पत्री है, जिसमें फिलेमोन से बिनती की गई है कि अपने भागे हुए गुलाम उनेसिमुस को क्षमा कर दे तथा उसे अपने पास वापिस रख ले। फिलेमोन स्पष्ट रूप से एक समृद्ध मनुष्य था (5:7,22), तथा संभवत: पौलुस के द्वारा मसीही बना था (पद 19)। उनेसिमुस भागकर रोम चला गया था जहाँ वह पौलुस के प्रभाव में आया और उसका मन-परिवर्तन हुआ (10)।

इस पत्री में उनेसिमुस के बदले हुए व्यवहार की गवाही तथा उसे क्षमा कर देने की प्रेमपूर्ण बिनती है।

## पाठ 35 - इब्रानियों

इस पत्री में हस्ताक्षर नहीं है परन्तु अनेक विश्वास करते हैं कि इसे पौलुस ने लिखा है। यह प्राथमिक रूप से यहूदी मसीहियों को लिखी गई थी और उसका अभिप्राय यह दिखाना था कि मसीह के द्वारा हमारे पापों के लिये किया गया प्रायश्चित और दया की महिमा पुराना नियम के याजकपन से अधिक चमकदार है। मसीह सिद्ध याजक है जो सिद्ध बलिदान चढ़ाता है।

प्रथम दस अध्याय प्रकट करते हैं कि परमेश्वर का पुत्र स्वर्गदूतों से, मूसा से, यहोशू से, हारून से तथा मलिकिसिदक से श्रेष्ठ है। अध्याय 11 से 13 विश्वास के जीवन को व्यक्त करते हैं।

## पाठ 36 - याकूब

लेखक संभवत: यीशु का भाई है जो यरूशलेम की कलीसिया में अगुआ बना (प्रेरि 12:17; 15:13)। वह ईसवी 62 में शहीद हुआ। यह पत्री स्पष्ट रूप से यहूदी धर्म से मन फिराकर मसीही बने विश्वासियों को लिखी गई थी जो पवित्र भूमि से बाहर रह रहे थे, परन्तु इसका संदेश इतना स्पष्ट और व्यावहारिक है कि यह सब मसीहियों के जीवन के लिए लागू होता है। इसका प्रमुख विषय व्यावहारिक मसीही जीवन है जो स्वयं को अच्छे कार्यों में प्रकट करता है।

कुछ अध्याय मसीहियों की कुछ विशेष परिस्थितियों में लागू होते हैं:

- जो दबाव में है उनके लिए (1:2-4),
- धनी मसीहियों के लिए (1:9-11, 5:1-6),
- कलीसिया के सदस्यों के रूप में उनके व्यवहार के लिए (2:1-9),
- जो नेतृत्व करते हैं उनके लिए (3:1) तथा
- उनके लिए जो भटक रहे हैं (5:19-20)।

अपनी शिक्षा को समझाने के लिए याकूब सुस्पष्ट चित्र-भाषा का प्रयोग करता है। 1:6,11,17,23,26; 3:3,5,7,12; 4:14 और 5:1,2,7 इन उदाहरणों को देखिए।

## पाठ 37 - पहला तथा दूसरा पतरस

पहला पतरस उन दु:ख उठाने वाले मसीहियों को लिखा गया है जो सताए जाने के कारण घबड़ाए हुए थे। यह पत्री सजीव है, दिल से लिखी गई है और पढ़ने में लेख से बढ़कर एक संदेश-सी लगती है। मुख्य शब्द "दु:ख" 15 से अधिक बार पाया जाता है।

पतरस, मसीह में महिमामय उद्धार और विश्वासी का जीवन, उसका पद तथा कर्त्तव्यों के विषय में बात करता है। वह नागरिक और सामाजिक कर्त्तव्यों, सर्वसाधारण अच्छी नागरिकता और विश्वास के घराने में के कर्त्तव्यों का वर्णन करता है। वह मसीह का वर्णन इस प्रकार करता है:

- आशा का स्रोत (1:3),
- बलिदान का मेमना (1:19),
- कोने के सिरे का बहुमूल्य पत्थर (2:6),
- सिद्ध उदाहरण (2:21),
- दु:ख उठाने वाला आदर्श (2:23),
- पाप उठाने वाला (2:24),
- आत्माओं का रखवाला (2:25) तथा
- उच्च उठाया गया प्रभु (3:22)

दूसरा पतरस भ्रष्ट शिक्षकों तथा धर्मनिन्दकों के विरुद्ध एक चेतावनी है। परमेश्वर के वचन तथा ईश्वरीय प्रतिज्ञाओं के पूर्ण होने की निश्चितता पर बहुत बल दिया गया है। तीमुथियुस की दूसरी पत्री के समान 2 पतरस भी इस बात पर बल देता है कि अन्त निकट है और कलीसिया के लिए आगे संकट का समय है।

पतरस की दोनों पत्रियाँ सात बहुमूल्य बातों की सूची देती हैं –

पहला पतरस में: – अग्निमय परीक्षा (1:7),
– मसीह का लहू (1:19),
– जीवता पत्थर (2:4),
– स्वयं मसीह (2:6),
– नम्र एवं दीन मन (3:4)।

दूसरा पतरस में: – विश्वासी का विश्वास (1:1),
– ईश्वरीय प्रतिज्ञाएँ (1:4)।

## पाठ 38 – पहला, दूसरा तथा तीसरा यूहन्ना तथा यहूदा

प्रेरित यूहन्ना ने इन तीनों पत्रियों, (पहला, दूसरा तथा तीसरा यूहन्ना), को लिखा।

पहला यूहन्ना – इसे "निश्चितताओं की पत्री" शीर्षक दिया जा सकता है। इसके मुख्य शब्द सहभागिता, जानना तथा प्रेम हैं। यह विश्वासियों के लिए उपलब्ध आत्मिक ज्ञान पर बहुत बल देती है। "जानना" शब्द, या उसका समानार्थी शब्द, 30 से अधिक बार आया है। इसका केन्द्रीय विषय है–

1. परमेश्वर जीवन तथा ज्योति है (अध्याय 1 और 2);
2. परमेश्वर धर्मी प्रेम है (अध्याय 3 तथा 4);
3. संसार तथा सारी बुरी शक्तियों के साथ के संघर्ष में उन पर जय पाने वाले सिद्धान्त विश्वास और प्रेम हैं (अध्याय 5)।

दूसरा यूहन्ना मित्रों को विधर्म तथा झूठे शिक्षकों के साथ संगति रखने के विरुद्ध में चेतावनी देने के लिए लिखी गई थी (पद 7–11)। "प्रेम" शब्द 4 बार तथा "सत्य" 5 बार आया है।

तीसरा यूहन्ना गयुस को लिखी गई थी, जो एक दृढ़ मसीही जन, पहुनाई करने में तत्पर था। पत्री की विषय वस्तु, उसके तथा अन्य दो के इर्द–गिर्द केन्द्रित है: दियुत्रिफेस–जिसे यूहन्ना मिलने पर डाँटेगा, तथा देमेत्रियुस–जो उत्तम प्रतिष्ठा का आदर्श मसीही है।

यहूदा की पत्री, यीशु और याकूब के छोटे भाई के द्वारा लिखी गई थी। यहूदा मसीही लोगों के उस समूह को लिखता है जिन्हें अपने भीतर ही से उन लोगों से खतरा है जो उनमें "आ मिले" हैं और अपनी झूठी शिक्षाओं के द्वारा उनमें विभाजन कर रहे हैं। यहूदा का उद्देश्य है कि ऐसे शिक्षकों की ओर प्रतिरोध कड़ा किया जाए।

## पाठ 39 - प्रकाशितवाक्य

यह पुस्तक यूहन्ना के द्वारा तब लिखी गई थी जब वह पतमुस टापू पर निर्वासित किया गया था। यह सताव के समय लिखी गई थी (2:13) और आगे इससे भी बुरा समय आने वाला था (2:10); क्योंकि रोमी सम्राट की आराधना करना अनिवार्य हो गया था। इस कारण, कलीसियाओं को लिखे गए पत्र, तथा यह सम्पूर्ण पुस्तक ही, मसीहियों को स्थिर बने रहने हेतु प्रोत्साहित करने के लिए आवश्यक थे। यह पुस्तक समझने में कठिन है, परन्तु यह बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह सारी भविष्यवाणियों की महान समाप्ति, जब दुष्ट का न्याय किया जाएगा और मसीह अनन्त महिमा में राजा के रूप में स्थापित किया जाएगा, की दिशा में जो हो रहा है उसका चित्र प्रस्तुत करती है।

बाइबल में मात्र यही एक पुस्तक है जिसमें आज्ञाकारी पाठकों के लिए एक विशेष प्रतिज्ञा रखी है (1:3), तथा जो इसकी विषय-वस्तु में परिवर्तन करेंगे उनके लिए शाप की घोषणा करती है (22:18,19)।

## पाठ 40 - प्रकाशितवाक्य की रूपरेखा

1. प्राक्कथन (1:1-20)।
2. सात कलीसियाओं को सात पत्र (2:1-3:22)।
3. स्वर्ग का दर्शन (4:1-11)।
4. सात मुहरें (5:1-8:5)।
5. सात तुरहियाँ (8:6-11:19)।
6. सात चिन्ह (12:2-14:20)।
7. सात कटोरे (15:1-16:21)।
8. ख्रीष्ट-विरोधी का राज्य एवं विनाश (17:1-20:15)।
9. परमेश्वर का नगर (21:1-22:15)।
10. उपसंहार (22:6-21)।

प्रकाशितवाक्य के अन्तिम अध्याय उत्पत्ति के आरम्भिक अध्यायों के साथ एक बहुत आश्चर्यजनक विरोधाभास रखते हैं। जैसे कि हम आगे के चार्ट में देखते हैं:

| उत्पत्ति में इन बातों का वर्णन है: | प्रकाशितवाक्य में इन बातों का वर्णन है: |
|---|---|
| सूर्य की सृष्टि | एक ऐसा स्थान जहाँ सूर्य की आवश्यकता नहीं होगी |
| संसार में पाप का प्रवेश | पाप निकाल दिया जाएगा |
| शाप दिया जाना | शाप का अन्त किया जाएगा |
| शैतान की विजय | शैतान की हार होगी |
| "जीवन के वृक्ष" के पास से निकाल दिया जाना | "जीवन के वृक्ष" के पास प्रवेश मिलेगा |

"हे प्रभु यीशु आ।"

# 2 बाइबल के सिद्धान्त

आप ने संभवत: इस विभाग के शीर्षक से यह निर्णय कर लिया होगा कि यह बहुत कठिन और, कदाचित्, अरुचिकर होगा परन्तु इसके विपरित आप पाएँगे कि ये पाठ हमारे विश्वास से संबंधित महत्वपूर्ण तथ्यों को एकत्रित करेंगे जो सम्पूर्ण बाइबल में फैले हैं। "सिद्धान्त" शब्द का वास्तविक अर्थ "शिक्षा" है, और ये शिक्षाएँ उन प्रश्नों का उत्तर देंगी जो आपके मन में है, और जो आपकी सेवकाई के आने वाले वर्षों में आपके लोग बार-बार आपसे पुछेंगे। आप अपने ध्यानपूर्वक अध्ययन के द्वारा उन्हें शिक्षा देने योग्य बनोगे कि वे "नाना प्रकार के और ऊपरी उपदेशों से" भरमाए न जाएँ (इब्रा 13:9)।

नोट - इन पाठों की बहुत-सी सामग्री दो उत्तम पुस्तकों से है :

- '100 बाइबल लेसन्स्', लेखक- डगलस अलबन, प्रकाशक- गास्पल लिटरेचर सर्विस बॉम्बे, और
- 'द ग्रेट डॉक्ट्रीन्स् ऑफ द बाइबल', लेखक- विलिमय इवान्स, प्रकाशक- मूडी प्रेस, शिकागो।

## विषय-सूची


भाग 1
परमेश्वर का सिद्धान्त

भाग 2
यीशु मसीह का सिद्धान्त

भाग 3
पवित्र आत्मा का सिद्धान्त

भाग 4
मनुष्य का सिद्धान्त

भाग 5
उद्धार का सिद्धान्त .

भाग 6
कलीसिया का सिद्धान्त

भाग 7
पवित्र शास्त्र का सिद्धान्त

भाग 8
आत्मिक जीवधारियों का सिद्धान्त

भाग 9
अन्तिम बातों का सिद्धान्त

# भाग एक - परमेश्वर का सिद्धान्त

## पाठ 1 - जीवित परमेश्वर का अस्तित्व

इस बात के अनेक प्रमाण हैं कि परमेश्वर का अस्तित्व है। उनमें से कुछ पर हम इस पाठ में ध्यान देंगे:

1. पवित्र शास्त्र से प्रमाण: बाइबल का आरम्भ इस सकारात्मक सत्य से होता है कि परमेश्वर का अस्तित्व है (उत्प 1:1) और यह स्पष्ट रीति से बताती है कि मात्र मूर्ख ही उसके अस्तित्व को नकारते हैं (भजन 14:1)।

2. सृष्टि से प्रमाण: आकाश की सुंदरता और महिमा परमेश्वर के अस्तित्व का प्रमाण देती है, (भजन 19:1) और सृष्टि ईश्वरत्व की अनन्त महिमा के बारे में सिखाती है (रोम 1:20)।

3. विवेक से प्रमाण: मनुष्य एक विश्वव्यापी विश्वास के साथ पैदा हुआ है कि एक सर्वोच्च जीव (ईश्वर) का अस्तित्व है।

4. अन्य प्रमाण - परमेश्वर के अस्तित्व के और अनेक प्रमाण हैं, जैसे कि:

- संसार का अस्तित्व है। अवश्य ही किसी व्यक्ति अथवा वस्तु ने इसे अस्तित्व में लाया होगा।
- इसकी रूपरेखा दर्शाती है कि यह किसी उत्तम योजना बनाने वाले मस्तिष्क का परिणाम है।
- मनुष्य के पास बौद्धिक और नैतिक स्वभाव है, इससे यह स्पष्ट होता है कि उसका सृष्टिकर्ता अवश्य ही जीवित, बुद्धिमान और नैतिक जीव होगा।
- जीवन का एक आरम्भ होना चाहिए और यह अवश्य ही अनन्त जीवन रखने वाले जीव से आया होगा।

उपसंहार - इब्रानियों 11:6 पर ध्यान दीजिए - "क्योंकि परमेश्वर के पास आने वाले को विश्वास करना चाहिए कि वह है।" आइए हम बालकों के समान, पवित्र शास्त्र और प्रकृति में उपलब्ध परमेश्वर के प्रकाशन पर आधारित सरल विश्वास के साथ, उस पर सम्पूर्ण विश्वास और भरोसा करते हुए उसके पास आएँ।

## पाठ 2 - परमेश्वर का व्यक्तित्व

परमेश्वर के बारे में संपूर्ण, सच्चा ज्ञान मात्र बाइबल से प्राप्त किया जा सकता है (यूहन्ना 20:31)। आइए हम कुछ सच्चाइयों पर ध्यान दें जो वह हमें परमेश्वर के विषय में बताती है:

1. उसका स्वभाव (स्वरूप या बनावट) - परमेश्वर आत्मा है। आत्मा की न देह, न हड्डियाँ और न ही रक्त होता है। (यूहन्ना 4:24)।

2. उसका व्यक्तित्व - व्यक्तित्व की विशेषता ज्ञान, भावना, तथा इच्छा शक्ति रखना है। हमारा परमेश्वर एक ऐसा व्यक्ति है जो जीवित है और उसकी निश्चित विशेषताएँ हैं (यिर्म 10:10; 1 थिस्स 1:9)।

3. उसकी एकता - मूर्तिपूजकों के अनेक देवताओं के विपरीत, प्रभु हमारा परमेश्वर यहोवा एक ही परमेश्वर है (व्यव 6:4; यश 44:6)।

उपसंहार - हम परमेश्वर के विषय में जितना अधिक सीखते हैं, उतना ही अधिक हमें पता चलता है कि हमारा परमेश्वर महान परमेश्वर है।

## पाठ 3 - परमेश्वर के स्वाभाविक गुण

क्या 'गुण' शब्द कठिन लगता है? इसका सरल अर्थ किसी की विशेषता अथवा विषेश गुण होता है। इस पाठ में हम हमारे परमेश्वर के कुछ गुणों का अध्ययन करेंगे।

1. वह अनन्त है - एक सच्चा परमेश्वर होने के लिए उसका न तो आदि और न अन्त होना चाहिए (भजन 90:2; 1 तीमु 1:17)।
2. वह अपरिवर्तनीय है - (1 शमु 15:29; मलाकी 3:6; याकूब 1:17)।
3. वह सर्वशक्तिमान है - इसका अर्थ है कि उस के पास सारी सामर्थ है (अय्यूब 42:2; यिर्म 32:27)।
4. वह सर्वव्यापी है - अर्थात् वह एक ही और समान समय में हर जगह उपस्थित है (भजन 139:7-9)।
5. वह सर्वज्ञानी है - उसे सम्पूर्ण ज्ञान है (1 इति 28:9; 2 इति 16:9; भजन 94:11; अय्यूब 42:2; यशा 40:28)।

उपसंहार - मानवजाति निराशामय रीति से खोई हुई है और इस दयनीय दशा में उसे उस परमेश्वर की आवश्यकता है जिसकी विशेषाओं को हमने इस पाठ में सीखा हैं। मनुष्य के लिए क्यों आवश्यक है कि परमेश्वर में इन विशेषताओं में से हर एक विशेषता हो?

## पाठ 4 - परमेश्वर के नैतिक गुण

परमेश्वर के नैतिक गुणों में से हर एक गुण भरपूर संदेश का विषय बन सकता है। आइए हम उनमें से कुछ पर ध्यान दें -

1. परमेश्वर पवित्र है - (निर्ग 15:11; यशा 6:3; 1 पत 1:16)।
2. परमेश्वर धर्मी है - (भजन 116:5; एज्रा 9:15; यिर्म 12:1)।
3. परमेश्वर दयालु है - (भजन 103:8; रोमि 9:18)।
4. परमेश्वर प्रेमी है - (1 यूहन्ना 4:8-16; यूहन्ना 3:16; 16:27)।
5. परमेश्वर विश्वासयोग्य है - (1 कुरि 1:9; 2 तीमु 2:13)।

आने वाले सप्ताहों में, अपने परमेश्वर के इन अन्य नैतिक गुणों पर ध्यान दें: वह महिमामय (निर्ग 15:11; भजन 145:5); अनुग्रहकारी (निर्ग 34:6; भजन 116:5); धीरजवन्त (गिनती 14:18; मीका 7:18); जलन रखने वाला (यहोशू 24:19; नहूम 1:2); करुणामय (1 राजा 8:23); महान (2 इति 2:5; भजन 86:10); अगम (अय्यूब 11:7; भजन 145:3); अदृश्य (अय्यूब 23:8,9; 1 तीमु 1:17); भला (भजन 25:8; 119:68); खरा (भजन 25:8; 92:15); अपरिवर्तनशील (भजन 102:26-27; याकूब 1:17); ज्योति (यशा 60:19; 1 यूहन्ना 1:5); सच्चा (यिर्म 10:10); सिद्ध (मत्ती 5:48); अविनाशी (रोमियों 1:23); अमर (1 तीमु 1:17; 6:16); भस्म करने वाली आग (इब्रा 12:29) है और उसके तुल्य और कोई नहीं है (निर्ग 9:14; व्यव 33:26)।

उपसंहार - परमेश्वर की पवित्रता ने पाप के लिए दंड की माँग की। ऐसा कैसे हो सकता है कि परमेश्वर एक साथ प्रेमी और पवित्रता की माँग करने वाला भी हो? वह एक दोषी पापी के प्रति एक साथ दयालु और न्यायी कैसे हो सकता है? इसका उत्तर मात्र कलवरी के क्रूस में मिल सकता है, जहाँ यीशु का बलिदान पाप के विरुद्ध परमेश्वर का क्रोध और पापी मनुष्य के प्रति उसकी दया का प्रदर्शन है।

## पाठ 5 - त्रिएकता

परमेश्वर एक है, वह आदिकाल से अस्तित्व में है और हमारे लिए अपने आप को तीन व्यक्तियों में अभिव्यक्त (प्रदर्शित) करता है: पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा।

पवित्र शास्त्र के इन सन्दर्भों पर ध्यान दीजिए जो परमेश्वर की त्रिएकता को प्रमाणित करते हैं:

1. मत्ती 3:13 से 17 में यीशु मसीह का बपतिस्मा - पिता स्वर्ग से बोला, पुत्र का बपतिस्मा हुआ और पवित्र आत्मा कबूतर के रूप में नीचे आया और उद्धारकर्त्ता पर उतरा।
2. मत्ती 28:19 में बपतिस्मा देने की विधि - "पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम में" बपतिस्मा देना ऐसा यीशु ने कहा।
3. 2 कुरिन्थि 13:14 में आशीष वचन - "प्रभु यीशु ख्रीस्त का अनुग्रह, और परमेश्वर का प्रेम और पवित्र आत्मा की सहभागिता।"
4. उत्पत्ति 1:26 में मनुष्य की सृष्टि के विवरण में परमेश्वर अपने लिए बहुवचन का प्रयोग करता है: "हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएँ।" (इन वचनों को भी देखिये: उत्पत्ति 1:1-3; यूहन्ना 1:1-2)।

उपसंहार - परमेश्वर त्रिएक है, और अपने आपस में एक सिद्ध रिश्ता रखता है।

मनुष्यों को ऐसे ही बनाया गया है कि वे परमेश्वर के साथ, अन्य लोगों के साथ और बाकी की सृष्टि के साथ सही रिश्ते में बने रहें - क्योंकि हम परस्पर-संबंध-रखनेवाले परमेश्वर की समानता में बनाये गये हैं।

# भाग 2 - यीशु मसीह का सिद्धान्त

## पाठ 6 - भविष्यवाणियाँ पूर्ण हुईं

आप, यीशु मसीह से संबंधित नीचे दिये गये कथनों में हर एक के साथ उसके विषय में की गई पुराना नियम की भविष्यवाणी, और सैकड़ों वर्ष बाद उसके पूर्ण होने का नया नियम का विवरण पाएँगे। ये विस्मयकारी सच्चाइयाँ हैं!

1. मसीह इस्राएल से आएगा:
   - गिनती 24:17-19; मत्ती 1:17
2. मसीह का जन्म दाऊद के परिवार और यहूदा के गोत्र में होगा:
   - उत्पत्ति 49:10 और यशा 11:1; लूका 1:31-33
3. उसका जन्म बेतलेहेम में होगा:
   - मीका 5:2; लूका 2:4-7
4. वह एक कुँवारी से जन्म लेगा:
   - यशा 7:14; मत्ती 1:18,22,23
5. मसीह के आने की घोषणा एक अग्रदूत द्वारा की जाएगी:
   - यशा 40:3; मत्ती 3:3
6. मसीह परमेश्वर होगा:
   - यशा 9:6; यूहन्ना 1:14
7. वह अपने बाल्यकाल का कुछ समय मिस्र में बिताएगा:
   - होशे 11:1; मत्ती 2:13-18
8. वह दु:ख उठाएगा और पापों के लिए प्रायश्चित्त करेगा:
   - यशा 53:4,6; 2 कुरि 5:21; इब्रा 2:17
9. वह गदहे के बच्चे पर सवार होकर यरूशलेम में प्रवेश करेगा:
   - जक 9:9; मत्ती 21:2-5
10. क्रूस पर दु:ख सहते समय उसे पित्त और सिरका दिया जाएगा:
    - भजन 69:21; मत्ती 27:34
11. क्रूसित किए जाने की रोमी परम्परा के विपरीत, उसकी एक भी हड्डी तोड़ी नहीं जाएगी: - भजन 34:20; यूहन्ना 19:33-36

12. उसके कपड़ों को आपस में बाँट लेने के लिए लोग उन पर चिट्ठियाँ डालेंगे: - भजन 22:18; मत्ती 27:35

13. अपनी मृत्यु के समय की वेदना में वह कुछ विशेष शब्द कहेगा:
- भजन 22:1; मरकुस 15:34

14. वह मृतकों में से फिर जी उठेगा:
- भजन 16:10; प्रेरि 2:23-27

उपसंहार - इन में से हर एक भविष्यवाणी हमारे परमेश्वर की सामर्थ और सर्वज्ञान का एक और प्रमाण है।

## पाठ 7 - मसीह का ईश्वरत्व

हम जानते हैं कि यीशु परमेश्वर है क्योंकि उसमें वे सारे गुण हैं जो मात्र परमेश्वर के हैं। इन पदों का अध्ययन कीजिए जो उन गुणों को बताते हैं:

1. वह अनन्त है (मीका 5:2; यूहन्ना 8:58; कुलु 1:17; प्रका 1:8)।
2. वह अपरिवर्तनीय है (इब्रा 13:8)।
3. वह सर्वशक्तिमान है (लूका 8:24; मत्ती 28:18)।
4. वह सर्वव्यापी है (मत्ती 18:20; यूहन्ना 1:48; 3:13; मत्ती 28:20)।
5. वह सर्वज्ञानी है (मरकुस 11:2-6; यूहन्ना 2:24-25; लूका 5:22; मत्ती 24:3-31)।
6. वह पवित्र है (मरकुस 1:24); पापरहित है (1 पत 2:22; यूहन्ना 19:4)।
7. वह न्यायी है (यूहन्ना 2:14-17, मन्दिर की सफाई करने में); (प्रेरि 17:31, एक धर्मी न्यायाधीश है)।
8. वह प्रेमी है (यूहन्ना 15:13; 11:36)।
9. वह दयालु है (तीतुस 3:5), वह हमारे लिए मरा।
10. वह विश्वासयोग्य है (2 तीमु 2:13)।

परमेश्वर के पाँच कार्य हैं जिनका श्रेय यीशु को जाता है : सृष्टि की रचना (यूहन्ना 1:3), सुरक्षा (इब्रा 1:3), पाप क्षमा (लूका 7:48), मृतको को जिलाना (यूहन्ना 6:39) और न्याय (यूहन्ना 5:22)।

उपसंहार - यीशु के पुनरुत्थान की सच्चाई इस बात का सबसे ठोस प्रमाण है कि वह परमेश्वर है।

## पाठ 8 - मसीह का मनुष्यत्व

उद्धारकर्त्ता होने के लिए यीशु को न मात्र ईश्वरीय होना और कुँवारी से जन्म लेना था परन्तु उसे सचमुच मनुष्य भी होना अवश्य था (1 तीमु 2:5)। उसके

मनुष्यत्व के इन प्रमाणों पर ध्यान दीजिए:

1. उसे मानवीय नाम दिए गए (मत्ती 1:21)। "मनुष्य का पुत्र" यह वाक्यांश 77 बार आया है।
2. उसकी मानवीय वंशावली थी (मत्ती 1-16)।
3. वह भूखा (मत्ती 4:2) और प्यासा हुआ (यूहन्ना 4:7; 19:28)।
4. वह थका (यूहन्ना 4:6) और सोया था (मत्ती 8:24)।
5. उसने प्रेम किया (मत्ती 10:21; यूहन्ना 11:36) और उसमें दया थी (मत्ती 9:36)।
6. वह क्रोधित और दु:खी हुआ (मरकुस 3:4)।
7. वह कराहा (यूहन्ना 11:33); वह रोया (यूहन्ना 11:35; लूका 19:41)।
8. उसके पास देह (यूहन्ना 1:14); प्राण (मत्ती 26:38) और आत्मा (लूका 23:46) थी।
9. उसकी मृत्यु हुई (इब्रा 9:27; लूका 23:46)।

निष्कर्ष - परमेश्वर और मनुष्य - हाल्लिलूय्याह, कितना महान उद्धारकर्त्ता!

## पाठ 9 - मसीह का जीवन, प्रथम भाग

हमारे प्रभु के पृथ्वी पर के वर्षों का विस्तृत विवरण दिया गया है।

1. जैसे परमेश्वर वैसे ही यीशु भी सर्वदा से अस्तित्व में है। वह सब वस्तुओं के पहले से था।
2. कुँवारी मरियम से उसके जन्म लेने का वर्णन मत्ती और लूका में मिलता है।
3. जब वह आठ दिन का हुआ तब उसका खतना किया गया (लूका 2:21)।
4. जब वह बारह वर्ष का था तब उसे यरूशलेम के मन्दिर में ले जाया गया (लूका 2:41-48)।
5. अपने जीवन के आरम्भिक वर्ष उसने बढ़ई के रूप में नासरत में बिताए (मरकुस 6:3)।
6. उसकी सेवकाई के पहले छ: महीने यहूदिया, सामरिया और गलील में बीते।
7. दूसरे चरण के 6 से 8 महीने उसने कफरनहूम तथा गलील में प्रचार करने, रोगियों की चंगाई और आश्चर्यकर्म करने में बिताए।

यहाँ यीशु के आश्चर्यकर्मों का क्षेत्र दिया गया है:

क. प्रकृति पर - (मत्ती 8:26-27)।

ख. दुष्टात्माओं पर - (मरकुस 5:12-13; मत्ती 8:28-32; 9:32-33; 15:22-28; 17:14-18; मरकुस 1:23-27)।

ग. बीमारी पर - लकवा (मत्ती 8:13, 9:6); मनुष्य की अक्षमता (यूहन्ना

5:5,9); सूखा हाथ (मत्ती 12:13); दुर्बलता की आत्मा (लूका 13:12); लहू का बहना (मत्ती 9:22); जलन्धर रोग (लूका 14:12); ज्वर (मत्ती 8:15); गूँगापन (मत्ती 9:33); अन्धापन (यूहन्ना 9:1-38); बहिरापन (मत्ती 11:5); कोढ़ (मत्ती 8:3; लूका 17:19)। यीशु ने कम-से-कम दस विभिन्न प्रकार की बीमारियों को चंगा किया।

घ. मृत्यु पर - लाजर (यूहन्ना 11:43-44); याईर की बेटी (मत्ती 9:18-26); नाईन नगर की विधवा का पुत्र (लूका 7:12-15)।

ङ. विविध आश्चर्यकम - पानी से दाखरस (यूहन्ना 2:1-11), पाँच हजार लोगों को भोजन खिलाना (यूहन्ना 6:1-14), झील पर चलना (यूहन्ना 6:15-21), चार हजार को भोजन खिलाना (मत्ती 15:32-39), अंजीर के पेड़ को शापित करना (मत्ती 21:18-22), मछली के मुँह में सिक्का पाना (मत्ती 17:27), आश्चर्यजनक रूप से मछलियाँ पकड़ी जाना (लूका 5:1-11; यूहन्ना 21:6)।

च. उसका स्वयं का पुनरुत्थान सब से महान आश्चर्यकर्म था (1 कुरि 15:4; रोमि 1:4)।

## पाठ 10 - मसीह का जीवन, अन्तिम भाग

8. यीशु की, तृतीय चरण अर्थात् उत्तरकालीन गलीली सेवकाई, गलील में और उसके आस-पास, लगभग एक वर्ष तक रही। भीड़ की भीड़ उसके पीछे चलती थी। उसने पहाड़ी उपदेश दिया (मत्ती अध्याय 5, 6 और 7)।
9. अगले चरण में, फरीसी उसे मार डालने के लिए उसके पीछे पड़ गए। यीशु कफरनहूम, फुनिसिया, बेतसैदा, कैसरिया और फिलिप्पी की यात्रा करता हुआ अन्त में फिर गलील में आया।
10. अन्तिम 6 महीने शिक्षा देने, प्रचार करने और यात्रा करने में बिताए।
11. अन्तिम सप्ताह में खजूर का रविवार, अन्तिम भोज, गतसमनी, मुकद्दमे और क्रूस पर की मृत्यु सम्मिलित थी।
12. तीन दिन के बाद, भविष्यवाणी के अनुसार, यीशु मृतकों में से जी उठा।
13. पुनरुत्थान के चालीस दिन बाद वह दृश्य रूप से (सबके देखते) और शरीर सहित स्वर्ग में उठा लिया गया (प्रेरि 1:10,11)।

चर्चा - मसीह के पृथ्वी पर के जीवन की कौन-सी घटनाएँ उसके ईश्वरत्व को प्रदर्शित करती हैं? कौन-सी घटनाएँ उसके मनुष्यत्व को प्रकट करती हैं?

## पाठ 11 – यीशु मसीह का पुनरुत्थान

नया नियम में पुनरुत्थान का उल्लेख एक सौ चार बार आया है और यह पवित्रशास्त्र का बुनियादी सिद्धान्त है। मसीही धर्म ही एकमात्र ऐसा धर्म है जिसका प्रवर्तक (आरम्भ करने वाला) जीवित है।

1. पुनरुत्थान के प्रमाण–
    1. खाली कब्र (मत्ती 28:6; लूका 24:3)।
    2. स्वर्गदूतों की गवाही (मत्ती 28:46; लूका 24:5–7)।
    3. उसके पुनरुत्थान के बाद लोगों ने उससे बातें की : पतरस, मरियम, क्लियुपास और थोमा।
    4. यीशु ने खाया, पीया और अपने घाव दिखाए।
    5. एक साथ पाँच सौ लोगों ने उसे देखा (1 कुरि 15:6)।
    6. स्तिफनुस शहीद हो रहा था तब यीशु उसे दिखाई दिया (प्रेरि 7:56)।
    7. वह दमिश्क के मार्ग पर पौलुस को दिखाई दिया (प्रेरि 9:5)।
    8. लाखों लोगों ने प्रमाणित किया है कि वह जीवित उद्धारकर्त्ता है।
    9. और बहुत-से अचूक (विश्वसनीय) प्रमाण हैं (प्रेरि 1:3)।
2. उसकी पुनरुत्थित देह कैसी थी?
    1. उसमें माँस और हड्डियाँ थी (लूका 24:39)।
    2. वह महिमामय देह थी (फिलि 3:21)।
    3. वह अविनाशी देह थी जिसकी कभी मृत्यु नहीं होगी (रोमि 6:9)।
    4. वह आत्मिक देह थी (1 कुरि 15:44)।

उपसंहार – पुनरुत्थान में मृत्यु से अधिक सामर्थ है क्योंकि वह कब्र की सामर्थ को पूर्ण रूप से तोड़ देता है।

# भाग 3 – पवित्र आत्मा का सिद्धान्त

## पाठ 12 – पवित्र आत्मा का व्यक्तित्व

हम क्यों कहते हैं कि पवित्र आत्मा एक व्यक्ति है? इसके कुछ कारण नीचे दिए गए हैं –

1. पवित्र आत्मा की ओर संकेत करने के लिए बाइबल व्यक्तिवाचक सर्वनामों का प्रयोग करती है।

    यूहन्ना 16:7-8 और 13-15 में पवित्र आत्मा के लिए यूनानी भाषा में पुरुषवाचक सर्वनाम 'वह' का प्रयोग किया गया है। यूहन्ना 15:26 देखिए।

2. पवित्र आत्मा में एक व्यक्ति की विशेषताएँ है।
    1. इच्छा शक्ति (1 कुरि 12:11)।
    2. बुद्धिमानी (नहेमा 9:20; रोमि 8:27)।
    3. ज्ञान (1 कुरि 2:10-12)।
    4. सामर्थ (प्रेरि 1:8)।
    5. प्रेम करने की क्षमता (रोमि 15:30)।
    6. दु:ख करने की क्षमता (इफि 4:30)।
3. वह उन कामों को करता है जो मात्र एक व्यक्ति ही कर सकता है।
    1. परमेश्वर की गूढ़ बातें जाँचता है (1 कुरि 2:10)।
    2. वह बोलता है (प्रका 2:7) और पुकारता है (गल 4:6)।
    3. बिनती करता है (रोमि 8:26)।
    4. गवाही देता है (यूहन्ना 15:26), और सिखाता है (यूहन्ना 14:26; 16:12-14)।
    5. अगुवाई करता है और निर्देश देता है (रोमि 8:14)।
    6. आज्ञा देता है (प्रेरि 16:6-7); मनुष्यों को सेवकाई के लिए बुलाता है और उन्हें कार्य सौंपता है (प्रेरि 13:2)।

वह अधिकृत सहायक है (यूहन्ना 14:16)। यूनानी शब्द 'पेराक्लेटोस' का अर्थ 'वह जो कि साथ-साथ हो' है। वह एक व्यक्तिगत साथी है।

निष्कर्ष - पवित्र आत्मा व्यक्ति है क्योंकि वह सोचता है, प्रयोजन (उद्देश्य) निश्चित करता है, अनुभव करता है, जानता है, इच्छा करता है, प्रेम करता है, दु:खी होता है और व्यक्ति की क्रियाओं को करता है।

## पाठ 13 - पवित्र आत्मा का ईश्वरत्व

पवित्र आत्मा सर्वशक्तिमान परमेश्वर है, हर पहलू से पिता और पुत्र के बराबर है

1. पवित्र आत्मा में ईश्वरीय गुण हैं।
    1. वह सनातक है (इब्रा 9:14)।
    2. वह सर्वव्यापी है (भजन 139:7-10)।
    3. वह सर्वशक्तिमान है (लूका 1:35; उत्प 1:2)।
    4. वह सर्वज्ञानी है (1 कुरि 2:10-11)।
    5. वह कायल करता है (यूहन्ना 16:8)।
    6. वह सत्य है (1 यूहन्ना 5:7)।
    7. वह उदार (भला) है (नहेमा 9:20)।
    8. उसमें हमें सहभागिता प्राप्त है (2 कुरि 13:14)।

2. पवित्र आत्मा वे काम करता है जिन्हें मात्र परमेश्वर ही कर सकता है।
    1. सृष्टि-रचना (अय्यूब 33:4)।
    2. उद्धार (1 कुरि 6:11), और छाप लगाना (इफि 1:13)।
    3. जीवन देना (यूहन्ना 6:63)।
    4. नया जन्म प्रदान करना (यूहन्ना 3:5,6)।
    5. भविष्यवाणी करना (2 पत 1:21)।
    6. मनुष्यों को धार्मिकता और आने वाले न्याय के विषय में निरुत्तर करना (यूहन्ना 16:8-11)।

अभ्यास-कार्य - पुराना नियम के तीन शास्त्रपाठ दीजिए जो पवित्र आत्मा के विषय में बताते हैं (ऊपर दिए गए सन्दर्भों को छोड़कर)।

## पाठ 14 - पवित्र आत्मा के नाम और प्रतीक

1. पवित्र आत्मा के कुछ नाम:
    1. पवित्र आत्मा (लूका 11:13)।
    2. अनुग्रह का आत्मा (इब्रा 10:29)।
    3. भस्म करने वाला आत्मा (मती 3:11-12; यशा 4:4)।
    4. सत्य का आत्मा (यूहन्ना 14:17; 15:26; 16:13; 1 यूहन्ना 5:6)।
    5. जीवन की आत्मा (रोमि 8:2)।
    6. बुद्धि और समझ की आत्मा (यशा 11:2; 61:1-2; लूका 4:18)।
    7. प्रतिज्ञा का आत्मा (इफि 1:13)।
    8. महिमा का आत्मा (1 पत 4:14)।
    9. परमेश्वर, और मसीह का आत्मा (1 कुरि 3:16; रोमि 8:9)।
    10. सहायक (यूहन्ना 14:16)।
2. पवित्र आत्मा के प्रतीक
    1. जल (यूहन्ना 3:5; 7:38-39) - जल जीवन देता है, ताजगी प्रदान करता है, शुद्ध करता है, मुफ्त में दिया गया है, बहुतायत से है।
    2. आग (मत्ती 3:11) - आग प्रकाश देती है, जलाती है, शुद्ध करती है, जाँचती है।
    3. हवा (यूहन्ना 3:8) - हवा शक्तिशाली है, पुनर्जीवित करने वाली है, स्वतन्त्र है, अदृश्य परन्तु प्रभावकारी है।
    4. तेल (भजन 45:7) - तेल अभिषेक करता है, आराम पहुँचाता है, प्रकाश देता है, चंगा करता है।
    5. मेह और झड़ियाँ (भजन 72:6) - मेह ताजगी देने वाली है, स्वच्छ

करने वाली है और फल पैदा करती है।

6. कबूतर (मत्ती 3:16) - कबूतर कोमल/सौम्य है।
7. वचन (यशा 6:8) - वचन मार्गदर्शन करता है, बात करता है, और चेतावनी देता है।
8. छाप (मुहर) (प्रका 7:2; इफि 4:30) - छाप प्रमाणित करती है और सुरक्षा करती है।

चर्चा - ऊपरोक्त हर एक प्रतीक में दिखाए गए पवित्र आत्मा के काम किस प्रकार मसीही विश्वासी के लिए महत्वपूर्ण हैं?

## पाठ 15 - पवित्र आत्मा के विरुद्ध पाप

पवित्र आत्मा के विरुद्ध कुछ पाप अविश्वासियों के द्वारा तथा कुछ विश्वासियों के द्वारा किए जाते हैं। कुछ मामलों में ये किसी सीमा तक एक जैसे होते हैं। महत्वपूर्ण बात यह है कि पवित्र आत्मा के विरुद्ध अपराध करना भयानक परिणामों से भरा हुआ है।

1. अविश्वासियों के द्वारा किए जाने वाले अपराध:
   1. पवित्र आत्मा के द्वारा नया जीवन प्रदान किये जाने के काम का विरोध करना (प्रेरि 7:51)।
   2. पवित्र आत्मा का अपमान करना (इब्रा 10:29)।
   3. पवित्र आत्मा की निन्दा करना (मत्ती 12:31,32)।
2. विश्वासियों के द्वारा किए जाने वाले अपराध:
   1. भीतर निवास करने वाले पवित्र आत्मा को शोकित करना (इफि 4:30-31; यशा 63:10)।
   2. पवित्र आत्मा से झूठ बोलना (प्रेरि 5:3-4)।
   3. आत्मा को बुझाना (1 थिस्स 5:19)।

उपसंहार - वे कुछ तरीके कौनसे हैं जिनके द्वारा विश्वासी लोग पवित्र आत्मा के प्रति अपराध करते हैं या उसे बुझाते हैं?

# भाग 4 - मनुष्य का सिद्धान्त

## पाठ 16 - मनुष्य की मूल स्थिति

मनुष्य परमेश्वर के स्वरूप और समानता में बनाया गया था (उत्प 1:26; 9:6)।

स्वरूप का अर्थ किसी आकृति की छाया या रूपरेखा होता है। समानता उस छाया की आकृति के साथ समरूपता होना सूचित करती है।

1. परमेश्वर के स्वरूप का अर्थ शारीरिक समानता को व्यक्त नहीं करता, क्योंकि परमेश्वर आत्मा है।
2. प्रथम मानव बुद्धिमान था। उसने पशुओं के नाम रखे (उत्प 2:19,20)। उसमें बोलने, तर्क करने तथा सोचने की सामर्थ थी।
3. उसमें नैतिक तथा आत्मिक प्रतिभाएँ (क्षमताएँ) थीं।

चर्चा - मनुष्यों के लिए पतन के पूर्व का जीवन, आज के जीवन से, किस प्रकार भिन्न था?

## पाठ 17 - मनुष्य का पतन

मनुष्य के पतन का वृत्तान्त मसीही धर्म और अन्य धर्मों के द्वारा भी सिखाया जाता है। उत्पत्ति 3 में मानव इतिहास की इस भयानक दु:खद घटना का पूर्ण विवरण है। यह वृत्तान्त जगत में पाप के प्रवेश के विषय में नहीं बताता, क्योंकि शैतान पहले ही पाप कर चुका था तथा उसे स्वर्ग से निकाल दिया गया था (यहेज 28:12-15; यशा 14:9-14)। यह वृत्तान्त बताता है कि पाप ने मानवजाति में कैसे प्रवेश किया और हमें पापी बना दिया।

1. पतन का कर्ता (कारण) - (उत्प 3:1)
    1. शैतान स्वयं के नहीं परन्तु झूठ बोलने वाले सर्प के रूप में प्रकट हुआ था।
    2. उसने उनकी भोजन तथा ज्ञान की अभिलाषा की उन प्रवृत्तियों का सहारा लेकर धावा बोला जो यथोचित थी परन्तु नियंत्रित नहीं थी।
2. कदम जो पतन की ओर ले गए -
    1. हव्वा उस पेड़ के बहुत पास थी—वह यह बुद्धिमानी का काम कर सकती थी कि मना किये गये फल के वृक्ष के पास नहीं जाती।
    2. उसने शैतान से बातचीत की।
    3. वह मना की गई वस्तु की प्रशंसा करने लगी।
    4. उसने परमेश्वर के वचन में फेर-बदल किया। उसने "न उसको छूना" जोड़ा, और उसने "बिना खटके" शब्द हटा दिए और उसने "उसी दिन अवश्य मर जाएगा" को "नहीं तो मर जाओगे" में बदलकर परमेश्वर के वचन की तीव्रता (उग्रता) को कम कर दिया।

चर्चा - आज लोगों को परीक्षा में डालने के लिए शैतान की कौन-सी युक्तियाँ हैं? क्या उनमें बहुत-कुछ बदलाव हुआ है या वे अधिकतर वैसी-ही हैं?

## पाठ 18 – पतन के परिणाम

1. तत्काल हुए परिणाम –
   1. वे पापी बन गए–उनका आत्मिक जीवन मर गया (इफि 2:1)।
   2. उनकी आँखे खुल गईं और वे जान गए कि वे नंगे हैं।
   3. वे परमेश्वर की उपस्थिति से छिप गए–पाप मनुष्य को परमेश्वर से अलग कर देता है।
2. परमेश्वर शाप देता है (उत्प 3:14-19)
   1. सर्प को : पृथ्वी के समस्त जानवरों से अधिक शापित ठहराया।
   2. स्त्री को : सन्तान उत्पत्ति के समय पीड़ा और दु:ख, और उस पति की ओर लालसा जो उस पर प्रभुता करेगा।
   3. पुरुष को : भूमि काँटे व ऊँटकटारे उगाने के लिए शापित हुई। उसका जीवन दु:खमय होगा; जीवन यापन करने के लिए पसीना बहाना होगा। मरना होगा और उसी मिट्टी में मिल जाना होगा जिससे वह आया था।
3. अन्तिम परिणाम:
   1. अब सब मनुष्य परमेश्वर के समक्ष पापी हैं (रोमि 5:12)।
   2. सारा संसार दण्ड के अधीन है (रोमि 3:19)।
   3. जिन लोगों ने नया जन्म नहीं पाया है वे शैतान की सन्तान माने जाते हैं, परमेश्वर की संतान नहीं (यूहन्ना 8:44)।
   4. सम्पूर्ण मानवजाति शैतान की गुलाम बन गई है (2 कुरि 4:4)।
   5. मनुष्य का सम्पूर्ण स्वभाव मानसिक रूप से, नैतिक रूप से, आत्मिक रूप से तथा शारीरिक रूप से पाप से प्रभावित हो गया है (इफि 4:18; रोमि 7:18)।

उपसंहार – मनुष्य के पतन के साथ परमेश्वर ने उद्धारकर्त्ता तथा उद्धार की योजना की प्रतिज्ञा की (उत्प 3:15)। परमेश्वर ने इसे लगभग 4000 वर्ष बाद कलवरी पर पूर्ण कर दिया।

# भाग 5 – उद्धार का सिद्धान्त

## पाठ 19 – मन फिराव (पश्चात्ताप)

मन फिराव पवित्र शास्त्र बाइबल का एक बहुत ही महत्वपूर्ण विषय है, जिसका उल्लेख 100 से अधिक बार हुआ है।

1. मन फिराव की परिभाषा:
   1. मन फिराव क्या नहीं है – यह पाप के कारण मात्र दु:खी होना नहीं है।

कई लोग पाप करने पर रोते हैं परन्तु तुरन्त उसकी ओर लौट जाते हैं। यहूदा इस्करियोति तथा एसाव ने अपने पाप के लिए दु:ख प्रकट किया (इब्रा 12:17), परन्तु उन्होंने मन नहीं फिराया।

2. मन फिराव क्या है - यह मन का वह परिवर्तन है जो व्यवहार में परिवर्तन लाता है (मत्ती 21:28-32)।

2. मन फिराव का महत्व:
   1. यूहन्ना बपतिस्मादाता के संदेश का विषय मन फिराव था (मत्ती 3:1-2)।
   2. यीशु ने मन फिराव का प्रचार किया (मत्ती 4:17)।
   3. यीशु ने अपने चेलों को आज्ञा दी कि मन फिराव का प्रचार करें (मरकुस 6:12)।
   4. पिन्तेकुस्त के बाद चेलों ने मन फिराव का प्रचार किया (प्रेरि 2:38 तथा 20:21)।
   5. परमेश्वर की इच्छा है कि सब मन फिराएँ (2 पत 3:9)।
   6. परमेश्वर की मन फिराव की आज्ञा न मानने का परिणाम अनन्त विनाश होगा (लूका 13:3)।
3. मन फिराव के परिणाम:
   1. सारा स्वर्ग आनन्दित होता है (लूका 15:7,10)।
   2. यह छुटकारा और पापों की क्षमा लाता है (यशा 55:7; प्रेरि 3:19)।
   3. मन फिराने वाले पर पवित्र आत्मा उँड़ेला जाता है (प्रेरि 2:38)।

अभ्यास-कार्य - ऊपर दिए गए किसी एक सन्दर्भ को लेकर मन फिराव पर संदेश की रूपरेखा तैयार कीजिए।

## पाठ 20 - विश्वास

विश्वास मसीही धर्म तथा व्यवहार का मूल सिद्धान्त है, क्योंकि विश्वास से हमारा उद्धार हुआ है (इफि 2:8)। जब यीशु मसीह लोगों से बातचीत करता और उन्हें चंगा किया करता था, तो वह हर एक में विश्वास के विशेष गुणों को खोजता था। क्या आपको ये घटनाएँ याद हैं?

1. सूरूफिनीकी स्त्री का विश्वास आग्रहशील था (मरकुस 7:26)।
2. सूबेदार ने नम्र विश्वास का प्रदर्शन किया था (मत्ती 8:8-10)।
3. अन्धे व्यक्ति ने उत्साही विश्वास दिखाया (मरकुस 10:51)।

1. विश्वास की परिभाषा

   क.. विश्वास अंगीकार, भरोसा, (तथ्य के प्रति) अटूट दृढ़ता और निष्ठा है

(इब्रा 11:1)। जो विश्वास उद्धार दिलाता है वह प्रभु यीशु मसीह में व्यक्तिगत भरोसा रखना है।

ख. उद्धार से संबंधित विश्वास के दो प्रकार हैं:

- बौद्धिक विश्वास – ऐतिहासिक मसीह की जानकारी तथा बाइबल को सामान्य रूप से स्वीकार करना।
- हृदय का विश्वास – हृदय से किया गया विश्वास जो मनुष्य से उसके विश्वास के अनुसार कार्य करवाता है। मसीह में सच्चा विश्वास करने का अर्थ उसे ग्रहण कर लेने की सीमा तक विश्वास करना है (यूहन्ना 1:12; कुलु 2:6)। मात्र ज्ञान या सहमति सच्चा विश्वास नहीं है; सच्चे विश्वास में ज्ञान का उपयोग करना सम्मिलित होता है (याकूब 2:26)।

2. विश्वास के कुछ परिणाम
   1. हम विश्वास के द्वारा बचाए गए हैं (उत्प 15:6; रोमि 5:1; गल 3:26)।
   2. हम विश्वास के द्वारा पवित्र किए गए हैं (प्रेरि 26:18)।
   3. विश्वास के द्वारा आराम, शान्ति, आश्वासन और आनन्द आता है (यशा 26:3; फिलि 4:6; इब्रा 4:1-3; 1 पत 1:5)।
   4. विश्वास के द्वारा हम परमेश्वर के लिए बड़े-बड़े काम करते हैं (इब्रा 11:32-40; मत्ति 21:21; यूहन्ना 14:12)।

चर्चा - बौद्धिक तथा हृदय से किए गए विश्वास के वे उदाहरण दीजिए जो आपने देखे हैं।

## पाठ 21 - पुनरुज्जीवन या नया जन्म

ऊपर से जन्म अर्थात् नया जन्म लेने के सिवाय मसीही बनने के लिए और कोई दूसरा मार्ग नहीं है।

1. पुनरुज्जीवन (नया जन्म) क्या है?
   1. पुनरुज्जीवन बपतिस्मा नहीं है। बपतिस्मा कलीसियाई संस्कार है जो यह दिखाता है कि वह व्यक्ति पहले ही नया जन्म पा लिया है।
   2. यह धर्म-सुधार नहीं है। धर्म-सुधार कुछ पापों से फिर जाने वाला मानवीय कार्य है, जब कि पुनरुज्जीवन आत्मिक सचेतना (प्राण डालना), आत्मिक क्रान्ति और परमेश्वर का अलौकिक कार्य है।
   3. पुनरुज्जीवन आत्मिक सचेतना (प्राण डालना), नया जन्म, नयी सृष्टि है (2 कुरि 5:17; इफि 2:1)।

2. पुनरुज्जीवन (नया जन्म) की आवश्यकता
    1. प्रत्येक को नया जन्म लेना अवश्य है–इसमें कोई अपवाद नहीं है (यूहन्ना 3:3-7; गल 6:15)।
    2. मनुष्य की पापमय स्थिति इसकी माँग करती है (यूहन्ना 3:6; यिर्म 13:23; रोमि 7:18; 8:8)।
    3. परमेश्वर की पवित्रता इसकी माँग करती है (इब्रा 12:14)।
3. पुनरुज्जीवन (नया जन्म) के साधन
    1. पुनरुज्जीवन ईश्वरीय कार्य है (यूहन्ना 1:13; तीतुस 3:5; यूहन्ना 3:5)। यह सर्वथा और पूर्ण रीति से परमेश्वर का कार्य है।
    2. पुनरुज्जीवन में मानवीय कार्य भी आवश्यक होता है। यूहन्ना 1:12,13 ये वचन इन दोनों कार्यों को अर्थात् ईश्वरीय कार्य तथा मानवीय कार्य को पुनरुज्जीवन में एक साथ लाते हैं, "जितनों ने उसे ग्रहण किया . . . वे . . . परमेश्वर से उत्पन्न हुए हैं।"

उपसंहार - मनुष्य, सुसमाचार के संदेश को ग्रहण करने के द्वारा (1 कुरि 4:15; याकूब 1:18; 1 पत 1:23) तथा व्यक्तिगत रूप से यीशु मसीह को ग्रहण करने के द्वारा (यूहन्ना 1:12,13 तथा गल 3:26) नया जन्म पाता है।

## पाठ 22 - धर्मी ठहराया जाना

1. धर्मी ठहराए जाने का अर्थ

    यह परमेश्वर के समक्ष मनुष्य के संबंध या स्थिति में परिवर्तन है। नया जन्म का संबंध विश्वासी के स्वभाव में परिवर्तन से है, धर्मी ठहराया जाने का संबंध परमेश्वर के समक्ष व्यक्ति की स्थिति (पद) में होने वाले परिवर्तन से है। यह क्षमा से बढ़कर है, धर्मी ठहराया जाने का अर्थ धर्मी घोषित करना है।

    धर्मी ठहराया जाना परमेश्वर का न्यायसंबंधी कार्य है, जिसके द्वारा वे लोग जो मसीह यीशु पर विश्वास करते हैं वे उसकी दृष्टि में धर्मी, और दोष तथा पाप से मुक्त घोषित किए जाते हैं।

2. धर्मी ठहराए जाने के दो तत्व है
    1. पाप की क्षमा और उसके सारे दोष तथा दण्ड का हटाया जाना (मीका 7:18,19; प्रेरि 13:38; रोमि 8:1,33,34)।
    2. मसीह की धार्मिकता का दिया जाना तथा परमेश्वर के अनुग्रह में वापस लाया जाना (2 इति 20:7; याकूब 2:23; रोमि 5:17-21)।

३. धर्मी ठहराए जाने की विधि

1. नकारात्मक रूप से: व्यवस्था के कामों के द्वारा नहीं (रोमि 3:20,28; गल 2:16 तथा 3:10)।
2. सकारात्मक रूप से: परमेश्वर के मुफ्त अनुग्रह द्वारा (रोमि 3:24)।
3. यीशु मसीह के लहू के द्वारा - धर्मी ठहराए जाने का अनुग्रह (रोमि 3:24; 5:9; 2 कुरि 5:21; इब्रा 9:22)।
4. यीशु मसीह में विश्वास करने के द्वारा–धर्मी ठहराए जाने की शर्त (गल 2:16; रोमि 3:26; गल 3:10; प्रेरि 13:39)।

चर्चा - धर्मी ठहराया जाना क्षमा से कैसे भिन्न है?

## पाठ 23 - दत्तक-ग्रहण (लेपालकपन)

1. दत्तक-ग्रहण का अर्थ -

"दत्तक-ग्रहण" का अर्थ "पुत्र का स्थान देना" है। यह रोमी लोगों के द्वारा उपयोग किया जाने वाला एक वैधानिक शब्द है। इसका अर्थ एक मनुष्य का दूसरे मनुष्य के पुत्र को अपना पुत्र बनाने के लिए ले लेना है ताकि उस पुत्र का वही पद और वे सारे लाभ हो जो एक पुत्र को जन्म से प्राप्त होते हैं। गल 4:5; रोमि 8:15,23; 9:4 और इफि 1:5 देखिए।

निर्गमन 2:10 तथा इब्रानियों 11:24 दत्तक-ग्रहण के पवित्र शास्त्र संबंधी अर्थ तथा उसके उपयोग के दो अनूठे उदाहरण देते हैं।

2. दत्तक-ग्रहण की कुछ आशीषें -
   - पाप की हम परमेश्वर के विशिष्ट प्रेम (यूहन्ना 17:23) तथा उसके पिता-समान देखभाल के (लूका 12:27-33) पात्र हैं।
   - हमारे पास परिवार का नाम (1 यूहन्ना 3:1; इफि 3:14,15), पारिवारिक समानता (रोमि 8:29), परिवार का प्रेम (यूहन्ना 13:35; 1 यूहन्ना 3:14), एक संतान-योग्य (पुत्र-सुलभ) आत्मा (रोमि 8:15; गल 4:6) तथा एक पारिवारिक सेवा (यूहन्ना 14:23,24; 15:8) है।
   - हमें पिता से मिलने वाली ताड़ना (इब्रा 12:5-11), पिता से मिलने वाली शान्ति (यशा 66:13; 2 कुरि 1:4) तथा एक विरासत (1 पत 1:3-5; रोमि 8:17) प्राप्त होती है।

3. संतान होने का प्रमाण: जो परमेश्वर के परिवार में दत्तक-ग्रहण किए गए हैं:
- वे आत्मा के द्वारा चलाए चलते हैं (रोमि 8:4; गल 5:18)।
- उनका परमेश्वर में बालक-सा सरल भरोसा होता है (गल 4:5,6)।
- उन्हें परमेश्वर के पास जाने का अधिकार है (इफि 3:12)।
- भाइयों के लिए उनमें प्रेम होता है (1 यूहन्ना 2:9-11; 5:2)
- वे आज्ञाकारी होते हैं (1 यूहन्ना 5:1-3)।

चर्चा – परमेश्वर की संतान होने तथा परमेश्वर का सेवक होने में क्या भिन्नताएँ हैं?

## पाठ 24 – पवित्रीकरण

पवित्रीकरण का संबंध हमारे चरित्र और व्यवहार से है। धर्मी ठहराया जाना वह कार्य है जो परमेश्वर हमारे लिए करता है, जब कि पवित्रीकरण वह कार्य है जो परमेश्वर हमारे भीतर करता है।

1. पवित्रीकरण का अर्थ –

इस परिभाषा में दो विचार हैं–

1. पाप से अलगाव (2 इति 29:5; 15–18; 1 थिस्स 4:3)। पवित्रीकरण का संबंध उन सब बातों से दूर हो जाने से है जो पापमय हैं तथा आत्मा एवं देह को अपवित्र करती हैं।
2. परमेश्वर के प्रति समर्पण (लैव्य 27:14,16; गिनती 8:17; यूहन्ना 10:36)। जो कुछ मात्र परमेश्वर की सेवा के लिए समर्पित कर दिया गया है वह पवित्र किया गया है।
3. वह परमेश्वर के द्वारा उपयोग में लाया जाता है (यहेज 36:23)।

2. पवित्रीकरण का समय –

पवित्रीकरण को तीन रूप में देखा जा सकता है: भूत, वर्तमान तथा भविष्य; या तत्काल होने वाला, क्रमशः होने वाला तथा जो पूर्ण हो चुका है।

1. तत्काल होने वाला (1 कुरि 6:11; इब्रा 10:10,14) – मसीह में विश्वास करने के एक सरल कार्य के द्वारा विश्वासी तत्काल पवित्रीकरण की अवस्था में रखा जाता है।
2. क्रमशः होने वाला (2 पत 3:18; 2 कुरि 3:18; 1 थिस्स 3:12) – हम चरित्र या महिमा की एक श्रेणी से दूसरी श्रेणी में (अंश-अंश करके) रूपान्तरित होते जा रहे हैं।
3. पूर्ण तथा अन्तिम पवित्रीकरण (1 थिस्स 5:23; 3:13)।

3. पवित्रीकरण के साधन

इसके साधन ईश्वरीय तथा मानवीय दोनो हैं:

परमेश्वर तथा मानव दोनों इच्छित उद्देश्य की ओर सहयोग देते हैं।

1. ईश्वरीय पक्ष की ओर से यह त्रिएक परमेश्वर का कार्य है:
   - परमेश्वर पिता (1 थिस्स 5:23,24; यूहन्ना 17:17)।
   - पुत्र यीशु मसीह (इब्रा 10:10; इफि 5:25, 27; 1 कुरि 1:30)।
   - पवित्र आत्मा (1 पत 1:2; 2 थिस्स 2:13)।

2. मानव पक्ष की ओर से:

- यीशु मसीह के छुटकारे के कार्य में विश्वास (1 कुरि 1:30)। यहाँ पवित्र जीवन का रहस्य मिलता है–प्रति क्षण यीशु मसीह को उसके अनुग्रह के संपूर्ण धन में प्रत्येक आवश्यकता के लिए, जैसे-जैसे वह सामने आती है, आत्मसात करना।
- पवित्र शास्त्र का अध्ययन और उसके प्रति आज्ञाकारिता (यूहन्ना 17:17; इफि 5:26,27; यूहन्ना 15:3)।

चर्चा - पवित्रीकरण में समय के तत्वों की चर्चा कीजिए, प्रत्येक अवस्था कब होती है?

## पाठ 25 - प्रार्थना

मसीह जीवन बिना प्रार्थना के बना नहीं रह सकता; यह मसीही जन की जीवनदायक श्वास है।

1. प्रार्थना का महत्व
    1. प्रार्थना की उपेक्षा प्रभु के लिए अति दु:खदायी है (यशा 43:21,22; 64:6,7)।
    2. प्रार्थना की कमी से अनेक बुराइयाँ आती हैं (सप 1:4-6; दानि 9:13-14)।
    3. प्रार्थना की उपेक्षा करना पाप है (1 शमू 12:23)।
    4. प्रार्थना में बने रहना एक सकारात्मक आज्ञा है (कुलु 4:2; 1 थिस्स 5:17)।
    5. प्रार्थना, परमेश्वर की ओर से हमारे लिए उसके वरदानों को पाने का तरीका है (दानि 9:3; मत्ती 7:17-11; 9:24-29; लूका 11:13)।
    6. प्रेरितों ने प्रार्थना को अपनी सबसे महत्वपूर्ण गतिविधि माना था (प्रेरितों 6:4; रोमि 1:9)।
2. प्रार्थना कैसे करें -

प्रार्थना के कम-से-कम 4 भाग होने चाहिए। अंग्रेजी शब्द ACTS याद रखिए।

1. प्रशंसा करना (Adoration) - परमेश्वर की स्तुति और आराधना करना (भजन 95:6)।
2. पाप-अंगीकार करना (Confession) - प्रत्येक ज्ञात पाप से पश्चात्ताप करना (भजन 32:5)।
3. धन्यवाद करना (Thanksgiving) - (फिलि 4:6)।
4. बिनती करना (Suplication) - निवेदन, अनुरोध, प्रार्थना करना, अपनी

इच्छा प्रभु के समक्ष रखना (1 तीमु 2:1)।

3. प्रार्थना में बाधाएँ –
   1. अविश्वास (याकूब 1:6,7)।
   2. क्षमा न करने वाला मन (मरकुस 11:25)।
   3. दुष्टता (भजन 66:18)।
   4. गलत माँग (याकूब 4:3)।
4. प्रार्थना की कुछ प्रतिज्ञाएँ–

   मरकुस 11:24; यूहन्ना 15:7; 1 यूहन्ना 5:14-15; इफि 3:12,20; फिली 4:19, 4:6; मत्ती 7:7-8; लूका 11:9-13; इब्रा 4:16 ।

चर्चा – हाल ही में आपने किन-किन प्रार्थनाओं के उत्तर प्राप्त किए हैं? अब आप किस बात के लिए प्रार्थना कर रहे हैं?

# भाग 6 – कलीसिया का सिद्धान्त

## पाठ 26 – कलीसिया की परिभाषा तथा स्थापना

परमेश्वर का इस युग में सर्वोच्च कार्य कलीसिया को एकत्रित करना है।

कलीसिया की परिभाषा

1. मसीही कलीसिया नया नियम की संस्था है जो पिन्तेकुस्त से आरम्भ हुई और सम्भवत: मसीह के द्वितीय आगमन, कलीसिया के उठाए जाने के साथ समाप्त होगी।
2. "कलीसिया" शब्द, यूनानी शब्द "इक्लेसिया" से आता है, जिसका अर्थ "से बाहर बुलाया गये लोगों का समूह" होता है। मसीही लोग 'संसार की व्यवस्था से' बाहर बुलाए गए हैं कि वे "मसीह में" हो (1 कुरि 1:2)।
3. कलीसिया शब्द का अर्थ विश्वासियों का एक स्थानीय समूह हो सकता है (कुलु 4:15)।
4. इसका अर्थ विश्वव्यापी कलीसिया भी हो सकता है (1 कुरि 15:9)। यह शब्द हर जगह के सारे मसीहियों को सम्मिलित करता है।
5. दृश्य कलीसिया में वे सारे लोग हैं जिनके नाम स्थानीय कलीसिया की सूची में हैं, चाहे वे उद्धार पाए हों या नहीं।

   अदृश्य कलीसिया उनसे बनी है जिनके नाम मेमने की जीवन की पुस्तक में लिखे हैं (प्रका 21:27)।
6. विजयी कलीसिया से कलीसिया के ऐसे भाग की ओर संकेत है जो पहले ही से स्वर्ग में है।

कलीसिया की स्थापना

1. कलीसिया यीशु मसीह के द्वारा, पतरस के द्वारा स्वीकार की गई इस सच्चाई पर स्थापित की गई कि यीशु परमेश्वर का पुत्र, मसीह था–और है, (मत्ती 16:16-18)। हमारे उद्धारकर्त्ता ने कलीसिया की स्थापना पतरस पर नहीं परन्तु पतरस के शब्दों में घोषित किए गए सत्य पर की थी।
2. ऐतिहासिक रूप से, कलीसिया पिन्तेकुस्त के दिन स्थापित हुई जब पवित्र आत्मा उतरा (प्रेरितो के काम 2)। प्रेरितों के काम 2:47; 1:13; 5:12; 2:46 और 12:12 देखिए।

चर्चा - कलीसिया की सदस्यता के बारे में कौनसी गलतियां अक्सर की जाती हैं?

## पाठ 27 - कलीसिया में सदस्यता तथा कलीसिया का अभिप्राय

1. कलीसिया में सदस्यता की शर्तें
    1. मन फिराव (प्रेरि 2:38)।
    2. यीशु पर विश्वास कि वह उद्धारकर्त्ता, प्रभु तथा परमेश्वर का पुत्र है (मत्ती 16:16-18)।
    3. उद्धार, पुनरुज्जीवन, नया जन्म (प्रेरि 2:47)।
    4. त्रिएक परमेश्वर के नाम में बपतिस्मा (प्रेरि 2:38)।
    5. प्रेरितों के सिद्धान्त में स्थिर रहना (प्रेरि 2:42)।
2. कलीसिया का अभिप्राय
    1. पृथ्वी पर मसीह की आराधना और महिमा करना (इफि 1:4-6)।
    2. संसार में सुसमाचार का प्रचार करना (मत्ती 28:19,20; मरकुस 16:15)।
    3. मसीहियों को शिक्षा तथा निर्देश देना (इफि 4:11-15; 1 थिस्स 5:11; 1 कुरि 12:1-31)।
    4. निरन्तर यीशु की गवाही देना (प्रेरि 1:8)।

चर्चा - साधारणत:, कलीसिया की सदस्यता संबंधी कौन-सी गलतियाँ की जाती हैं?

## पाठ 28 - कलीसिया के प्रतीक तथा कलीसिया की धर्मविधियाँ

1. कलीसिया के बाइबल पर आधारित प्रतीक
    1. देह - मसीह सिर है और हम उसकी देह के अंग हैं (कुलु 1:18; 2:19; इफि 1:22-23)।
    2. परमेश्वर के आत्मा के लिए मन्दिर, इमारत या निवासस्थान – मसीह कोने का प्रमुख पत्थर है और हम उस इमारत के विभिन्न भाग हैं (इफि 2:20,21)।
    3. मसीह की दुल्हन - (2 कुरि 11:2) मसीह दूल्हा है (यूहन्ना 3:29)। प्रकाशितवाक्य 19:7,8 में विवाह का उल्लेख है।
2. कलीसिया की धर्मविधियाँ

दो धर्मविधियाँ हैं:

1. बपतिस्मा (मत्ती 28:19-20; मरकुस 16:16; प्रेरि 2:38-41; 8:36-40; 10:47-48)।
2. प्रभु भोज (प्रेरि 2:42-46; 20:7; 1 कुरि 11:20-34)।

चर्चा - ऊपर दिए गए कलीसिया के प्रतीकों के अनुसार कलीसिया का सदस्य होने का अर्थ समझाइए।

# भाग 7 - पवित्र शास्त्र का सिद्धान्त

## पाठ 29 - बाइबल की प्रेरणा

1. बाइबल के विषय में कुछ तथ्य
    1. बाइबल 66 पुस्तकों का ग्रंथालय है; पुराना नियम में 39 तथा नया नियम में 27 पुस्तकें हैं।
    2. यह 1600 वर्षों के समय में, विश्व के विभिन्न स्थानों के विभिन्न प्रकार के लोगों में से 36 से 40 लेखकों द्वारा लिखी गई थी।
    3. पुराना नियम मूलत: इब्रानी भाषा में लिखा गया था जिसमें दानिय्येल तथा एज्रा की पुस्तकों के कुछ भाग अरामी भाषा में थे। नया नियम यूनानी भाषा में लिखा गया था।
    4. पंचग्रंथ अस्तित्व में सबसे पुरानी पुस्तक है। (बाइबल की प्रथम पांच पुस्तकों को पंचग्रंथ कहते हैं।)

5. संपूर्ण बाइबल को लिखने में 16 शताब्दियाँ लगीं; अन्तिम लेखक के पैदा होने से 1450 वर्ष पहले प्रथम लेखक की मृत्यु हो गई थी।

2. प्रेरणा का अर्थ
   1. प्रेरणा के लिये यूनानी भाषा में 'थियोप्न्यूस्टोस' शब्द का प्रयोग हुआ है जिसका अर्थ 'परमेश्वर ने श्वास फूँका' ऐसा है। थिओ = परमेश्वर, प्न्यूस्टोस = श्वास फूँका (2 तीमु 3:16)।
   2. परमेश्वर के पवित्र लोगों ने, जिन पर पवित्र आत्मा छाया था, परमेश्वर की आज्ञा पर इसे लिखा और वे समस्त त्रुटियों से बचाए गए।
3. बाइबल प्रेरणा का दावा करती है
   1. अपने लेखकों के लिए (2 पत 1:21)।
   2. अपने लिखित पाठ के लिए (2 तीमु 3:16)।
   3. अपने शब्दों के लिए (1 कुरि 2:13; 2 पत 3:2)।

चर्चा - आपको बाइबल की अनोखी विशेषताओं में से कौन-सी सबसे अधिक प्रभावित करती हैं?

## पाठ 30 - बाइबल के विषय में दो प्रकार की सात बातें

पहली बात: बाइबल के सात सर्वोच्च आश्चर्य

1. इसकी संरचना का आश्चर्य: एक पुस्तक एक स्थान पर एक भाषा में लिखी गई, दूसरी पुस्तक दूसरे देश में सदियों बाद दूसरी भाषा में लिखी गई।
2. इसकी एकता का आश्चर्य: यह 66 पुस्तकों का ग्रंथालय है, फिर भी वह एक ही पुस्तक है, क्योंकि इसका एक ही लेखक है–पवित्र आत्मा। इसमें विरोधाभास नहीं है।
3. इसकी आयु का आश्चर्य: यह सारी पुस्तक में सबसे प्राचीन है।
4. इसकी बिक्री का आश्चर्य: यह सभी समयों में सबसे ज्यादा बिकने वाली पुस्तक है।
5. इसकी रुचि का आश्चर्य: मात्र यही एक पुस्तक है जो सारे राष्ट्रों में, मानवजाति के हर आयु के लोगों द्वारा–ज्ञानियों और बालकों द्वारा–पढ़ी जाती है।
6. इसकी भाषा का आश्चर्य: अधिकतर अशिक्षित लोगों के द्वारा लिखी गई यह पुस्तक साहित्य की एक श्रेष्ठ रचना मानी जाती है।
7. इसके सुरक्षित रहने का आश्चर्य: बार-बार राजाओं और सरकारों ने इसे

जला देने और मिटा देने के प्रयास किए हैं। फिर भी परमेश्वर ने आज इसे हमारे लिए सुरक्षित रखा है और यह लगभग प्रत्येक घर में पाई जाती है।

दूसरी बात: परमेश्वर के वचन को स्पष्ट करने हेतु उपयोग में लाए गए सात प्रतीक–

1. तलवार, जो सुनने वाले को कायल करती है (इब्रा 4:12)।
2. हथौड़ा, जो सुनने वाले के विरोध को तोड़ता है (यिर्म 23:29)।
3. बीज, जीवित वचन जो विश्वासी को जन्म देता है (1 पत 1:23,25)।
4. दर्पण, जो व्यक्ति पर उसकी अपनी वास्तविकता प्रकट करता है (याकूब 1:23,25)।
5. आग, जो सुनने वाले के भीतर के मैल को भस्म करती है (यिर्म 20:9; 23:29)।
6. दीपक, जो विश्वासी का दिन-प्रतिदिन मार्गदर्शन करता है (भजन 119:105)।
7. भोजन, जो आत्मा का पोषण करता है (1 पत 2:2; 1 कुरि 3:2; रोमि 10:17)।

अभ्यास-कार्य - परमेश्वर के वचन के किसी एक प्रतीक का प्रयोग करते हुए एक वस्तुपाठ तैयार कीजिए।

## पाठ 31 - परमेश्वर के वचन का प्रचार क्यों करें?

1. पाप के लिए दोषी ठहराया जाना परमेश्वर के वचन के प्रचार से संभव होता है (प्रेरि 2:14-37)। पतरस के पिन्तेकुस के उपदेश में 23 में से 9 पद पुराना नियम से लिए गए उद्धरण हैं।
2. परमेश्वर के वचन को सुनने से विश्वास होता है (रोमि 10:17)।
3. परमेश्वर का वचन शुद्ध करने का कार्य करता है (2 कुरि 7:1)। प्रतिज्ञाएँ परमेश्वर के वचन हैं।
4. परमेश्वर के वचन से आश्वासन मिलता है (1 यूहन्ना 5:13)।
5. परमेश्वर के वचन से शान्ति मिलती है (1 थिस्स 4:18–इस वचन में "बातों" का अर्थ बाइबल में लिखित वचन हैं)।
6. परमेश्वर के वचन से सत्य का ज्ञान होता है (प्रेरि 17:11)।
7. परमेश्वर के वचन से नया जन्म प्राप्त होता है (1 पत 1:23)।

उपसंहार- मसीह तथा पवित्र आत्मा के बाद, बाइबल परमेश्वर का संसार को दिया गया तीसरा सबसे बड़ा उपहार है।

# भाग 8 - आत्मिक जीवधारियों का सिद्धान्त

## पाठ 32 - बाइबल स्वर्गदूतों के विषय में क्या कहती है

1. स्वर्गदूतों का अस्तित्व
    1. "स्वर्गदूत" शब्द पहली बार उत्पत्ति 16:7 में आया है। यहोवा के दूत ने हाजिरा की सेवा की जब सारा ने उसके साथ दुर्व्यवहार किया।
    2. पुराना नियम में स्वर्गदूतों के लिए और भी अनेक सन्दर्भ हैं (भजन 103:20; 104:4; दानि 10:12-13; 2 शमू 14:20; 24:15,16; 2 राजा 19:35)।
    3. यीशु स्वर्गदूतों के अस्तित्व में विश्वास करता था (मत्ती 18:10; मरकुस 13:32; 8:38; मत्ती 13:41 तथा 26:53)।
    4. पौलुस तथा अन्य प्रेरित स्वर्गदूतों के अस्तित्व में विश्वास करते थे (2 थिस्स 1:17; कुलु 2:18; यूहन्ना 1:51; प्रका 12:7, 22:9; 1 पत 3:22; 2 पत 2:11; यहूदा 9)।
2. स्वर्गदूतों का स्वभाव
    1. वे सृजे गए हैं; वे मृतकों की आत्माएँ नहीं हैं (कुलु 1:16)।
    2. वे आत्माएँ हैं (भजन 104:4); परन्तु कभी-कभी दृश्य रूप से प्रकट हुए हैं (उत्प 19; न्यायि 2:1; 6:11-22; मत्ती 1:20; यूहन्ना 20:12)।
    3. वे सामर्थी हैं (भजन 103:20; 2 राजा 19:35; 2 शमू 24:15,16)।
    4. वे अमर हैं (लूका 20:35,36)।
    5. वे असंख्य हैं (प्रका 5:11; इब्रा 12:22; मत्ती 26:53)।
    6. वे गीत गाते हैं और परमेश्वर की स्तुति करते है: सृष्टि की रचना के समय (अय्यूब 38:6,7); सृष्टिकर्ता के इस जगत में जन्म लेने के अवसर पर (लूका 2:13,14); और वे तब भी गीत गायेंगे जब सृष्टि का समापन हो रहा होगा (प्रका 5:11-12)।
3. स्वर्गदूतों का पतन

मूल रूप से सारे स्वर्गदूत अच्छे सिरजे गए थे, परन्तु कुछ भ्रष्ट हो गए (2 पत 2:4; यहूदा 6)। हम उनके पतन का कारण नहीं जानते। सम्भवत: वह घमंड और अनाज्ञाकारिता था, अर्थात् वही पाप जो शैतान के पतन का कारण था (यहेज 28; यशायाह 14:12)।

अभ्यास-कार्य - शैतान के पतन से संबंधित पदों का अध्ययन कीजिए तथा उसके कारणों की चर्चा कीजिए।

# पाठ 33 - स्वर्गदूतों के काम

1. उन पतित दूतों का काम और अन्तिम फल जो अभी स्वतन्त्र हैं
    1. वे परमेश्वर के उद्देश्यों का विरोध करते हैं (दानि 10:10-14)।
    2. वे परमेश्वर के लोगों को दु:ख पहुँचाते हैं (लूका 13:16; मत्ती 17:15-18)।
    3. वे शैतान के उद्देश्यों को पूरा करते हैं (मत्ती 25:41; 12:26-27)।
    4. वे परमेश्वर के लोगों के आत्मिक जीवन में बाधा पहुँचाते हैं (इफि 6:12)।
    5. वे परमेश्वर के लोगों को धोखा देने का प्रयास करते हैं (1 शमू 28:7-20)।
    6. उनके छुटकारे की कोई आशा नहीं है (यहूदा 6; 2 पत 2:4; मत्ती 25:41)। उनका अन्तिम विनाश अनन्त आग में होगा (यहूदा 6; 2 पतरस 2:4; मत्ती 25:41)।
2. परमेश्वर के विश्वासयोग्य स्वर्गदूतों का कार्य
    1. स्वर्ग में - प्रभु परमेश्वर की महिमा करना, आराधना करना तथा उसकी सेवा करना (प्रका 5:11-12; 8:3,4)।
    2. पृथ्वी पर - परमेश्वर के द्वारा सौंपे गए कार्य करना - जैसेकि: हाजिरा को झरना दिखाना; तलवार खींचकर यहोशू के सामने प्रकट होना; पतरस को जंजीरों से मुक्त करना; बन्दीगृह के दरवाजे खोलना; परमेश्वर के लोगों को भोजन खिलाना, उन्हे सामर्थ देना तथा उनकी रक्षा करना, इत्यादि।
    3. परमेश्वर का न्याय तथा उसके उद्देश्यों को में लाना (गिनती 22:22; प्रेरि 12:23; मत्ती 13:41)।
    4. विश्वासियों की अगुवाई करना (प्रेरि 8:26)।
    5. संतों को सहायता, सुरक्षा और सामर्थ प्रदान करना। उदा.- एलियाह को (1 राजा 19); दानिय्येल को सिंहों की मांद में (दानि 6:22); यीशु को (मत्ती 4:11; लूका 22:43)।
    6. वे परमेश्वर की संतानों की मृत्यु के समय उन्हें स्वर्ग ले जाते हैं (लूका 16:22)।
    7. जब हमारा प्रभु वापिस आएगा तब उसके साथ स्वर्गदूत भी आएँगे (मत्ती 25:31; 1 थिस्स 1:7,8)।

चर्चा- क्या आपने अपने जीवन में स्वर्गदूतों की सहायता का अनुभव किया है?

# पाठ 34 - शैतान, परमेश्वर और मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु

1. शैतान का आरम्भ
    1. शैतान का वर्णन यहेजकेल 28:12-19 में किया गया है। वह सुंदरता में श्रेष्ठ था, संभवत: प्रधान स्वर्गदूत था। फिर उसके घमंड के कारण उसमें पाप और दुष्टता समा गई और उसे स्वर्ग से निकाल दिया गया।
    2. उसका वर्णन यशायाह 14:12-17 में भी किया गया है। वह लूसिफर अर्थात् भोर का पुत्र कहलाता था। उसके घमंड ने उसमें सर्वोच्च महान परमेश्वर के तुल्य होने की इच्छा भर दी, इसलिए उसे बाहर निकाल दिया गया।
    3. शैतान एक वास्तविक जीव है जिसमें जीवन बुद्धि, इच्छा शक्ति तथा भावनाएँ हैं।
2. शैतान का चरित्र
    1. वह चोर है, हृदय से परमेश्वर के वचन को चुराता है (मत्ती 13:19)।
    2. वह चतुर है (2 कुरि 11:3)।
    3. वह हत्यारा है (यूहन्ना 8:44)।
    4. वह झूठा है (यूहन्ना 8:44)।
    5. वह भरमाने वाला है (प्रका 12:9)।
    6. उसे हराया गया है (लूका 10:18)।

चर्चा - क्या आप को लगता हैं कि शैतान इन दिनों में संसार में अधिक सक्रिय हो रहा है? यदि ऐसा है तो आपके विचार से ऐसा क्यों है?

# पाठ 35 - शैतान, पराजित शत्रु

1. शैतान के शीर्षक
    1. ज्योतिर्मय स्वर्गदूत (2 कुरि 11:14)।
    2. गरजने वाला सिंह (1 पत 5:8)।
    3. आकाश के अधिकार का हाकिम (इफि 2:2)।
    4. अन्धकार की शक्ति (कुलु 1:13)।
    5. बड़ा अजगर, पुराना साँप, इबलीस, शैतान (प्रका 12:9)।
    6. इस संसार का सरदार (यूहन्ना 14:30)।
    7. इस संसार का ईश्वर (2 कुरि 4:4)।
    8. अथाह कुण्ड का दूत, जिसका नाम इब्रानी में अबद्दोन है (प्रका 9:11)।

2. शैतान का प्रतिफल
    1. जहाँ तक मसीही विश्वासी की बात है, उस शत्रु पर विजय पा ली गई है (यूहन्ना 12:31; 16:9,10; 1 यूहन्ना 3:8; कुलु 2:15)।
    2. वह अनन्त शाप के अधीन है (उत्प 3:14; यशा 65:25)।
    3. वह आग की झील में जीवित डाला जाएगा ताकि वहाँ युगानुयुग पीड़ा में रहे (मत्ती 25:41; प्रका 20:10)।

उपसंहार - शैतान शक्तिमान है परन्तु परमेश्वर सर्वशक्तिमान है। शैतान कलवरी पर हमेशा के लिए पराजित कर दिया गया। आइए हम कलवरी पर बहाये गये मेम्ने के लहू के द्वारा निरंतर उस पर विजय का दावा करें (प्रका 12:11)।

# भाग 9 - अन्तिम बातों का सिद्धान्त

## पाठ 36 - मसीह का द्वितीय आगमन

बताया जाता है कि मसीह के द्वितीय आगमन का उल्लेख नया नियम के 260 अध्यायों में 318 बार हुआ है; वह प्रत्येक 25 पदों में से एक का विषय है। बाइबल के प्रत्येक 30 पदों में से एक पद इस सिद्धान्त का उल्लेख करता है; प्रभु के प्रथम आगमन जितना उल्लेख है उसके आठ गुना दूसरे आगमन का उल्लेख हुआ है।

1. मसीह के द्वितीय आगमन के बारे में बाइबल क्या कहती है:
    1. वह दिन वैसे आयेगा जैसे रात में चोर आता है (1 थिस्स 5:2)।
    2. मसीह तब आयेगा जब वह अपेक्षित नहीं है (मत्ती 24:44)।
    3. वह बादलों पर आयेगा और हर एक आंख उसे देखेंगी (प्रका 1:7)।
    4. वह ललकार और तुरही के बड़े नाद के साथ आयेगा, और विश्वासी जो कब्र में मरे हुये हैं वे पहले जी उठेंगे, फिर वे जो जीवित हैं वे उनके साथ उठा लिये जायेंगे और हवा में मसीह से मिलेंगे (1 थिस्स 4:16-17)
    5. कुछ हैं जो समझते हैं कि मसीह यीशु का आगमन दो अलग-अलग घटनाओं में होगा। एक वह जो 1 थिस्सलुनीकियों 4:16-17 में बताई गई है वह मात्र विश्वासियों के लिये होगी और जो प्रकाशिवाक्य 1:7 में बताई गयी है वह क्लेश के सात वर्षों के बाद होगी जिसके तुरंत बाद अंतिम न्याय होगा।
    6. अंत तब आयेगा जब सुसमाचार सारी जातियों में प्रचार किया जायेगा (मत्ती 24:14)।

2. उसके आगमन के चिन्ह

1. दूसरा तीमुथियुस 3:1-7 में उसके आगमन के 23 चिन्ह दिए गए हैं जिनमें से अनेक आज प्रकट हैं। मत्ती 24:5-7 तथा 12-38 में दस चिन्ह दिए गए हैं।
2. हमें ऐसी योजना बनानी और कार्य करने चाहिए जैसे कि यीशु अगले सौ वर्षों तक नहीं आ रहा है, परन्तु ऐसा पवित्र और शुद्ध जीवन जीना चाहिए जैसे कि वह आज ही आने वाला है (1 थिस्स 3:12,13)।
3. बाइबल की अन्तिम प्रार्थना है, "हे प्रभु यीशु आ" (प्रका 22:20)।

चर्चा - "उसके आगमन के चिन्ह" के अन्तर्गत दिए गए बाइबल सन्दर्भों में जो चिन्ह हैं उनमें से कौन-सी परिस्थितियाँ आज विद्यमान हैं?

## पाठ 37 - मृतकों का पुनरुत्थान

1. यह सिद्धान्त पवित्र शास्त्र में स्पष्ट रूप से सिखाया गया है।
   1. पुराना नियम में -
      - अय्यूब 19:25-27; भजन 16:9; 17:15; दानि 12:1-3
      - 1 राजा 17; 2 राजा 4:32-35 तथा 13:21 में वास्तविक पुनरुत्थान का वर्णन है।
   2. नया नियम में -
      - यीशु की शिक्षा में - यूहन्ना 5:28-29; 6:39, 40, 44, 54; लूका 14:13-14; 20:35-36
      - प्रेरितों की शिक्षा में - प्रेरि 24:15; 1 कुरि 15; 1 थिस्स 4:14-16; फिलि 3:11; प्रका 20:4-6,13
2. पुनरुत्थित देह का रूप
   1. विश्वासी की पुनरुत्थित देह - 1 कुरि 15 देखिए।
      - ''माँस तथा लहू'' की भौतिक देह नहीं - 1 कुरिं 15:50
      - भूत या आत्मा नहीं (लूका 24:39)।
      - अविनाशी (1 कुरिं 15:42)। उसमें सड़न, बीमारी, पीड़ा नहीं होगी।
      - महिमामय (1 कुरिं 15:43)। रूपांतरित (मत्ती 17; प्रका. 1:13-17)।
      - सामर्थी (1 कुरिं 15:43)। थकित या दुर्बल नहीं।
      - आत्मिक देह (1 कुरिं 15:44)। आत्मा देह का जीवन होगी।
      - स्वर्गीय देह (1 कुरिं 15:47-49)।
   2. अविश्वासी की पुनरुत्थित देह - पवित्र शास्त्र इस विषय पर कुछ नहीं कहती।

3. पुनरुत्थान का समय

1. धर्मियों का पुनरुत्थान (1 कुरि 15:23; 1 थिस्स 4:14-17) - धर्मियों का पुनरुत्थान यीशु के आगमन से जुड़ा है।
2. दुष्टों का पुनरुत्थान (यूहन्ना 5:28-29; दानि 12:2; प्रका 20:5; 20:12) - दुष्टों का पुनरुत्थान हमेशा न्याय से जोड़ा गया है और वह यहोवा के दिन के अन्त में होगा। प्रका 20:4-6 यह संकेत करता है कि धर्मियों तथा दुष्टों के पुनरुत्थान के बीच कम-से-कम एक हजार वर्ष का अंतराल होगा।

चर्चा - हमारी पुनरुत्थित देह, हमारी आज की देह से किस प्रकार भिन्न होगी?

## पाठ 38 - न्याय

संसार के लिए न्याय का एक दिन निश्चित कर दिया गया है, जिसमें दुष्टों का न्याय होगा तथा धर्मी इनाम पाएँगे (प्रेरि 17:31; इब्रा 9:27)। न्यायाधीश यीशु है, जो क्रूस पर चढ़ा था वही सिंहासन पर विराजमान होगा (यूहन्ना 5:22, 23, 27; 2 तीमु 4:1; 2 कुरि 5:10 प्रेरि 10:42; 17:31)।

चूँकि एक से अधिक पुनरुत्थान हैं, अत: एक से अधिक न्याय भी हैं। नूह के दिनों में जल-प्रलय से तथा बाबुल के गुम्मट पर भाषा में गड़बड़ी से न्याय हुआ था। बाइबल कम-से-कम सात विभिन्न न्याय के विषय में बताती है:

1. न्याय जो क्रूस पर हुआ - विश्वासियों पर की शैतान की सामर्थ को तोड़ा गया तथा विश्वासी के पापों का न्याय हुआ और उन्हें हटा दिया गया (यूहन्ना 5:24, 1 पत 2:24)।
2. विश्वासी का आत्म-निरीक्षण - (1 कुरि 11:31, 32) यह निरंतर तथा लगातार होने वाला है।
3. विश्वासियों का न्याय जो "मसीह के न्याय आसन" के साम्हने होगा (2 कुरि 5:10)। मसीह के दूसरे आगमन के समय, विश्वासी का उसके कामों के लिए न्याय होगा। जो काम अग्नि परीक्षा के बाद बचेंगे उनके लिए पुरस्कार दिया जाएगा (1 कुरि 3:13)।
4. यहूदियों का न्याय जो महाक्लेश के समय होगा (यहेज 20:34-38; यिर्म 33:7; लूका 23:18; प्रेरि 7:51)।
5. अन्यजाति राष्ट्रों का न्याय (मत्ती 25:32)यहोशापात की घाटी में मसीह के दूसरे आगमन के समय होगा (योएल 3:2; मत्ती 25:41 तथा 34)।
6. पतित दूतों का न्याय - 1 कुरि 6:3; यहूदा 6; 2 पत 2:4 ।
7. दुष्ट मृतकों का न्याय - उनका जिन्होंने कभी नया जन्म नहीं पाया, जो

प्रथम पुनरुत्थान में जी नहीं उठे या ऊपर उठाए नहीं गए (प्रका 20:12)। यह 'बड़े श्वेत सिंहासन' के सामने (प्रका 20:11), हजार वर्ष के काल के बाद होगा (प्रका 20:5)। अधर्मी लोग आग की झील में डाल दिए जाएँगे (प्रका 20:15)।

चर्चा - वे कौन से न्याय हैं जिनका संबंध आपसे हैं?

## पाठ 39 - दुष्टों का अन्तिम भविष्य

मात्र नया नियम में ही 162 पाठ हैं जो पश्चात्तापहीन लोगों के उस विनाश के विषय में बताते हैं जो उनकी प्रतीक्षा कर रहा है, उनमें से 70 स्वयं यीशु के द्वारा कहे गए हैं।

मसीह को अस्वीकार करने वाले दुष्ट नरक में डाले जाएँगे (भजन 9:17)।

1. परिभाषा - नरक क्या है?
    1. परमेश्वर की उपस्थिति से निकाल दिया जाना (2 थिस्स 1:9)।
    2. पीड़ा और दंड़ का स्थान (लूका 16:23)।
2. नरक का वर्णन
    1. यह मूल रूप से शैतान तथा उसके दुष्ट दूतों के लिए तैयार किया गया था (मत्ती 25:41)। परन्तु वे लोग जो उद्धारकर्ता यीशु के द्वारा प्राप्त होने वाले स्वर्ग का इन्कार करते हैं उन्हें शैतान के साथ वहाँ जाना होगा।
    2. वह दंड का स्थान है (मत्ती 25:46)।
    3. वह पीड़ा का स्थान है (लूका 16:23)।
    4. वह आग का स्थान है (मत्ती 13:42,50; प्रका 20:15; 14:10; मत्ती 3:12; यशा 33:14)।
    5. वह कीड़ों का स्थान है (मरकुस 9:48)।
    6. लूका 16 में वर्णन किये गये उस मनुष्य में दूसरों को पहचानने की (पद 23), प्रार्थना करने की क्षमता थी। यद्यपि उसकी प्रार्थना अस्वीकार कर दी गई (पद 27); उसने पानी की तथा एक संदेशवाहक को उसके भाइयों के पास वहाँ न आने की चेतावनी देने के लिए भेजने की माँग की थी (पद 24-27)।
    7. नरक अनन्त और चिरस्थायी है।

उपसंहार - अनन्त दंड संबंधी सच्चाइयाँ हमें प्रेरित करें कि हम खोए हुओं को जीतने के लिए और अधिक प्रयास करें।

# पाठ 40 - धर्मियों का अन्तिम पुरस्कार

मसीही विश्वासी के लिए मृत्यु का अर्थ यीशु मसीह में मात्र सो जाना है (1 थिस्स 4:14), तब वह व्यक्ति अचानक प्रभु की उपस्थिति में जाग उठता है (फिलि 1:23)।

1. विश्वासियों के लिए भविष्य की महिमा
    1. मसीह के साथ रहना (यूहन्ना 14:3)।
    2. उसका चेहरा देखना (भजन 17:15; 2 कुरि 4:6; प्रका 22:4)।
    3. मसीह की महिमा देखना (यूहन्ना 17:24)।
    4. मसीह के साथ महिमान्वित होना - (रोमि 8:17,18)।
    5. मसीह के साथ राज्य करना (2 तीमु 2:12)।
    6. सारी वस्तुओं का वारिस होना (प्रका 21:7)।
    7. तारों के समान चमकना (दानि 12:3)।
2. मुकुट जो विश्वासी संभवत: जीत सकते हैं
    1. न मुरझाने वाला मुकुट (1 कुरि 9:24,25) - यह मुकुट मसीही दौड़ दौड़ने वालों के लिए है (इब्रा 12:1)।
    2. आत्मा जीतने वालों के लिए आनन्द का मुकुट (1 थिस्स 2:19)।
    3. धर्म का मुकुट (2 तीमु 4:8)- उनके लिए जो यीशु के प्रकट होने को प्रिय जानते हैं। प्रत्येक को यह मुकुट जीतना चाहिए।
    4. जीवन का मुकुट (याकूब 1:12) - उन विश्वासियों के लिए जो मृत्यु तक विश्वासयोग्य रहेंगे। शहीदों का मुकुट (प्रका 2:10)।
    5. महिमा का मुकुट (1 पत 5:4) - यह चरवाहों, पासबानों, मिशनरी तथा वचन के शिक्षकों के लिए है।
3. स्वर्ग क्या है?
    1. प्रभु परमेश्वर का घर है (मत्ती 6:9; 2 कुरि 12:2)। स्वर्ग का पहला हिस्सा वह क्षेत्र है जहाँ पक्षी उड़ते हैं। दूसरा वह है जहाँ अंतरिक्ष यात्री जाते हैं। तीसरा परमेश्वर का घर है।
    2. परमेश्वर द्वारा निर्मित है, मनुष्यों के द्वारा नहीं (2 कुरि 5:1)।
    3. पिता का घर (यूहन्ना 14:2)।
    4. वह स्थान जहाँ मृत्यु, आँसू, दु:ख, रोना या पीड़ा नहीं (प्रका 21:4)। रात या अन्धकार नहीं (प्रका 22:3-5)। भूख, प्यास या धूप और तपन नहीं (प्रका 7:16)।
    5. एक स्थान जहाँ नयी सिरजी गई वस्तुएँ हैं - जीवन की नदी, जीवन का पेड़, नयी सेवा, नये संबंध, नया प्रकाश (प्रका 22:4)।

उपसंहार – स्वर्ग, तैयार किए गए लोगों के लिए तैयार किया गया स्थान है। वहाँ पहुँचना हमारा लक्ष्य होना ही चाहिए। हमारा लक्ष्य वहाँ पहुँचना, तथा उन लोगों की भीड़ के साथ पहुँचना होना चाहिए जो प्रभु के लिए किए गए हमारे परिश्रम के कारण उद्धार पाए हैं।

# 3 धर्मोपदेशकला

शब्दकोष के अनुसार धर्मोपदेशकला की परिभाषा 'उपदेश देने की कला' है, और इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य प्रत्येक विद्यार्थी में इस कला को विकसित करने हेतु सहायता करना है। परन्तु यह समझ लेना चाहिए कि उपदेश देना मात्र लोगों के समूह के आगे खड़े होकर प्रभावशाली रूप से बोलना ही नहीं है। यह वास्तव में मनुष्यों के हृदयों को परमेश्वर का व्यक्तिगत संदेश बताना है–या होना चाहिए (यिर्मयाह 1)। पौलुस इस सत्य के विषय में बहुत बल देकर लिखता है: "क्योंकि क्रूस की कथा नाश होने वालों के निकट मूर्खता है, परन्तु हम उद्धार पाने वालों के निकट परमेश्वर की सामर्थ है" (1 कुरि 1:18)। यह पाठ्यक्रम आप से प्रचार की कला में सिद्ध हो जाने हेतु परिश्रम से काम करने का अनुरोध करता है, ताकि बहुतों के उद्धार और उन्नति के लिए परमेश्वर की सामर्थ कार्य में आ सके।

उपलब्ध सीमित पृष्ठों में हम भाषण देने की तकनीकी नहीं दे सकेंगे, उदाहरण के लिए : आवाज और इशारों का प्रयोग। क्योंकि कक्षा के समय जब संदेश दिए जा रहे हो तब इसे देखा जा सकता है और शिक्षक इन पर टिप्पणी दे सकते हैं। ये पाठ उपदेश की विषय-वस्तु के संबंध में निर्देश देंगे और कुछ विशिष्ट प्रकारों के उदाहरण प्रस्तुत करेंगे।

यह ध्यान दीजिए कि पोर्टेबल बाइबल स्कूल के अन्य पाठ्यक्रम की सामग्री प्रतिदिन के पाठों में विभाजित की गई है, परन्तु धर्मोपदेशकला पाठ्यक्रम का अधिकतर विषय थोड़ा-अधिक असंगठित रूप से साप्ताहिक इकाइयों में क्रमबद्ध किया गया है। इससे कक्षा में संदेश तैयार करने और प्रस्तुत करने के व्यावहारिक कार्य के लिए लचीलापन संभव हो सकेगा।

इस सामग्री का अधिकांश भाग जिस पुस्तक से लिया गया है वह एक उत्तम पुस्तक है:

• 'हाऊ टू प्रिपेयर सर्मन्स्', लेखक- विलियम इवान्स्, प्रकाशक- मूडी प्रेस।

## पाठ 1 - उपदेश क्या है?

उपदेश, एक व्यक्ति के द्वारा बहुतों को, उद्धार के शुभ संदेश की घोषणा है। इसके दो घटक हैं–एक व्यक्ति और एक संदेश–व्यक्तित्व और सच्चाई।

उपदेशक परमेश्वर के द्वारा सुसमाचार-प्रचार के विशेष कार्य के लिए अलग किया गया है। वह मनुष्यों की ओर से परमेश्वर के साथ कार्य करता है; वह परमेश्वर की ओर से मनुष्य के साथ कार्य करता है। उसे अवश्य ही एक अच्छा मनुष्य, पवित्र आत्मा और विश्वास से भरपूर होना चाहिए। ऐसे जीवन तथा ऐसे उपदेश का प्रभाव यही है कि बहुत-से लोग प्रभु में आ मिलेंगे (प्रेरि 11:24)।

उपदेश उपदेशक का एक हिस्सा है; अवश्य है कि वह उसके स्वयं के जीवन तथा अनुभव की अभिव्यक्ति हो। इसके पहले कि उपदेशक उपदेश में तथा उपदेश के द्वारा सत्य की घोषणा कायल कर देने वाले बल से करे, उस सत्य का अनुभव स्वयं उसके जीवन में होना अवश्य है।

चर्चा - एक प्रभावशाली उपदेशक के जीवन निर्माण में कौन-कौन से आवश्यक घटक हैं? व्यक्तित्व की वे कौन-सी विशेषताएँ हैं जो उसकी सेवकाई को असफल बना सकती हैं?

## पाठ 2 - उपदेश का मूल-पाठ

1. उचित रीति से चुने गए मूल-पाठ के अनेक लाभ होते हैं-
    1. यह सुनने वालों की रुचि को जागृत करता है। "वह उसके बारे में क्या बताएगा?"
    2. यह सुनने वालों का भरोसा जीत लेता है। "यह परमेश्वर का वचन है!"
    3. यह उपदेशक को अधिकार और साहस देता है। "यहोवा यों कहता है", यह स्वर्गीय अधिकार देता है।
    4. यह उपदेशक के ध्यान को भटकने से बचाएगा।
    5. यह उपदेशक को बाइबल पर केन्द्रित रखेगा।
2. मूल-पाठ के चुनाव को नियंत्रित करने वाले सामान्य सिद्धान्त-
    1. अवश्य है कि उपदेशक लोगों की आत्मिक आवश्यकताओं का अध्ययन करे।
    2. अवश्य है कि वह अपने द्वारा प्रचार किए जा चुके सत्य के चक्र (कार्यक्रम) पर ध्यान रखे। क्या सत्य के कोई सिद्धान्त छूट गए हैं? वर्ष के आरम्भ में ही पूरे वर्ष भर प्रचार करने के लिए विषयों की सूची बना लेना अच्छा है।
    3. अवश्य है कि वह विषय को प्रस्तुत करने की अपनी क्षमता को तौल

ले। युवा उपदेशकों के लिए कुछ विषय समझाने में कठिन होंगे।

3. मूल-पाठ के चुनाव में बहुत सहायक होने वाले सिद्धान्त:
   1. परमेश्वर के वचन को निरन्तर पढ़ने की आवश्यक होती है।
   2. नोट बुक का प्रयोग अत्यंत सहायक होता है।
   3. अच्छी पुस्तकों का पढ़ना नवीन विचारों को प्रेरित करता है।
   4. पवित्र आत्मा की अगुवाई सर्वोपरि है। जो व्यक्ति निरंतर पवित्र आत्मा के प्रभाव तथा सामर्थ में जीता है उसे प्रचार के लिए शायद ही कभी किसी बात की कमी होगी।

अभ्यास-कार्य - उन दस मूल-पाठों की सूची बनाइए जिन पर आप आने वाले महीनों में प्रचार करेंगे।

## पाठ 3 - उपदेश का मूल-विषय

मूल-विषय के लिए बुद्धिमत्तापूर्ण चुनाव और उचित शब्द अत्यंत महत्वपूर्ण है। इन सुझावों पर ध्यान दीजिए:

1. उपदेशक को अपना विषय पूर्ण रीति से जानना चाहिए।
2. विषय ऐसा होना चाहिए कि लोग उसे समझ सकें। वह लोगों के सिर के ऊपर से जाने वाला न हो।
3 विषय महत्वहीन न हो–उसमें बल और गरिमा होनी चाहिए।
4. उपदेशक के पास अपने विषय को प्रचार करने का एक निश्चित उद्देश्य होना चाहिए। मन-परिवर्तन तथा निर्णय लेने हेतु प्रचार करना आवश्यक है।
5. समय, स्थान तथा प्रसंग के अनुरूप विषय होना चाहिए। उदाहरण के लिये, पुनरुत्थान के रविवार को उसे यीशु मसीह के जी उठने पर उपदेश देना चाहिए, इत्यादि।

चर्चा - वे कौन-से मुख्य-विषय हैं जो रविवार के उपदेशों में प्रचार करने या शिक्षा देने के लिए उपयुक्त हैं?

## पाठ 4 - उपदेश की सामग्री को एकत्रित करना

अच्छी पुस्तकें पढ़ना उपदेशक के विचारों को धनी बनाएगा। इसके साथ ही, उसे प्रतिदिन की घटनाओं के प्रति जागृत रहना चाहिए ताकि उनका पवित्रशास्त्र से संबंध देख सकें। प्रचारक तथा मसीही शिक्षकों को उम्रभर सीखते रहने वाले होना चाहिये, निरंतर अपने विश्वास तथा परमेश्वर तथा उसके माहात्म्य से संबंधित समझ में वृद्धि करते रहने वाले होना चाहिये। यीशु मसीह सर्वदा चौकन्ना रहता था और उसके उपदेश

उन बातों से लिए गए उदाहरणों से भरे थे जो उसने देखी और सुनी थी।

उपदेशक को अपने साथ एक नोटबुक रखनी चाहिए, ताकि वह उन सभी बातों को लिख लें जिन्हें देखकर और सुनकर वह प्रभावित होता है, इसप्रकार उसे निरंतर विचारों और उनके सत्य को एकत्रित करने वाला होना चाहिये।

चर्चा – बीते माह की स्थानीय घटनाएँ कौन-कौन सी है जो उपदेश के लिए उपयोगी विचारों का सुझाव देती हैं? उन विचारों और उनकी उपयुक्तता को सूचीबद्ध कर लेने के लिए अपनी नोटबुक में लिख लिजिए।

## पाठ 5 – उपदेश सामग्री को क्रमबद्ध करना

उपदेश की सामग्री को सही रीति से क्रमबद्ध करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। उपदेशक को अपनी सामग्री क्रम से ऐसे लगा लेनी चाहिए कि वह सम्पूर्ण उपदेश के मुख्य अभिप्राय के साथ मिल जाए।

उपदेश सामग्री को क्रमबद्ध करने के लाभ:

1. उपदेशक के लिए – जो भी स्पष्ट रूप से तथा तर्कसंगत तरीके से क्रमबद्ध किया गया है उसे स्मरण करना/रखना सरल होता है।
2. उपदेश के लिए – उपदेश का प्रभावकारी होना उसकी स्पष्ट तथा तर्कसंगत क्रमबद्धता पर अत्यधिक निर्भर करता है।
3. श्रोताओं के लिए – जो कुछ भी कलीसिया के लिए बाइबल की शिक्षा स्मरण रखने और साथ ले जाने योग्य सरल बना दे उसके लिए अच्छी तैयारी का परिश्रम करना उपयुक्त है। उपदेशक द्वारा अच्छी क्रमबद्धता करना, श्रोताओं द्वारा अच्छे से समझने के लिए नितान्त आवश्यक है।

चर्चा – रोमियों 1:16-17 पर संदेश के लिये विषय का सुझाव दीजिये।

## पाठ 6 – उपदेश की उत्तम क्रमबद्धता

उपदेश की उत्तम क्रमबद्धता की विशेषताएँ

1. एक मूल-विषय – उपदेशक को अपने उपदेश में एक ही विषय रखना चाहिए और वह अपने सभी तर्कों, प्रमाणों, गवाहियों और उदाहरणों को उसी एक विषय पर बल देने के लिए केन्द्रित करे।
2. उपदेश के विभाजनों के बीच तर्क-संगत संबंध – तर्क द्वारा सबसे पहले बुद्धि को प्रभावित करना चाहिए, उसके बाद भावनाओं को और तब अन्त में इच्छा को अपील करना चाहिए।
3. रूपरेखा – प्रत्येक उपदेश के लिए एक रूपरेखा की आवश्यकता होती है, ठीक वैसे ही जैसे मनुष्य के शरीर को अस्थिपंजर की होती है। सामान्य रूप

से, उपदेश की योजना उपयोग में लाने के लिए सरल होनी चाहिए। आकर्षक रूपरेखा स्मरण रखने के लिए सरल होती है। इसी कारण कुछ उपदेशक अपनी रूपरेखा ऐसी बनाते है कि हर एक सामान्य शीर्षक एक ही अक्षर या स्वर से आरम्भ हो। अन्य उपदेशक विरोधी शब्द और विपर्यास का प्रयोग करते हैं। एक उपदेश में निम्नलिखित शीर्षक हो सकते हैं:

(हिन्दी में उपयुक्त शब्द संबंध बनाने के लिए
अंग्रेजी पुस्तक का मूल उदाहरण बदला गया है।)

विषय - यीशु का पहला आश्चर्यकर्म (यूहन्ना 2:1-11)

"समस्या का समाधान"

1. समस्या (वचन 3)
2. सुझाव (मरियम का सेवकों से: वचन 5)
3. सहयोग (सेवकों का आज्ञापालन: वचन 7ब, 9अ)
4. समाधान (वचन 9-10)
5. सामर्थ (यीशु की, वचन 11)

दूसरे उपदेश में ये शीर्षक हो सकते हैं जिनका अंतिम अक्षर एक जैसा है:

विषय - मसीही कैसे बने

1. ग्रहण, 2. समर्पण, 3. अनुकरण, 4. अनुसरण

कार्य - प्रत्येक मुख्य बिन्दु के आरम्भ के लिए एक ही अक्षर का प्रयोग करते हुए एक रूपरेखा बनाइए।

## पाठ 7 - उपदेश का परिचय

प्रत्येक उत्तम उपदेश या संदेश स्वयं को तीन हिस्सों में विभाजित करता है: (1) परिचय, (2) तर्क [मुख्य भाग] और (3) उपसंहार।

उपदेश के लिए परिचय चटनी के लिए मसाले के समान है। यह संदेश के मांस को स्वाद देता है। कुछ अपवाद हैं–समय की अल्पता या अनौपचारिक बात–परन्तु सामान्य रूप से, विषय का परिचय देना उत्तम है।

परिचय का अभिप्राय

1. विषय में रुचि जागृत करना। यह प्रचारक का कार्य है कि अपनी बात को इतनी रुचिकर रीति से प्रस्तुत करे कि श्रोताओं के पास सुनने और रुचि लेने के सिवाय कोई और चारा न रह जाए।
2. श्रोताओं को आगे बोली जाने वाली बातों के लिए तैयार करना।

परिचय के स्रोत:

1. मूल-पाठ या विषय के साथ सामान्य घनिष्ठता। उदाहरण के लिये, भजन संहिता 23:4-6 का परिचय देने के लिए, उपदेशक यह प्रस्तावना दे सकता

है: "कितनी बार इस पाठ ने मृत्यु शय्याओं को प्रकाशमान किया है और शोकित को सांत्वना दी है।"

2. मूल-पाठ की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि (उदा. मत्ती 2:3)
3. बाइबल के पाठ का भौगोलिक संदर्भ (उदा. यूहन्ना 4:3-4)
4 बाइबल की परम्पराएँ और प्राचीन वस्तुएं (उदा. लूका 2:24)
5. लेखक और जिनको मूल-पाठ लिखा गया था उनकी विशिष्ट परिस्थितियाँ (उदा. 1 यूहन्ना 1:1)।
6. अवसर - ईस्टर या क्रिसमस।

अभ्यास-कार्य - ईस्टर के उपदेश का परिचय तैयार कीजिए।

## पाठ 8 - अच्छे परिचय की विशेषताएँ

1. अधिक ऊंची आवाज में, संवेदनात्मक या भावुक न हो। भावनाओं को अपील करना जल्दबाजी होगी। यह सबसे अच्छा होगा कि धीरे-धीरे और धीमे स्वर में बोलते हुए आरम्भ करे; धीरे-धीरे विषय तक उभारे, तब चरम सीमा तक ले जाए।
2. अधिक लम्बा न हो। लम्बा परिचय लोगों को थका देता है।
3. सावधानी से तैयार किया गया हो। उसे पूरा लिख लेना अच्छा है। पहला प्रभाव स्थायी होता है, इसलिए परिचय को बड़ी सावधानी से तैयार करना चाहिए।

कार्य : रोमियों 1:16-17 पर उपदेश के लिए एक अच्छा परिचय लिखिए और उसे अपनी कक्षा में प्रस्तुत कीजिए।

## पाठ 9 - उपदेश का तर्क (मूख्य भाग)

उपदेश के उतने भाग हो सकते हैं जितने विषय में आवश्यक है और जितने संभाले जा सकते हैं। इसमें संभवत: तीन भाग हो सकते हैं, और सात भी हो सकते हैं। भाग अपने क्रम तथा एक से दूसरे में प्रवेश करने के लिए सहज और तर्कपूर्ण होने चाहिए। कभी-कभी वे बताए जाते हैं, परन्तु हमेशा ही नहीं।

भागों को इन प्रश्नों का उत्तर देना चाहिए:

1. क्या? - पहले भाग में विषय के कथन तथा परिभाषा को स्पष्ट करना चाहिए। इस भाग के बाद विषय के संबंध में कोई भी गलतफहमी नहीं रहनी चाहिए। यह बुद्धि के लिए सम्बोधित करना है भावनाओं और इच्छा के लिए नहीं।
2. क्यों? - इसे विषय की आवश्यकता, कारण या प्रमाण प्रस्तुत करना चाहिए। यह प्रश्न करता है: यह क्यों सच है? मैं क्यों इस पर विश्वास करूँ या इसे क्यों ग्रहण करूँ? इसे प्रमाणित कैसे किया जा सकते है? क्या यह तर्कपूर्ण है?
3. कैसे? - यह उस व्यवहार या पद्धति से अवगत कराता है जिसके द्वारा उपदेश

का विषय उभारा जा सकता है, या उन शर्तों को जिनके अन्तर्गत उसे ग्रहण या पूर्ण किया जा सकता है। इस भाग को अच्छी तरह समझने में सामान्यत: तीन दृष्टिकोण होते हैं: परमेश्वर की भूमिका, मनुष्य की भूमिका तथा साधन का प्रश्न।

4. फिर क्या? - यह, विषय को उसके उपयोग की ओर ले जाता है और संभवत: सबसे महत्वपूर्ण भाग है। यह विषय को व्यक्तिगत बात बनाता है। हमें मनुष्यों को समझाना है कि वे यीशु मसीह के लिए, उसके सन्मुख एक पवित्र जीवन जीने के लिए, निणर्य लें।

अभ्यास-कार्य - रोमियों 1:16-17 पर उपदेश देने के लिए मूख्य भाग की रूपरेखा बनाइए।

## पाठ 10 - उपदेश का उपसंहार

अन्तिम पाँच मिनट उपदेश का सबसे महत्वपूर्ण भाग है - इसकी पूर्ण तैयारी की उपेक्षा करना कितनी बड़ी गलती होगी! कभी-कभी उपदेश के भागों तथा प्रमूख विचारों को दोहराना प्रभावशाली उपसंहार होता है-कुछेक आकर्षक, अच्छे चुने हुए, आत्मा को कायल करने वाले वाक्यों में संक्षिप्त विवरण या कोई सटीक उदाहरण दिया जा सकता है। कभी-कभी कोई कविता या जाने-माने भक्ति-गीत का कोई पद प्रयोग किया जाता है। या उपदेश का अन्त एक चित्ताकर्षक वाक्य से किया जा सकता है।

आपके उपसंहार में, आपके श्रोताओं को कुछ कार्यवाही करने में सहायता होने हेतु आमंत्रण देना महत्वपूर्ण है। हम यहां एक घटना का वर्णन करना चाहते हैं जो इस कारण पर जोर देगा कि आपके उपदेश में आमंत्रण होना ही क्यों आवश्यक है।

अमेरीकी प्रचारक डी. एल. मूडी ने, शिकागो शहर में, रविवार 8 अक्टूबर 1871 की रात एक उपदेश प्रचार किया। उस रात उन्होंने अपने श्रोताओं को इस एक प्रश्न के साथ घर भेजा कि विचार करें कि वे ''यीशु के साथ क्या करेंगे?'' उन्होंने योजना बनाई कि वे पुन: उन्हें संबोधित करेंगे और तब उनकी अगुवाई करेंगे कि वे यीशु को अपना उद्धारकर्ता और प्रभु स्वीकार करें। उसी रात को शिकागो शहर में भीषण आग लगी और तीन दिन तक जलती रही और उस आग में 300 लोग मर गये। उस प्रचारक को अपनी मृत्यु के दिन तक इस बात का खेद रहा कि उन्हों ने लोगों को उसी समय यीशु को स्वीकार करने का अवसर नहीं दिया। इस घटना के बाद उन्होंने कहा था, ''जब मैं लोगों को तत्काल मसीह के लिये बाध्य करने हेतु प्रचार करूंगा, और उन्हें तुरंत निर्णय लेने की ओर लाने का प्रयास करूंगा, तो मैं उन्हें वे ''यीशु के साथ क्या करोगे?'' इसका निर्णय लेने हेतु एक सप्ताह का समय देने के बजाय अपना दाहिना हाथ काट डालूंगा।''

''जब कभी सुसमाचार का प्रचार किया जाये तब हर बार अरजेंसी का एहसास होना चाहिये। बाइबल कहती है, ''देखो, अभी वह प्रसन्नता का समय है; देखो, अभी वह उद्धार का दिन है'' (2 कुरिंथियों 6:2)। जब कभी आप सुसमाचार प्रचार करो तब ऐसे ही करो कि वह आपका प्रचार करने का अंतिम मौका है। इंग्लैड के एक प्रचारक रिचर्ड बैक्स्टर ने कहा है, ''मैं ऐसे प्रचार करता हूं कि जरा भी निश्चित नहीं हूं कि इन लोगों को पुन: प्रचार कर पाऊंगा, और ऐसे जैसे कि एक मरता हुआ मनुष्य दूसरे मरते हुये को प्रचार कर रहा है!'' (ईवैन्जलिस्टिक प्रीचिंग, द इन्स्टीटूट ऑफ ईवैन्जलिजम, बिली ग्राहम सेंटर, पृष्ठ 29,60)।

अभ्यास-कार्य - रोमियों 1:16-17 पर आधारित अपने उपदेश के लिए उत्तेजित करने वाला उपसंहार तैयार कीजिए।

## पाठ 11 - उदाहरण और उनके लाभ

यीशु के प्रवचन जीवन की छोटी घटनाओं का वर्णन, दृष्टांत और उपमाओं से भरपूर हैं। किसी और से अधिक स्वयं यीशु ने अपने आदर्श से उपदेश में उदाहरणों के मूल्य को बताया है। उदाहरण का प्रयोग सुनने वालों के लिए बहुत सहायक होता है कि वे उपदेश के सत्य को घर तक ले जा सकें।

उदाहरणों का उद्देश्य:

1. वे विषय पर प्रकाश डालते हैं। वे घर में खिड़कियों के समान हैं–वे प्रकाश भीतर आने देते हैं।
2. वे स्पष्ट करते हैं।
3. वे शिक्षा के मूल विषय को सहारा देने के लिये प्रमाण देते हैं।
4. वे शिक्षा को रूचिकर बनाते हैं।
5. वे कायल कर सकते हैं।

उदाहरणों के स्त्रोत

1. उपदेशक को हर जगह उदाहरणों की खोज में रहना चाहिए। मसीह ने अपने दृष्टांतों में जंगली सोसन, पक्षी, नमक, दीया, पैमाना, कपटी, मच्छड़, कीड़ा, सकेत फाटक और चौड़ा फाटक, सुई का नाँका, आटे में खमीर, राई का दाना, मछली का जाल, देनदार तथा महाजन आदि का प्रयोग किया।
2. अच्छा होगा कि पवित्रशास्त्र से ही उदाहरणों को खोजा जाये।
3. अन्य स्त्रोत : समाचार पत्र, इतिहास, प्राणी, सब्जियाँ, बालक और अन्य वस्तुएँ।

चर्चा: यूहन्ना 3 में चर्चित 'हमें "नया जन्म" लेना अवश्य है' इस सत्य के लिए कुछ अच्छे उदाहरण बताइये।

नोट: पाठ 12 से 35 में, विद्यार्थी पांच प्रकार के उपदेशों के लिये रूपरेखा बनायेंगे। प्रत्येक रूपरेखा में होगा: प्रस्तावना, तर्क (मुख्य भाग) जिसमें उदाहरण होंगे, और फिर उपसंहार तथा आमंत्रण। प्रत्येक विद्यार्थी को, कक्षा में अपना उपदेश प्रचार करने का कम से कम एक अवसर मिलना ही चाहिये।

## पाठ 12-15 - जीवन-वृत्तान्त संबंधी उपदेश

उपदेश के इस प्रकार में, बाइबल के किसी पात्र का जीवन प्रस्तुत किया जाता है। जीवन-वृत्तांत संबंधी उपदेश का उदाहरण:-

इब्राहीम के चार समर्पण

मूल पाठ: उत्पत्ति 12-22

मूल-विषय: (विद्यार्थियों द्वारा कक्षा में निश्चित किया जाये)

1. परिचय: (विद्यार्थियों द्वारा निश्चित की जाये)
2. मुख्य भाग (तर्क)

क. अपने देश और अपने पिता के घर को छोड़ना (उत्प 12:1)। (विद्यार्थियों द्वारा नया नियम से या फिर उनके अपने जीवन से उदाहरण खोजे जायें)

ख. लूत से अलग होना (उत्प 13:9)। (उदाहरणों के साथ)

ग. हाजिरा और इश्माएल को निकाल देना (उत्प 21:10)। (उदाहरणों के साथ)

घ. इसहाक को बलिदान करना (उत्प 22)। (उदाहरणों के साथ)

3. उपसंहार और आमंत्रण

## पाठ 16-20 वर्णनात्मक उपदेश

इन उपदेशों में बाइबल की किसी घटना को चित्रित किया जाता है। वर्णनात्मक उपदेश की रूपरेखा का उदाहरण:

सिंहों की माँद में दानिय्येल

मूल-पाठ: दानिय्येल 6:19-23

मूल-विषय: परमेश्वर अपने सन्तानों की चिन्ता करता है

परिचय: बन्धुवाई के देश में युवकों की कहानी

रूपरेखा:

1. दुष्टता का षड्यन्त्र (दानिय्येल 6:1-9)।
2. दैनिक आदत (पद 10)।
3. ईश्वरीय प्रबन्ध (पद 21-24)।

उपसंहार: दानिय्येल खतरे का सामना बड़े हियाव के साथ कर सका, क्योंकि

उसका अपने परमेश्वर के साथ बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध था। क्या आप परमेश्वर की इतनी निकटता में चलते रहे हैं कि आपके जीवन में चाहे जो भी हो आप उसका सामना कर सकेंगे?

## पाठ 21-25 - पाठ-विषयक उपदेश

पाठ-विषयक उपदेश में मुख्यत: एक पद या कुछ पदों के छोटे हिस्से में पाए जाने वाला एक विशिष्ट विचार होता है। उस पद का विश्लेषण अवश्य ही सावधानी से करना चाहिए।

पाठ-विषयक उपदेश का उदाहरण:

एक बन्धनरहित भेंट

मूल-पाठ: रोमियों 12:1

मूल-विषय: अर्पण

1. परिचय: अर्पण शब्द का अर्थ क्या है?: अर्पित करना, अलग करना, समर्पित करना या परमेश्वर की महिमा के लिए पृथक करना। अर्पण का अर्थ अपने जीवन की प्रभुता को राजा यीशु के हित में त्याग देना है। आपके जीवन में कौन प्रभु है?

2. मुख्य भाग (तर्क)

क. कौन अर्पित हो सकता है? "हे भाइयों मैं तुमसे ... बिनती करता हूँ" - वे जो मसीह के लहू के द्वारा शुद्ध किए गए हैं, परमेश्वर के परिवार के सदस्य हैं। कोई महान, सामर्थी, या प्रतिभावान नहीं, परन्तु यह प्रत्येक विश्वासी के लिए खुला है।

ख. अर्पण का आग्रह: "परमेश्वर की दया स्मरण दिलाकर।" यह आज्ञा हमें दबाव या अधिकार से नहीं परन्तु परमेश्वर की दया के द्वारा दी गई है। भय के द्वारा नहीं, परन्तु प्रेम और दया के द्वारा प्रोत्साहित किया गया है। परमेश्वर की दया में से कुछ ये है: उद्धार, पवित्रीकरण, हृदय में पवित्र आत्मा का निवास, प्रतिदिन की सहायता, स्वास्थ्य, मृत्यु के बाद स्वर्ग, मित्र, कलीसिया।

ग. अर्पण की प्रक्रिया: "अपने शरीरों को ...जीवित बलिदान करके चढ़ाओ।"

1. यह स्वेच्छा से करना है–एक भेंट चढ़ाना है। यह करने के लिए हम पर दबाव नहीं डाला गया है।
2. यह व्यक्तिगत है–अपने शरीर। हमारा जीवन, जो कुछ भी हमारे पास है।
3. यह बलिदानात्मक है–एक "जीवित बलिदान।" यह अपने जीवन को वेदी पर रखना है, जैसे इब्राहीम ने इसहाक को रखा था।

घ. अर्पण के तर्क - "आत्मिक सेवा।" यदि हमने वास्तव में उद्धार प्राप्त किया

हैं, तो यह यथोचित है कि हम अपनी नगण्य सेवा परमेश्वर को दें।

च. मुझे क्या अर्पित करना है? "अपने शरीरों को।" हमारे शरीर हमारे अपने नहीं हैं। इन्हें यीशु ने अपने लहू के द्वारा छुड़ाया हैं।

1. हमारी शारीरिक सामर्थ, स्वास्थ्य के लिए परमेश्वर की स्तुति करें और उसे उसके लिए उपयोग में लाएँ।
2. हमारे पाँव, कि दया के उद्देश्य के लिए दौड़ें–किसीके पास सुसमाचार को ले जाएँ।
3. हमारे हाथ, कि दया के कार्य करें और गिरे हुओं को उठाएँ।
4. हमारी आँखें, कि जरूरतमंद और नाश होने वालों की खोज में लगाएँ।
5. हमारे कान, कि पीड़ित लोगों के रोने को सुनें और उन्हे परमेश्वर के लिए खोजें।
6. हमारे हृदय, जो भीतरी मनुष्य का प्रतिक है, वास्तविक व्यक्तित्व है। सबसे अधिक परमेश्वर इसे ही चाहता है (2 कुरि 8:5)।

3. उपसंहार तथा आमंत्रण – अर्पण एक प्रक्रिया है। यह प्रतिदिन, पल-प्रतिपल स्वामी के प्रति अर्पित होना है। इस पल भी, अपना सब कुछ उद्धारकर्त्ता को अर्पित कर दीजिए।

चर्चा: क्या आपने अपना शरीर मसीह को अर्पण कर दिया है? यदि हां, तो वैसा कर देने के बाद से आपका जीवन कैसे बदल गया है?

## पाठ 26-30 प्रासंगिक या विषयसंबंधी उपदेश

इस प्रकार के उपदेश का केन्द्र एक प्रसंग या विषय होता है। इसे तैयार करने में बाइबल शब्द-अनुक्रमणिका बहुत सहायक होगी, क्योंकि पवित्र शास्त्र के कई भागों से पदों का उपयोग किया जा सकता है। विषयसंबंधी उपदेश का एक उदाहरण नीचे दिया गया है:

आओ और पीयो

मूल-पाठ: "यीशु खड़ा हुआ और पुकार कर कहा, यदि कोई पियासा हो तो मेरे पास आ कर पीए" (यूहन्ना 7:37)।

मूल-विषय: जीवन का जल

1 परिचय: क्या आप कभी जल से वंचित हुए हैं? क्या आप जानते हैं कि किसी और चीज से अधिक पानी ही को चाहना क्या होता है? (जल के महत्व पर विचार जारी रखिए।)

2. मुख्य भाग (तर्क):

1. जीवन का जल–उसकी विशेषता

1. जीवित (यूहन्ना 4:10)।
2. स्वच्छ (प्रका 22:1)।
3. शुद्ध (प्रका 22:1)।
4. अत्यधिक (यहेज 47:1-9)।
5. मुफ्त (प्रका 21:6)।

2. यह किसके लिए दिया गया है?
   1. प्यासे के लिए (प्रका 21:6)।
   2. जो कोई चाहे उसके लिए (प्रका 22:17)।
3. उसे पाने का मार्ग
      1. आओ (प्रका 22:17)।
      2. ले लो (प्रका 22:17)।
3. उपसंहार तथा आमंत्रण - इसे विद्यार्थी तैयार करेंगे।

## पाठ 31 से 35 - व्याख्यात्मक उपदेश

व्याख्यात्मक उपदेश अभी तक अध्ययन किए गए सभी उपदेशों से इस बात में भिन्न है कि यह अधिकतर पूरी रीति से वचन की व्याख्या से भरा होता है, जब कि पाठ-विषयक और प्रासंगिक या विषयसंबंधी उपदेश में मात्र एक ही विचार या विषय की छान-बीन की जाती है जो मूल पाठ में सुझाया गया होता है। बहुधा यही सोचा जाता है कि व्याख्यात्मक प्रचार उपदेश के अन्य सभी प्रकारों से श्रेष्ठ है।

व्याख्यात्मक प्रचार के कुछ लाभ इस प्रकार हैं:

1. यह बाइबलीय उपदेशक और श्रोता उत्पन्न करता है। उपदेशक और उसके सुनने वाले बाइबल पर केन्द्रित रखे जाएँगे।
2. यह प्रचार के बाइबलीय नमूने के सदृश्य है। यह यीशु की (लूका 4), स्तिफनुस की (प्रेरितों 7 और 8), पौलुस की (प्रेरितों 28) और पतरस की (प्रेरितों 2 और 3) पद्धति थी।
3. इसका क्षेत्र अधिक विस्तृत होता है। यह सत्य को सुनने वालों के जीवन से व्यावहारिक रीति से लागू करने का अधिक अवसर देता है।

संभवत: इसकी कुछ हानियाँ है:

1. यह सुनने वालों के लिए निरस बन सकता है।
2. उपदेशक आलसी बन सकता है। इसमें यह खतरा हो सकता है कि चुने गए परिच्छेद के एक के बाद एक पदों को पढ़कर उन पर कुछ वाक्य बोल दिए जाएँ बजाय इसके कि उसमें पाए जाने वाले सत्य की बड़ी दृढ़ता से घोषणा करे।

3. पाठ बहुत लम्बा, सुनने वालों को असमंजस में डालने वाला, हो सकता है।
4. कभी-कभी ऐसा प्रचार इतना सीमित होता है कि उपदेशक को वर्तमान विषय पर प्रचार करने से रोक लेता है। व्याख्यात्मक उपदेश का एक केन्द्रीय विषय होना चाहिए, ताकि विचारों में एकता हो। ऊपर बताई गई निरसता को दूर करने के लिए मूल-पाठ बाइबल के भिन्न-भिन्न स्थानों से लेना चाहिए, और उपदेश मात्र ज्ञान-सिद्धान्त नहीं, परन्तु अधिक व्यावहारिक होना चाहिए।

व्याख्यात्मक उपदेश का उदाहरण:

'एक मृत्यु से जीवन'

मूल-पाठ : रोमियों 5:6-11

"क्योंकि जब हम निर्बल ही थे, तो मसीह ठीक समय पर भक्तिहीनों के लिए मरा," इत्यादि।

मूल-विषय : यीशु मसीह की मृत्यु

1. परिचय: पौलुस की शिक्षा में इसका स्थान।
2. मुख्य भाग (तर्क):

क.. किसी की मृत्यु हुई -

1. यह एक सामान्य सच्चाई है–सभी की मृत्यु होती हैं।
2. परन्तु यह एक असामान्य सच्चाई है यदि हम निम्नलिखित बातें स्मरण करते हैं:
   - जिसकी मृत्यु हुई उसका चरित्र।
   - वह मृत्यु से बच सकता था।
   - दावें जो उसकी मृत्यु के साथ जुड़े थे।

ख. लोग जिनके लिए मसीह मरा -

1. पापी, भक्तिहीन, निर्बल, शत्रु।
2. "उनके लिए मरा" इन शब्दों का अर्थ।

ग. मसीह के मरने का उद्देश्य -

1. नकारात्मक रूप से: परमेश्वर को मनुष्य से प्रेम करने का प्रलोभन देने के लिए नहीं।
2. सकारात्मक रूप से: ताकि मानव बदल जाए:
   - धर्मी ठहराया जाए।
   - परमेश्वर से मेल कराया जाए।
   - क्रोध से बचाया जाए।
   - मसीह के जीवन के द्वारा बचाया जाए।

3. उपसंहार तथा आमंत्रण:

- क्या आप क्रूस के महत्व को पहचानते हो?
- क्या इसका आपके लिये कोई अर्थ नहीं है?
- मसीह की उस मृत्यु के कारण हमारा उसके प्रति कितना अधिक प्रेम होना चाहिये!

## पाठ 36-40 - इन्डक्टिव बाइबल स्टडी

इन्डक्टिव बाइबल स्टडी (आई.बी.एस.) यह पवित्रशास्त्र का अध्ययन करने की एक सुनियोजित पद्धति है और प्रचारकों को उपदेश की तैयारी करने के लिये सामर्थी साधन है। आई.बी.एस. के तीन कदमों को सिखने में, आगे के पाठ विद्यार्थियों की सहायता करेंगे।

### पाठ 36 - अवलोकन (यह क्या कहता है?)

1. चुने गये शास्त्रपाठ को अनेक बार पढ़िये।
2. चुने गये शास्त्रपाठ के आस-पास का संदर्भ पढ़िये।
3. आपके मन में, पढ़ते समय जो प्रश्न आते हैं उन्हें लिख लीजिये।
4. साहित्य का प्रकार पहचानिये।
5. संदर्भ का वर्णन कीजिये।
6. लेखक का अध्ययन कीजिये।
7. प्राप्तकर्ता का अध्ययन कीजिये।
8. अन्य लोगों को पहचानिये।
9. मुख्य शब्दों और वाक्यांषों को चिन्हित कीजिये।
10. प्रश्न कीजिये: क्या? कहां? क्यों? कौन? कब? और कैसे?
11. इस पुस्तक का या पत्री का मूल-विषय क्या है?
12. आप जिस अध्याय से बोलने वाले हैं उसका मुख्य विषय क्या है?
13. आपके उपदेश के पाठ का मुख्य बिंदु क्या है?
14. परमेश्वर का मुख्य बिन्दु ही मेरा मुख्य बिन्दु होना चाहिये।

अभ्यास-कार्य - प्रेरितों के काम 5:17 से 32 को कक्षा में पढ़िये और अवलोकन के उपरोक्त 14 कदमों को करने में कक्षा की अगुवाई कीजिये। (ध्यान दीजिये: पवित्रशास्त्र के कुछ लेखांशों के लिये इन सभी 14 प्रश्नों के उत्तर देना कठिन होगा।)

## पाठ 37 – व्याख्या (इसका अर्थ क्या है?)

1. व्याख्या करने का अर्थ अपने विचार बताना नहीं होता है।
2. व्याख्या लेखक के अभिप्राय के अनुसार होती है।
3. व्याख्या करते समय पालन करने के सात तत्व इस प्रकार हैं:
   1. दिये गये पाठ का अर्थ उसका संदर्भ निश्चत करता है।
   2. मिलते जुलते हवालों से जांच लीजिये।
   3. पवित्रशास्त्र का एक भाग कभी भी पवित्रशास्त्र के दूसरे भाग से विरोधी बात नहीं कहेगा।
   4. अस्पष्ट वाक्यों या अंशों पर अपने उपदेश को आधारित मत कीजिये।
   5. शाब्दष: अर्थ बताइये जब तक कि संदर्भ कोई और मांग नहीं करता।
   6. लेखक का निर्दिष्ट अर्थ क्या है इसे देखिये।
   7. विश्वसनीय टीका (कमेंटरी) का उपयोग करते हुये, अथवा किन्हीं परिपक्व मसीहियों की सहायता से, अपने निष्कर्ष जांच लीजिये।

अभ्यास-कार्य – प्रेरितों के काम 5:17 से 32 को जोर से पढ़िये और व्याख्या के 3 कदमों को करने में कक्षा की अगुवाई कीजिये।

## पाठ 38 – लागूकरण
## (इसे मैं अपने जीवन में कैसे लागू करूं?)

1. लागूकरण के महत्व पर जोर देने के लिये याकूब 1:22-25 पढ़िये।
2. लागूकरण का मार्गदर्शन करने वाले चार प्रश्न:
   क. अब परमेश्वर मुझ से ''क्या'' चाहता है?
   ख. अब परमेश्वर मुझ से इसका लागूकरण ''कहां'' चाहता है?
   ग. परमेश्वर जो चाहता है वह करना मेरे लिये ''क्यों'' आवश्यक है?
   घ. जो परमेश्वर चाहता है वह मैं ''कैसे'' कर सकता हूं?

अभ्यास-कार्य – प्रेरितों के काम 5:17 से 32 को जोर से पढ़िये और लागूकरण के 2 कदमों को करने में कक्षा की अगुवाई कीजिये।

## पाठ 39 – आई.बी.एस. का उपयोग करते हुये उपदेश की रूपरेखा

पाठ 36 से 38 को करने के बाद एकत्रित की गई बातों का उपयोग करते हुये, विद्यार्थी प्रेरितों के काम 5:17 से 32 पर उपदेश की रूपरेखा बनायेंगे। वे इसमें परिचय, उपसंहार/आमंत्रण और उदाहरणों का भी समावेश करेंगे।

## पाठ 40 – उपदेश की रूपरेखा को प्रस्तुत करना

विद्यार्थी अपनी–अपनी रूपरेखा को कक्षा के समक्ष प्रस्तुत करेंगे ताकि औरों के प्रतिसाद को जान सकें और चर्चा कर सकें। अंत में विद्यार्थी अपनी रूपरेखा को शिक्षक के पास जमा कर देंगे।

# 4 झुंड की चरवाही

पतरस ने लिखा है, "परमेश्वर के उस झुंड की जो तुम्हारे बीच में है रखवाली करो" (1 पत 5:2)। नि:सन्देह, वह उस दिन को स्मरण कर रहा था जब यीशु ने उससे तीन बार पूछा था कि क्या वह उससे प्रेम करता है (यूहन्ना 21:15-17)। हर बार यीशु ने अपने प्रश्न के पश्चात् उससे भेड़ों और मेमनों को चराने के लिए कहा। आज वही आज्ञा यीशु अपने उन अनुयायियों को देता है जिन्हें उसने इस देश के गाँवो और शहरों में उसके चरवाहे बनने के लिए बुलाया है।

युवा सहायक-चरवाहों को दिए गए पतरस के निर्देशों का एक अन्य भाग भी था। उन्हें झुंड की न मात्र "रखवाली" करनी थी वरन् निरीक्षण भी करना था और झुंड के लिए "आदर्श" भी बनना था। इसका अर्थ यह कि उन्हें झुंड पर आने वाली समस्याओं, प्रश्नों, और बोझ के बारे में चिन्तित रहना था और सर्वदा जीवन और चाल-चलन के लिए नमूना प्रस्तुत करना था।

ये पाठ विभिन्न विषयों पर है–प्रचार करना, परामर्श देना, सर्वोच्च परमेश्वर के राजदूतों के भाँति जीवन व्यतीत करना। इन्हें प्रकार विभाजित किया जा सकता है:

1. पासबान का व्यक्तिगत जीवन: पाठ 1, 5-9
2. कलीसिया के लिये सेवकाइयां: पाठ 2-4; 10-13; 19 और 34-40
3. जो आत्मिक अंधकार में हैं उनके प्रति सेवकाइयां: पाठ 14-18
4. असाधारण परिस्थितियों में सेवकाइयां: पाठ 20-33

पतरस के शब्द इस पाठ्यक्रम के लक्ष्य को व्यक्त करते हैं, "और जब प्रधान रखवाला प्रकट होगा तो तुम्हें महिमा का मुकुट दिया जाएगा जो मुरझाने का नहीं" (1 पत 5:4)।

इन पाठों में मिलने वाली अनेक बहुमूल्य सच्चाइयों के लिए भारत के वेल्लोर में स्थित ब्लेसिंग बुक्स् संस्था द्वारा प्रकाशित आर. स्टैनली की पुस्तक 'प्रीचर्स एण्ड् पीपल्' अत्यंत सहायक स्रोत थी।

## पाठ 1 - वचन का प्रचार करो

जो प्रचार स्थायी रहने वाला फल लाता है वह (प्रचार) परमेश्वर के वचन पर आधारित होता है। पुराना नियम में लिखित आत्मिक-जागृतियों में परमेश्वर के वचन ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, विशेषकर राजा योशिय्याह और एज्रा के समय (2 राजा 22:8-11; एज्रा 7:10)। आमोस ने प्रभु के वचन के अकाल के दिनों की भविष्यवाणी की थी (आमोस 8:11,12); और संभवत: वे दिन हम पर आ ही चुके हैं! बहुत-से पुलपिट से कहानियाँ और अनुभव सुनाई देते हैं परन्तु परमेश्वर के वचन की व्याख्या बहुत कम होती है।

दूध अच्छा है, परन्तु कड़े अन्न के बिना परिपक्वता संभव नहीं है।

पौलुस ने वचन का प्रचार करने कहा है (2 तीमु 4:2-4)। यह आवश्यक है।

अभ्यास-कार्य - ऊपर लिखे बाइबल के पदों का अध्ययन कीजिए। जो प्रचार संपूर्णत: परमेश्वर के वचन पर आधारित होता है उसके प्रभाव की चर्चा कीजिए।

## पाठ 2 - हमें आत्मिक-जागृति की आवश्यकता क्यों है

आत्मिक-जागृति अपने आप में लक्ष्य नहीं है। यह लक्ष्य का एक माध्यम है और लक्ष्य सुसमाचार-प्रचार है। आत्मिक-जागृति सुसमाचार-प्रचार नहीं है; परन्तु आत्मिक-जागृति सुसमाचार-प्रचार को जन्म देती है। दाऊद ने प्रार्थना की थी, "अपने किए हुए उद्धार का आनन्द मुझे फिर से दे, . . . तब पापी तेरी ओर फिरेंगे" (भजन 51:12-13)। वेल्स आत्मिक-जागृति के ईवान रॉबर्ट्स् ने प्रार्थना की थी, "प्रभु कलीसिया को नम्र बना दे और संसार को आशीष दे!"

बीते समय में हुए अधिकांश आत्मिक-जागृतियों ने बड़े-बड़े मिशनरी और सुसमाचार-प्रचार आन्दोलनों को जन्म दिया हैं। किन्तु उनमें से कुछ बहुत शीघ्र ही समाप्त हो गए। इसका एक प्रमुख कारण अगुवों की असफलता थी कि उन्होंने आत्मिक-जागृति की आशीषों को उत्साही सुसमाचार-प्रचार और आत्मा-जीतने के कार्यों में प्रवाहित नहीं किया।

परमेश्वर अपने लोगों पर अपना आत्मा उड़ेलने में रुचि मात्र इसलिए नहीं रखता कि उन्हें उत्तेजित कर दे या उन्हें अच्छा अनुभव करा दे। नहीं! वह "जगत" में रुचि रखता है!

आत्मिक-जागृति में विलम्ब का एक कारण यह भी है कि हम अब तक यह नहीं जानते कि हमें आत्मिक-जागृति की आवश्यकता क्यों है।

चर्चा - आपकी कलीसिया में कौन-कौन सी परिस्थितियाँ आत्मिक-जागृति की आवश्यकता को प्रकट करती हैं? इसे सामूहिक प्रार्थना का विषय बनाइए।

## पाठ 3 – आत्मिक-जागृति के लिए प्रचार करना

क्या आपके लोग प्रभु की बातों में उदासीन और रुचिहीन हैं? क्या आपके झुंड में फूट, ईर्ष्या और निंदा है? क्या वे पाप कर रहे हैं–चोरी, झूठ बोलना? क्या वे मूर्तिपूजक प्रथाओं की ओर मुड़ रहे हैं? उन्हें आत्मिक-जागृति की आवश्यकता है!

आत्मिक-जागृति का अर्थ आत्मिक जीवन की ओर लौटना है। सुसमाचार-प्रचार और आत्मिक-जागृति में अंतर है। एक पापी को परमेश्वर के पास लाने के लिए सुसमाचार-प्रचार की आवश्यकता होती है। किन्तु एक नया जन्म पाए हुए व्यक्ति को, जो पाप और उदासीनता में पड़ गया हो, आत्मिक रीति से जागृत किए जाने की आवश्यकता होती है।

1. आत्मिक-जागृति कैसे प्राप्त करें – 2 इतिहास 7:14 चार सरल, संक्षिप्त कदम बताता है:
    1. स्वयं को दीन बनाएँ।
    2. प्रार्थना करें।
    3. मेरे दर्शन के खोजी बनें।
    4. अपनी बुरी चाल से फिरें।
2. आत्मिक-जागृति के परिणाम
    1. परमेश्वर आपकी प्राथनाएँ सुनेगा।
    2. वह आपके पाप क्षमा करेगा।
    3. वह आपके जीवनों को चंगा करेगा और शक्ति देगा।

क्या आप आत्मिक-जागृति के लिए प्यासे हैं? उसके लिए प्रार्थना कीजिए, और जोर देकर इसका प्रचार कीजिए।

चर्चा – आप अपने झुंड को आत्मिक-जागृति की प्यास के विषय में किस प्रकार बताएँगे? ऐसी व्यवहारिक योजनाएँ दीजिए जिन्हें कार्यान्वित किया जा सके।

## पाठ 4 – आत्मिक-जागृति के लिए प्रार्थना करना

आत्मिक-जागृति की तैयारी के लिए प्रार्थना आवश्यक है यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी। यहाँ प्रार्थना आत्मिक-जागृति के लिए एक साधारण निवेदन से बढ़कर है। इसका अर्थ स्वयं का परीक्षण और पापों का अंगीकार करना है (प्रका 2:23)। यह समय है कि हम प्रभु के सम्मुख अपनी टूटी प्रतिज्ञाओं को (सभो 5:1-6) और दूसरों के विरुद्ध की गई गलतियों को स्मरण करें (मत्ती 5:23,24)।

प्रार्थना सच्ची दीनता की ओर ले जाती है, क्योंकि परमेश्वर की उपस्थिति में हम अपनी नगण्यता और उसकी पवित्रता को समझते है (यशा 6:1-5)। यह हमारी असमर्थता की अभिव्यक्ति है तथा परमेश्वर की शक्ति और सामर्थ के लिए

गिड़गिड़ाना है (मत्ती 26:41)।

परमेश्वर ऐसे बलिदानों से प्रसन्न होता है, और उन पर उसकी आग निरपवाद रूप से उतरेगी (भजन 51:17-19)। जब एलिय्याह ने परमेश्वर की वेदी की मरम्मत की तब आग उतरी। जब यीशु ने प्रार्थना की, स्वर्ग खुल गया। जब आरम्भिक कलीसिया ने प्रार्थना की, वह स्थान हिल गया।

प्रार्थना पृथ्वी को प्रभावित करने हेतु पवित्र आत्मा की सामर्थ को मुक्त करती है। परमेश्वर अपने लोगों को तोड़ता है और बनाता है जब वे घुटनों पर प्रार्थना करते हैं।

चर्चा - ऊपर दिए गए पदों पर मनन कीजिए तथा हर एक उदाहरण में हुए प्रार्थना के प्रभावों पर टिप्पणी कीजिए।

## पाठ 5 - प्रेम : एक दोहरी सेवकाई

अपने स्वर्गारोहण से ठीक पहले यीशु ने पतरस से यह जाँच करने वाला प्रश्न किया, "क्या तू मुझसे प्रेम रखता है? (यूहन्ना 21:15-17)। मसीही सेवक के लिए प्रेम नींव और कँगूरे का पत्थर है।

जब यीशु ने उसे पहली बार बुलाया तो वह मनुष्यों का मछुआ बनने के लिए था (मत्ती 4:19)। अब वह उसे मनुष्यों का चरवाहा बनने की आज्ञा देता है (यूहन्ना 21:15-17)। आत्मा-जीतना तथा चरवाही करना दोनों के लिए आपको प्रेम की आवश्यकता है। एक प्रेम खोए हुओं के लिए है और दूसरा प्रेम बचाए हुओं के लिए है। अवश्य है कि आत्माओं को बचाएँ तथा उनका पोषण करें!

चर्चा - खोए हुओं के लिए अपने प्रेम को व्यक्त करने के कुछ व्यावहारिक तरीके कौन-से हैं? तथा बचाए हुए लोगों के लिए कौन-से हैं?

## पाठ 6 - सार्वजनिक सेवकाई

चरवाहे का सबसे बड़ा विशेषाधिकार, खड़े होकर सुसमाचार का प्रचार करना है। इसमें उसका अध्ययन और अनुभवों के साथ तथा परमेश्वर के अभिषेक की भी आवश्यकता होगी कि वह पापियों के मन-परिवर्तन और विश्वासियों के दृढ़ किए जाने के लिए प्रभावकारी ठहरे।

- उसे स्मरण रखना होगा कि उसे लोगों को परमेश्वर की सम्पूर्ण मनसा बतानी है जिसमें सुसमाचार-प्रचार, बाइबल सिद्धान्त, शिक्षा, फटकार, प्रोत्साहन और चेतावनियाँ भी होंगी (प्रेरि 20:27)।
- उसे सार्वजनिक रूप से प्रार्थना करना सीखना होगा और यह मात्र गुप्त स्थान में अधिकाधिक निजी प्रार्थना करने के द्वारा ही सीखा जा सकता है।

पास्तरीय प्रार्थना में वह कलीसिया को परमेश्वर की उपस्थिति में, परम आराधना के वातावरण में उठाता है।

- उसे पवित्र शास्त्र को साफ-साफ, आदरपूर्वक और सुस्पष्ट रीति से पढ़ना सीखना चाहिए, ताकि सभी लोग उसे समझ सके (नहेमा 8:8)।
- उसे आज्ञा दी गई है कि "परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली करो"–ऐसे उपदेश तथा बाइबल की शिक्षा देकर जो सुनने वालों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं के लिए लागू हो सकें (प्रेरि 20:28)।
- उसे झूठी शिक्षाओं और झूठे शिक्षकों से अपने झुंड की रक्षा करनी है, (प्रेरि 20:29,30), तथा उसकी जिम्मेवारी है कि अपने झुंड के गरीब लोगों की सहायता करे (प्रेरि 11:29,30)।
- उसकी यह विशेष भूमिका है कि अपने लोगों की खोए हुओं तथा कलीसियाहीन स्थानों तक पहुँचने के लिए अगुवाई करे।
- उसकी जिम्मेवारी है कि आराधना के अन्त में लोगों पर परमेश्वर की आशीष को व्यक्त करे (गिनती 6:23-26; प्रका 1:4,5)।

दूसरा कुरिन्थियों 2:16 में उठाए गए गम्भीर प्रश्न "इन बातों के योग्य कौन है?" का विजयी उत्तर दूसरा कुरिन्थियों 3:5 में है–"हमारी योग्यता परमेश्वर की ओर से है।"

चर्चा - ऊपर दी गई जिम्मेवारियों में से कौन-सी जिम्मेवारी निभाना सबसे कठिन होगा? किसे आप सबसे अधिक महत्वपूर्ण मानते हैं?

## पाठ 7 - अपने जीवन और सेवकाई में सन्तुलन रखना

1. आपके व्यक्तिगत जीवन में संतुलन
   क. आवश्यक है कि प्रचारक जीवन की स्वास्थवर्धक आदतों को बनाये रखे, (जैसे कि भोजन, आराम इत्यादि के संबंध में), ताकि अपने शरीर तथा मन की देखभाल कर सके।
   ख. आवश्यक है कि आत्मिक अगुवे विश्वासयोग्यता के साथ अपने परिवार की आवश्यकताओं को पूरा करें और अपनी आर्थिक बातों में बुद्धिमत्ता बरतें (मत्ती6:24)।
   ग. ठीक वैसे ही जैसे यीशु बुद्धि और शरीर में, आत्मिक और सामाजिक रीति से बढ़ता गया वैसे ही आत्मिक अगुवों को भी बढ़ना चाहिये (लूका 2:52)।
2. आपके प्रचार करने और शिक्षा देने में संतुलन: परमेश्वर की संपूर्ण मनसा का प्रचार कीजिये (प्रेरि 20:27)। आवश्यक है कि हम पवित्रशास्त्र

में दिये गये परमेश्वर के संपूर्ण प्रकाशन से शिक्षा दे ताकि हम स्वयं परमेश्वर के वचन को तोड़ना-मरोड़ना ना करें।

क. परमेश्वर के प्रेम और उसकी उस पवित्रता के बारे में प्रचार करें जो पाप को सहन नहीं करती; स्वर्ग के बारे में और नरक के बारे में भी प्रचार करें; परमेश्वर के साथ निकटता की चाल चलने के बारे में और उसकी सेवा करने के व्यावाहारिक तरीकों के बारे में भी प्रचार करें; आत्मिक जागृति के बारे में और सुसमाचार प्रचार के बारे में भी प्रचार करें; इत्यादि।

ख. यह सहायक होगा कि आप अपने प्रचार किए गए सारे उपदेशों के विषयों की एक सूची अपने पास रखें और आगे के अनेक महीनों के लिए पहले से ही प्रचार की अनुक्रमणिका बना लें। आपका मस्तिष्क और आपका हृदय जानकारी और सामर्थ प्राप्त करता रहेगा, और आप परमेश्वर की समृद्ध मनसा में से सच्चाइयाँ छोड़े जाने से सावधान रखे जाओगे।

अभ्यास-कार्य - तीन महीने के समय के लिए उपदेश के विषयों की एक अस्थायी सूची बनाइए।

## पाठ 8 - नियतकालिक (समय-समय पर) मूल्यांकन

आत्मपरीक्षण और मूल्यांकन के लिए महीने में एक दिन, और वर्ष में एक या दो बार दो-एक दिन निर्धारित रखना अच्छा है। क्या आप अपने लक्ष्यों को पूर्ण कर पा रहे हैं? क्या आप फल देख रहे हैं? सफलता और आशीष हमें बचे हुए कार्य की मात्रा के प्रति अंधा बना सकती है तथा आकस्मिक विपदा अब तक की गई प्रगति को भी भूला सकती है। सेवकाई काल के स्पष्ट बोध के लिए रुक जाना उपयोगी मूल्यांकन की अनुमति देगा। त्रुटियों को सुधारने की आवश्यकता होगी। प्रेरित यूहन्ना ने भी दो बार स्वर्गदूत की आराधना करने की गलती की थी और उसे सुधारा गया (प्रका 19:10, 22:8,9)-और प्रथाएँ बदल गईं।

यीशु ने कहा, "अलग हो जाओ"।

चर्चा - वे कौन से लक्ष्य हैं जिनके लिए आपको अपनी सेवकाई के आरम्भिक दिनों में प्रयासरत रहना चाहिए?

## पाठ 9 - परामर्श की सेवकाई

एक पासबान को इस योग्य होना चाहिए कि वह व्यक्तिगत रूप से लोगों से उनके उद्धार और उनकी व्यक्तिगत समस्याओं के विषय में बात कर सके। कभी-कभी उसे उनकी गवाहियों में की विसंगतियों को भी दिखाना चाहिए (मत्ती 18:15-17)।

- उसे व्यक्तिगत रीति से लोगों की भलाई के प्रति रूचि रखनी चाहिये, उनके

सुख-दु:ख में उनके साथ सहानुभूति प्रगट करनी चाहिये (रोमियों 12:15)।

- उसे दु:खित और शोकित लोगों को सांत्वना देना सीखना चाहिए।
- उसे अपने लोगों के व्यक्तिगत जीवनों में प्रवेश करना तथा उनके परिवार का सदस्य बनना चाहिए (रोमि 12:15)।
- उसे यह स्मरण रखना होगा कि वह एक अत्यंत विशिष्ट रीति से, हर समय, इस पृथ्वी पर प्रभु यीशु का प्रतिनिधि है।

चर्चा - आपके क्षेत्र में कौन-कौन सी सामान्य घटनाएँ हैं जो मसीही परामर्श और सहायता के लिए अच्छे अवसर प्रदान करती है?

## पाठ 10 - सहभागिता को बढ़ावा देना

सहभागिता हमारे प्रभु यीशु मसीह के और उसके परिवार के साथ के घनिष्ठ पारिवारिक संबंध पर आधारित होती है। मसीहियों को आवश्यक है कि वे एक साथ रहें, मिलकर बातें करें, मिलकर प्रार्थना करें, एक साथ गीत गाएँ, मिलकर हँसें, मिलकर रोएँ और सहभागिता करें (1 यूहन्ना 1:7; 1:3)।

1. सहभागिता का उद्देश्य
    1. सभाएँ और साथ भोजन करने के आनन्दित अवसरों के द्वारा एक दूसरे को दृढ़ करना– पुरुषों को एक साथ भोजन करने, एक संध्या महिलाओं को आपस में विचारों का आदान-प्रदान करने, जवानों को खेल-कूद करने एकत्रित करना चाहिए–और इन सबमें परमेश्वर के वचन के मनन/अध्ययन के लिए स्थान हो। इस के द्वारा मसीही लोग दृढ़ होंगे और बाहरी लोग आकर्षित होंगे।
    2. जीवन की कठिन परिस्थितियों में एक-दूसरे को उत्साहित करना– हम यह तो नहीं बता सकते कि कब किस का हृदय दु:खी है, किन्तु हम बोझ को अवश्य ही हलका कर सकते हैं।
    3. सबकी भलाई के लिए अनुभवों को बताना– हमारी गवाही अन्य किसी व्यक्ति को हमारी भाँति गलती करने से रोक सकती है।
    4. प्रार्थना का उत्तर मिलने से होने वाले रोमांच को बाँटना (भजन 50:15)– यह निश्चय ही दूसरों को प्रार्थना करने प्रोत्साहित करेगा।
    5. रोने वालों के साथ रोना (रोमि 12:15)– जो शोकित हैं उन्हें आँसू, दु:ख और पीड़ा में सहभागिता दी जानी चाहिए।
    6. जो परमेश्वर से विमुख हो गया है उसे परमेश्वर के पास लौट आने के लिए समझाना।

2. मसीही सहभागिता के परिणाम
    1. हम ज्योति में चलना सीखते हैं (1 यूहन्ना 1:7)।
    2. हम दु:ख में सहभागी होना सीखते हैं (फिलि 3:10)।
    3. हम मिलकर सेवा करना सीखते हैं (कुलु 4:7)।
    4. हम एक-दूसरे को शान्ति देना सीखते हैं (1 थिस्स 4:18)।
    5. हम एक-दूसरे के लिए प्रार्थना करना सीखते हैं (1 थिस्स 5:25)।
    6. हम एक-दूसरे का बोझ उठाना सीखते हैं (गल 6:2)।
    7. हम आनन्द करने वालों के साथ आनन्द करना सीखते हैं (रोमि 12:15); आनन्द संपर्क से फैलने वाला होता है।
    8. हम प्रभु के लिए बढ़ते और चमकते है (2 पत 3:18)।

चर्चा - आपकी कलीसिया में कैसी सामाजिक सहभागिता सहायक होगी?

## पाठ 11 - सुसमाचार-प्रचारीय उपदेश

परमेश्वर के जन के लिए अपने उपदेशों में प्रयोग हेतु असीमित विषय उपलब्ध हैं। उसे अपने विषयों में सन्तुलन बनाए रखने के लिए सतर्क रहना चाहिए। उद्धार-विषयक उपदेशों की आवश्यकता नहीं हैं ऐसा मान लेने का खतरा हमेशा बना रहता है, और सारा ध्यान मात्र संतों में शोभा बढ़ाने में लगा दिया जाता है, नये संत बनाने में नहीं।

सच्चाई यह है कि लोग प्राय: स्थानीय कलीसिया के सदस्य तो रहते हैं किन्तु मसीह की देह अर्थात् सच्ची कलीसिया के अंग कभी बने ही नहीं होते। किन्तु उद्धार वास्तविक है और उसके बगैर मनुष्य अनन्त-काल के लिए खोया हुआ है। उद्धार न पाए हुए सदस्यों से बनी कलीसिया में जीवन नहीं होगा, संदेश नहीं होगा, परिवर्तनकारी सामर्थ नहीं होगी।

कलीसिया के अगुआ को यहेजकेल के वे गम्भीर वचन अवश्य स्मरण रखने चाहिए जो चेतावनी देने में असफल रहे पहरेदार के विषय में कहे गए हैं (यहेज 33:6)।

अभ्यास-कार्य - एक सुसमाचार-प्रचारीय उपदेश के लिए उपयुक्त बाइबल पाठ और विषयों की सूचि बनाइए।

## पाठ 12 - उद्धार का आश्वासन

यदि आपके झुंड में किसी एक व्यक्ति को संदेह हो कि वह वास्तव में बचाया हुआ है अथवा नहीं, तो क्या?

यदि एक विश्वासी को दूसरों की आत्मिक सहायता करनी हो तो उसे उद्धार का

आश्वासन होना आवश्यक है। यह आश्वासन होने का अर्थ ऐसा सम्पूर्ण भरोसा होना है कि हम बचाए हुए हैं और यदि हम अचानक मर जाते हैं तो हम तुरन्त स्वर्ग जाएँगे (यूहन्ना 10:28,29)।

1. उद्धार के आश्वासन का आधार
    1. पवित्र आत्मा की गवाही (रोमि 8:16; गल 4:6)।
    2. परमेश्वर का वचन - 1 यूहन्ना 5:10,13; यूहन्ना 5:24; रोमि 10:13। शैतान से कहिए: "परमेश्वर का वचन कहता है कि यदि मैं यीशु मसीह पर विश्वास करता हूँ तो मेरे पास अनन्त जीवन है। मैंने ..... (तिथि बताइए) के दिन यीशु पर विश्वास किया, इसलिए मेरे पास अनन्त जीवन है। मैं बचाया हुआ हूँ। मेरे पाप क्षमा किए गए हैं। मैं स्वर्ग जाने के मार्ग पर हूँ।"
    3. बदला हुआ जीवन (1 यूहन्ना 3:14; 2 कुरि 5:17)।
2. उद्धार के आश्वासन में रुकावटें
    1. परमेश्वर के वचन पर भरोसा रखने में असफलता।
    2. सांसारिकता।
    3. पवित्र आत्मा की परिपूर्णता की कमी (यूहन्ना 7:37-39)।
    4. पाप और परमेश्वर से दूर चले जाना (1 यूहन्ना 1:9)।

सावधानी : लोगों को यह विश्वास दिलाने में कि वे बचाए गए हैं, सावधान रहिए। यह पवित्र आत्मा का कार्य है जो हृदय को जानता और जाँचता है।

अभ्यास-कार्य - दो-दो करके विद्यार्थी एक दूसरे से वार्तालाप करें; एक अनिश्चियी विश्वासी की भूमिका निभाए और दूसरा उसे परमेश्वर के वचन से आश्वासन दिलाए।

## पाठ 13 - नए उद्धार पाए हुओं को शिष्य बनाना

नया विश्वासी मसीह में एक शिशु होता है और उसकी कोमल प्रेमपूर्ण देखभाल होनी चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे संसार में नये जन्मे नन्हे बालक की होती है।

नये उद्धार पाए हुए व्यक्ति के जीवन का पहला सप्ताह अत्यंत महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि शैतान उसके हृदय में शंकाएँ उत्पन्न करने का हर संभव प्रयास करेगा। प्रतिदिन उससे मिलिए और एकसाथ परमेश्वर का वचन पढ़िए और प्रार्थना कीजिए।

उसके लिए अवसर तैयार कीजिए कि वह अपने इस नये विश्वास को बता सके, यह उसे दृढ़ बनाएगा और वह अपने उद्धार न पाए मित्रों के लिए एक प्रभावकारी साक्षी होगा।

निश्चय ही आपके डिनॉमिनेशन में नये विश्वासियों को बपतिस्मा के लिए तैयार

करने के लिए धार्मिक सिद्धान्तों के अनुकूल पाठ्यक्रम (कैटिकिज़्म् कोर्स) होगा। विश्वास का अंगीकार करने के बाद तुरन्त इन पाठों को आरम्भ कीजिए।

अवश्य है कि अपरिपक्व मसीही को परमेश्वर के वचन से पूरी तरह भरपूर कर दिया जाए–यही वह वास्तविक दूध है जिससे वह बढ़ सकेगा (1 पत 2:2)। सुनिश्चित कीजिए कि वह किसी बाइबल अध्ययन का सदस्य बन जाए।

यहाँ एक अच्छा अवसर है कि बड़े भाई/छोटे भाई अथवा बड़ी बहन/छोटी बहन की जोड़ियाँ बनाई जाएँ। सावधानी पूर्वक नये विश्वासी को एक परिपक्व, प्रेमी (समझदार) मसीही के साथ जोड़िए, जो उसके साथ प्रार्थना करेगा/करेगी और उसे परमेश्वर के प्रेम की समृद्धि में ले जाएगा/जाएगी।

चर्चा – आप अपनी कलीसिया के अपरिपक्व मसीहियों को कैसे प्रोत्साहित कर सकते हैं? कैसे आप बड़े भाई/ छोटे भाई की जोड़ियाँ बना सकते हैं?

## पाठ 14 – गवाही क्यों दें?

पवित्र शास्त्र पाठ: मत्ती १०:३२-३३; रोमियों १०:९

1. मसीह को मुँह से अंगीकार करने (मनुष्यों के सामने मानने) की आवश्यकता:
    1. मसीह ने इसकी आज्ञा दी है (मत्ती 10:32,33)।
    2. यह हमारे अपने जीवन में सहायता और शक्ति का स्रोत है। एक गवाही देने वाला मसीही परमेश्वर से दूर जाए यह सम्भव नहीं है।
    3. इससे अनेक समस्याओं का समाधान होता है। दूसरे लोग जान जाते हैं कि आप किसके पक्ष में है, और आपकी स्पष्टवादिता के लिए वे आपका सम्मान करते हैं।
    4. सांसारिक स्थानों पर जाने की परीक्षाएँ रुक जाती हैं।
    5. जो कुछ मसीह ने आपके लिए किया है उसके लिए यह आवश्यक है कि आप मसीह को मुँह से अंगीकार करें।
2. मसीह का अंगीकार करने के तरीके
    1. सार्वजनिक रूप से कलीसिया की सभाओं, प्रार्थना सभाओं इत्यादि में।
    2. व्यक्तिगत रूप से अपने प्रतिदिन की बातचीत के समय मित्रों, रिश्तेदारों और पड़ोसियों से। यह संभावत: सबसे कठिन फिर भी सबसे अधिक आवश्यक तरीका है।
    3. बपतिस्मा लेने, एक अच्छी कलीसिया का सदस्य बनने और प्रभु भोज में सहभागी होने के द्वारा सार्वजनिक रूप से।
    4. सार्वजनिक अंगीकार बार-बार किया जाना चाहिए (यिर्म 20:9)।

नोट: वह मसीही जीवन जिसका अंगीकार न किया गया हो वह आध्यात्मिक रीति से भूखा रहेगा और मर जाएगा!

चर्चा - आपकी जान पहचान में से कौन एक प्रभावशाली साक्षी है? दूसरों को गवाही देना आरंभ करने के लिए किस प्रकार प्रोत्साहित किया जा सकता है?

## पाठ 15 - आत्मा-जीतने वालों को काम में लगाना

परमेश्वर निरंतर बुलाता रहता है, "मैं किस को भेजूँ, और हमारी ओर से कौन जाएगा?" (यशा 6:8)। आज भी यह विलाप सत्य है, "मजदूर थोड़े हैं" (लूका 10:2)। कलीसिया में ऐसा प्रतीत होता है कि उन लोगों की संख्या बढ़ रही है जो दूसरों को भेजेंगे, परन्तु यह दु:खदायी बात है कि व्यक्तिगत आत्मा-जीतने वालों के दल में कमी हो रही है।

आप इस विषय में क्या कर सकते हैं? जब तक हर एक मसीही आत्मा-जीतने वाला नहीं हो जाता तब तक महान आदेश पूरा नहीं हो पायेगा। आप चार विशिष्ट कार्य कर सकते हैं:

1. अपने जीवन के द्वारा उदाहरण देकर अगुवाई कीजिए।
2. आत्मा-जीतने के महत्व पर उपदेशों की एक श्रृंखला प्रचार कीजिए (देखिये पाठ 13 और 15)।
3. औरों को प्रशिक्षण देकर सिखाइये कि वे आत्मा-जीतने वाले कैसे बन सकते हैं।
4. आत्मा-जीतने के विषय पर कोई अध्ययन पुस्तिका अथवा लेख ढूँढकर अपने लोगों में बाँटिए।

आप अपनी बुलाहट में असफल हो जाएँगे यदि आप अपने समर्थकों को बाहर-जहाँ-पापी-हैं उन सड़कों पर फैलाने में और हर एक को आत्मा-जीतने वाला बनाने में लापरवाही बरतेंगे।

अभ्यास-कार्य - हम अपने लोगों को गवाह बनने की शिक्षा उदाहरण के द्वारा कैसे दे सकते हैं? तीन विशिष्ट योजना तैयार कीजिए।

## पाठ 16 - आत्मा-जीतने के लिए तर्क

थोड़े ही है जो प्रचारक होने के लिए बुलाए गए हैं, परन्तु हर एक नया जन्म प्राप्त मसीही आत्मा-जीतने वाला बनने के लिए बुलाया गया है। आत्मा-जीतने के आनन्द में आप अपने लोगों की अगुवाई अवश्य कीजिए। "आत्मा-जीतने का कार्य, एक निश्चित व्यक्ति की एक निश्चित उद्धारकर्त्ता को ग्रहण करने के लिए एक निश्चित समय पर अगुवाई करने का एक निश्चित प्रयास है" - बिली सन्डे।

1. आत्मा-जीतने वाला बनने के कारण:
    1. आत्मा का मूल्य (मत्ती 8:35-38)।
    2. नरक की वास्तविकता (मत्ती 10:28; लूका 12:4-5)
    3. प्रत्येक पापी के लिए मसीह की क्रूस पर यातनाएँ (1 पतरस 3:18)
    4. इस संसार का खोखलापन और मूर्खता (1 पतरस 1:24-25)
    5. स्वर्ग में अपने परिवार के सारे सदस्य हो ऐसी इच्छा (1 थिस्स. 4:16-17
    6. स्वर्ग की अनेक महिमा (यूहन्ना 14:2-3)
    7. विश्वासयोग्य आत्मा-जीतने वालों को दिए जाने वाले व्यक्तिगत पुरस्कार (दानिय्येल 12:3)
2. व्यक्तिगत कार्यकर्ता बनने के लिए आवश्यक बातें
    1. अवश्य है कि वह स्वयं उद्धार पाया हुआ हो और अपने उद्धार के प्रति सुनिश्चित हो।
    2. अवश्य है कि वह शुद्ध पवित्र जीवन व्यतीत करे।
    3. अवश्य है कि वह प्रेम की आत्मा में कार्य करे।
    4. अवश्य है कि उसे बाइबल का उपयुक्त ज्ञान तथा उसे उपयोग में लाने की जानकारी हो।
    5. अवश्य है कि वह प्रार्थना का जन हो।
    6. अवश्य है कि वह पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो।
    7. अवश्य है कि उसमें खोई हुई आत्माओं के लिए दया/करुणा हो।

चर्चा - ऊपर लिखी प्रत्येक आवश्यकता क्यों महत्वपूर्ण है?

## पाठ 17 - गवाही कैसे दें

1. गवाही कैसे दें
    1. मसीह के गवाह के लिए अवश्य है कि वह स्वयं उद्धार पाया हुआ हो।
    2. अपने मन-परिवर्तन और अपने जीवन में आए बदलाव की सरल सच्चाइयों को बताइए।
    3. अपनी प्रार्थनाओं के मिले उत्तरों को बताइए (भजन 50:15)।
    4. बताइए कि किस प्रकार मसीह आपको सम्पूर्ण रूप से सन्तुष्ट करता है।
    5. पाप और परीक्षाओं पर पाई गई व्यक्तिगत विजय के विषय में बताइए।
    6. अपने मन-पसन्द बाइबल पदों के विषय में बताइए और यह कि किस प्रकार आज प्रात: पवित्र शास्त्र के विशिष्ट हिस्से के द्वारा परमेश्वर ने आपसे बातचीत की है।

7. अपने मित्रों को मसीह का सुसमाचार दीजिए। उन्हें मसीह के विषय में बताइए।

2. मसीह को स्वीकार करने में रुकावटें

1. मनुष्य का भय (2 तीमु 1:7; 1 यूहन्ना 4:18 फिलि 4:13)।
2. लज्जा (2 तीमु 1:8)।
3. अपवित्र जीवन (1 यूहन्ना 1:9)।

नोट : गवाही न देने से उत्पन्न खतरे के विषय में जानने के लिए यहेजकेल 33:8 पढ़िए।

अभ्यास-कार्य - अपने मन परिवर्तन की सच्चाइयों पर आधारित अपनी गवाही तैयार कीजिए और उसके द्वारा आपके जीवन में आए बदलाव का वर्णन कीजिए।

## पाठ 18 - गवाही देने की योजनाएँ

1. "चार आत्मिक नियम" यह संभवत: आज गवाही देने के लिए सर्वाधिक व्यापक रीति से प्रयोग किया जाने वाला साधन है और यह बहुत प्रभावकारी है।

2. शब्दरहित पुस्तक अपने काले, लाल, सफेद, सुनहरे और हरे पन्नों के साथ, विशेषकर बच्चों के मध्य, उत्तम सेवकाई करती है।

3. अपने हाथ की पांच उँगलियों का प्रयोग करते हुये सुसमाचार बताना यह बच्चों के सामने उद्धार की योजना रखने का तरीका है। इसमें किसी और सामग्री अथवा पुस्तक की आवश्यकता नहीं होती।

पहली उँगली - परमेश्वर आपसे प्रेम करता है (यूहन्ना 3:16)।

दूसरी उँगली - सबने पाप किया है (रोमियों 3:23)।

तीसरी उँगली - मसीह ने आपके पापों की कीमत चुकाने के लिए अपना प्राण दिया (1 कुरि 15:3-4)।

चौथी उँगली - विश्वास कीजिए कि मसीह आपके पापों के लिए मरा (यूहन्ना 1:12)।

पाँचवी उँगली - जब आप विश्वास करते है, आप अनन्त जीवन प्राप्त करते हैं (रोमि 6:23)।

4. रोमी रास्ता इस तरीके को उपयोग में लाना संभवत: बहुतेरे प्रचारक पसंद करेंगे। स्पष्टीकरण देने के साथ-साथ रोमियों के इन चार पदों की ओर संकेत कीजिए:

- मनुष्य की आवश्यकता - रोमियों 3:23
- पाप का दंड - रोमियों 6:23
- परमेश्वर का प्रयोजन - रोमियों 5:8
- मनुष्य का प्रत्युत्तर - रोमियों 10:9

5. रेखांकित किया हुआ नया नियम यह एक उत्तम माध्यम होगा कि आप किसी को अपने साथ उद्धार के विषय पर चुने हुए पद पढ़वाएँ। क्योंकि हो सकता है कि वह जिज्ञासु (खोजी) व्यक्ति उन पदों को रेखांकित करने के लिए किए गए आपके कष्ट की सराहना करे। एक कागज के टुकड़े पर संख्या '1' लिखकर उसे रोमियों 3:23 के पृष्ठ के ऊपरी हिस्से पर लगाइए। उस पद को एक रंगीन कलम से रेखांकित कर देने से उसे ढूँढ़ने में आसानी होगी। पृष्ठ के हाशिया में लिखिए: "क्रमांक '2' के लिए पृष्ठ संख्या .... देखें"; .... पर रोमियों 6:23 के पृष्ठ की संख्या लिखिए जहाँ आपने कागज का दूसरा टुकड़ा लगा रखा हो। आगे दिए गए पदों के लिए इसी प्रकार करते जाइए, हर एक पद को समझाइए:- यूहन्ना 1:12; 1 यूहन्ना 1:9; प्रका 3:20; 1 यूहन्ना 5:10-13 ।

6. उद्धार के लिये प्रार्थना यह प्रत्येक तरीके के अंत में दिये जाने वाले आमंत्रण का अनिवार्य भाग है। यह बहुत ही आवश्यक है कि हम एक खोजी व्यक्ति को अवसर प्रदान करें कि वह अपने पापों से पश्चाताप करे और यीशु को अपना प्रभु और उद्धारकर्ता होने का आमंत्रण दे।

7. यहां उद्धार के निमित्त की जाने वाली प्रार्थना का एक नमूना दिया जा रहा है: "प्रिय स्वर्गीय पिता मैं जानता हूं कि मैं पापी हूं और मुझे एक उद्धारकर्ता की आवश्यकता है। तूने यीशु को वह उद्धारकर्ता होने के लिये भेजा इसलिये मैं तेरा धन्यवाद करता हूं। मैं विश्वास करता हूं कि यीशु क्रूस पर मेरे पापों के लिये मरा और आज वह जीवित है क्योंकि वह मृत्यु में से जी उठा। अब मैं उसे अपना प्रभु और उद्धारकर्ता स्वीकार करता हूं। पिता, मेरा उद्धार करने के लिये धन्यवाद!"

अभ्यास-कार्य - आप निर्णय लीजिए कि इनमें से कौन-सी योजना सिखाना चाहते हैं। कक्षा द्वारा इन पदों पर अभ्यास कराइए। इसके बाद उन्हें आपस में जिज्ञासु (खोजी) और आत्मा-जीतने वाले का अभिनय करने कहिए। फिर अभिनय में भूमिका को बदल दीजिए। जिज्ञासु को आत्मा-जीतने वाले का अभिनय करने कहिए। इस बात का आग्रह कीजिए कि हर एक साक्षात्कार का अन्त एक निश्चित समर्पण की माँग करने और तत्पश्चात् क्षमा-याचना की प्रार्थना करने से हो।

## पाठ 19 - दान देने के विषय में शिक्षा

प्रभु के लिए देना आपके लोगों को बड़ा बोझ प्रतीत हो सकता है। नीचे दिए विचारों को उनके हृदय में बसा दीजिए ताकि यह कार्य उनके लिए आनन्द बन जाए।

हमें प्रभु के लिए किस प्रकार देना है?

1. व्यवस्थित रूप से (1 कुरि 16:2) - "सप्ताह के पहले दिन"। हमें वर्ष के हर एक सप्ताह दान देना है। अपने देने में अनुशासित/सुव्यवस्थित

बनो और परमेश्वर आपकी उदारता और विश्वास का प्रतिफल देगा।

2. व्यक्तिगत रीति से (1 कुरि 16:2)- "तुम में से हर एक"। यह मात्र घर के मुखिया के लिए नहीं है वरन् माता और बच्चों के लिए भी है। यह धनवान और गरीब दोनों के लिए है।
3. अनुपात में–"अपनी आमदनी के अनुसार"। हमें दशमांश के साथ-साथ दान भी देना चाहिए। परमेश्वर उन्हें बहुतायत से देता है जो उसे देते हैं।
4. खुशी से–(2 कुरि 9:7)–कुढ़-कुढ़कर नहीं।
5. त्यागपूर्ण रीति से–(2 कुरि 8:2)–उन्होंने अपने भारी कंगालपन में से दिया। उस विधवा ने दो दमड़ियाँ दे दी थीं जो कि उसकी सारी जीविका थी। परमेश्वर हमारी भेंट इससे तौलता है कि कितना बचा है, ना कि इससे कि हम कितना देते हैं।

प्रभु को उदारता से भेंट देने पर आशीषें प्राप्त होती हैं (प्रेरि 20:35; मत्ती 6:20; मलाकी 3:10)।

एक और सलाह : यदि आप स्वयं आनन्द से दान देने वाले नहीं हैं तो आपके लोग दशमांश नहीं देंगे।

चर्चा - क्या आपकी कलीसिया दान एकत्रित करने के लिए बाइबल में बताई गई पद्धतियों का पालन करती है? उनमें कौन-से सुधार लाने चाहिए?

## पाठ 20 - समझाने का कार्य कैसे करें

परमेश्वर अपने अनुग्रह द्वारा, पाप के आक्रमण से शुद्ध होने का मार्ग प्रदान करता है। यदि हम अपने पापों को मान लेते हैं तो परमेश्वर हमें शुद्ध करता है (1 यूहन्ना 1:9)। परन्तु यदि पाप को माना नहीं जाए तो हृदय कठोर हो जाने का खतरा बना रहता है। इब्रानियों 3:13 कहता है: "जिस दिन तक आज का दिन कहा जाता है, हर दिन एक दूसरे को समझाते रहो, ऐसा न हो कि तुम में से कोई जन पाप के छल में आकर कठोर हो जाए।" समझाने के द्वारा पाप को दूर रखना सहभागिता के लिए आवश्यक है।

जब अगुवे को किसी भाई में कोई कमी दिखाई दे, तो उसे उस भाई के प्रति चिन्तित होना चाहिए और उस भाई को समझाने से पीछे हटना या हिचकिचाना नहीं चाहिए। यह उसे कैसे करना चाहिए?

1. कृपालु आत्मा का होना आवश्यक है (लूका 9:54-56; 1 थिस्स 2:11; मत्ती 12:20)।
2. हमें पूरी नम्रता के साथ बात करनी चाहिए (रोमि 12:10; इफि 4:2)।
3. हमें परमेश्वर के वचन का उपयोग करना चाहिए (2 तीमु 3:16-4:2; कुलु

3:15)।

4. यह कार्य पवित्र आत्मा की अगुवाई में होना चाहिए (इफि 5:18-19)।
5. दूसरों को सुधारने का बाइबलीय तरीका 'अकेले में बातचीत करके समझाना' है (मत्ती 18:15)।

पौलुस ने तीन वर्ष तक, रात दिन आँसू बहा बहाकर हर एक को चेतावनी देना न छोड़ा (प्रेरि 20:31)।

चर्चा: किसी को कड़ाई से समझाने का परिणाम क्या होगा? सार्वजनिक रूप से समझाने का? इसे आप कैसे रोक सकते हैं?

## पाठ 21 - झुंड में व्याप्त पाप से कैसे निबटें

1. बाइबल का तरीका - मत्ती 18:15-17
   1. गलती करने वाले के पास अकेले ही जाकर उसे पश्चात्ताप् करने के लिए समझाइए।
   2. यदि वह न माने तो गवाही के तौर पर दो या तीन को साथ ले जाइए।
   3. यदि वह अपना हृदय तब भी कठोर बनाए रखे तो कलीसिया को उसकी सूचना दीजिए।
   4. यदि वह निरंतर विरोध करता रहे तो उसे पापी अन्यजातीय व्यक्ति माना जाए।
2. अनुशासन के कारण
   1. झूठे सिद्धान्त (तीतुस 1:13) - धर्मसंप्रदायों (कल्ट्स्) की झूठी शिक्षा कभी-कभी विश्वासियों को बहकाती है। इससे बचने के लिए सचेत करने की आवश्यकता है।
   2. खुला पाप (1 तीमु 5:20)।
   3. अनैतिकता (1 कुरि 5:1-5)।
3. पाप में पड़े भाई को कैसे सुधारें
   1. नम्रता से (1 कुरि 10:12)।
   2. निष्कपटता (सच्चाई) से (मत्ती 7:3-5)।
   3. प्रेम से (1 कुरि 13:4)।
   4. पवित्र शास्त्र का उपयोग करते हुए।
   5. गवाही और अनुभव के द्वारा।

अभ्यास-कार्य - क्या आपकी कलीसिया में कोई है जो पाप में जीवन व्यतीत कर रहा है? इस परिस्थिति से आप कैसे निबटेंगे?

## पाठ 22 – परमेश्वर से विमुख होने वालों से निपटना

अक्सर हमें कोई-न-कोई मिलता है जो कभी एक दृढ मसीही रहा था पर अब परमेश्वर से विमुख हो गया है। पहला कुरिन्थियों 10:12 और नीतिवचन 16:18 की गम्भीर चेतावनी को स्मरण रखिए। कोई कभी परमेश्वर से अचानक विमुख नहीं हो जाता। बहुत-सी छोटी-छोटी बातें धीरे-धीरे प्रवेश करके जीवन को नष्ट कर देती है।

1. परमेश्वर से विमुख होने के वास्तविक कारण
    1. प्रार्थना की कमी।
    2. बाइबल पढ़ने में कमी (2 तीमु 2:15)।
    3. कलीसिया की सहभागिता में जाने में कमी (इब्रा 10:25)।
    4. पवित्र आत्मा की आज्ञा मानने में कमी (इफि 4:30)।
    5. मसीह का अंगीकार करने में कमी (मत्ती 10:33)।
    6. ज्योति में चलने की कमी (1 यूहन्ना 1:7)।
2. परमेश्वर से विमूख होने के परिणाम
    1. सामर्थ, शान्ति, आनन्द, और खुशी की हानि।
    2. प्रतिदिन के जीवन में कुड़कुड़ाहट और अन्धकार छा जाएगा।
    3. पुरस्कारों की हानि और व्यक्ति "हानि उठाएगा"।
    4. कुछ लोग यह भी सिखाते हैं कि इससे आत्मा की भी हानि होती है।
3. वापस लौटने के लिए परमेश्वर का निमंत्रण (यिर्म ३:२२; होशे १४:४)

सच्चा मसीही परमेश्वर से विमुख होने से घृणा करता है : "मैं किसी ओछे काम पर चित्त न लगाऊँगा" (भजन 101:3)। मसीही जन को मसीह यीशु की ओर ताकते रहना आवश्यक है (इब्रा. 12:2)। पौलुस का लक्ष्य मसीह यीशु था (फिलि 3:14)।

अभ्यास-कार्य – अपने आप से पूछिए की क्या आपके क्षेत्र या समाज में कोई ऐसे मसीही हैं जो परमेश्वर से विमुख हो गए हैं? योजना बनाइए कि आप उन्हें मसीह के पास कैसे लौटा लाएँगे। अपनी कलीसिया के साथ मिलकर प्रार्थना कीजिए।

## पाठ 23 – तलाक

यदि आपकी कलीसिया के किसी परिवार को तलाक जैसी विपदा का खतरा हो तो क्या? समस्त संसार में तलाक पारिवारिक जीवन की प्रमुख समस्योंओ में से एक है। यह एक दु:खद विपदा है क्योंकि वह परिवार को नष्ट कर देती है जो समाज का आधार है। कलीसिया में यह एक दोहरी शोकजनक बात होती है क्योंकि मसीही परिवार परमेश्वर द्वारा स्थापित पवित्र संस्था है तथा मसीह का उसकी कलीसिया के साथ मिलन का प्रतीक है। यही कारण है कि शैतान विवाह पर आक्रमण करता है।

इसके परिणामस्वरूप मात्र दु:ख ही आते हैं: टूटे परिवार, घायल और टूटे हृदय,

बेघर बच्चे, अपराधी युवक, अकेलापन और आँसू।

तलाक के लिए पवित्र शास्त्र में मात्र एक ही आधार है और वह है व्यभिचार (मत्ती 19:9)। इसका अर्थ है अनैतिक शरीर संबंध, संभावत: लगातार, किसी तीसरे व्यक्ति के साथ। फिर भी तलाक की आज्ञा नहीं दी गई है, यह मात्र असामान्य और गम्भीर परिस्थितियों में ही स्वीकृत है।

जिन दम्पतियों के मध्य परेशानियाँ हैं उनमें मेल कराने के लिए आप जो कुछ कर सकते हैं, कीजिए। यहाँ कुछ सुझाव हैं:

1. यह स्पष्ट निर्देश दीजिए कि विवाह की वचनबद्धता सम्पूर्ण जीवन के लिए, 'जब तक मृत्यु हमें अलग न करे' तब तक के लिए है (मत्ती 19:6)। विवाह में परमेश्वर एक आश्चर्यकर्म करता है जब दो व्यक्ति एक होते हैं। इस बन्धन को तोड़ने का अधिकार मात्र परमेश्वर के पास है–मृत्यु द्वारा एक साथी को उठाकर।
2. यदि बच्चे हों तो उनकी भलाई की चिन्ता की जानी चाहिए क्योंकि वे सबसे अधिक दु:ख उठाते हैं।
3. इस बात की ओर संकेत कीजिए कि तलाक लेना अपनी सम्पूर्ण असफलता की सार्वजनिक स्वीकारोक्ति है।
4. प्रत्येक साथी से निवेदन कीजिए की वे प्रभु से और फिर एक दूसरे से संबंध ठीक करें। आपस में बात करके गलतियों को मान लेना और पश्चात्ताप करना किसी भी विवाह को पुन: स्थापित करेगा।

यदि मेलमिलाप हो जाए तो पत्नी और पति दोनो को गम्भीरता से अपनी 'दु:ख में सुख में ...जब तक मृत्यु हमें अलग न करे...' की प्रतिज्ञाओं को फिर से नया करने दीजिए। उन्हें प्रोत्साहित कीजिए कि वे निरंतर एक दूसरे के प्रति प्रेम-प्रदर्शन करते रहें; प्रत्येक को अधिकाधिक प्रेम की आवश्यकता होती है। उन्हें कायल कीजिए कि वे अवश्य ही परमेश्वर से निरंतर एक-दूसरे के लिए पवित्र प्रेम की माँग करें।

चर्चा - एक मसीही परिवार के सबसे महत्वपूर्ण घटक कौन-से हैं? घातक प्रभाव कौन-से हैं?

## पाठ 24- सताव

क. धर्मी जन सताये जायेंगे

1. पौलुस हमें बताता है कि जितने मसीह यीशु में धर्म का जीवन बिताना चाहते हैं वे सताये जायेंगे (2 तीमु. 3:12)।
2. यीशु ने हमें बताया है, ''संसार में तुम्हें क्लेश होता है....'' (यूहन्ना 16:33)।
3. पतरस जब अन्याय सहन करने के बारे में लिख रहा था तब उसने लिखा,

''तुम इसी के लिये बुलाए भी गये हो, क्योंकि मसीह भी तुम्हारे लिये दु:ख उठाकर तुम्हें एक आदर्श दे गया है कि तुम भी उसके पद-चिन्हों पर चलो'' (1 पतरस 2:21)।

ख. प्रेरित पौलुस ने हमें सताव की प्रतिक्रिया कैसे दें इसके विषय में वह तरीका बताता है जिसके द्वारा लोग मसीह के पास लाए जाते हैं।

1. रोमियों 12:9-21 में वह मसीहियों के लिए आवश्यक बात लिखता है: "बुराई से घृणा करो; भलाई में लगे रहो" (वचन 9)। वह हमें प्रोत्साहन देता है, "क्लेश में स्थिर रहो; प्रार्थना में नित्य लगे रहो" (वचन 12)।
2. पौलुस इससे अधिक यह भी कह देता है कि हम अपने सतानेवालों को आशीष दें (रोमियों 12:14)। इसका अर्थ ही है कि बदला लेने का, लोगों ने हम से जो बुरा किया उसके बदले में "जैसे को तैसा" देने का तो विचार भी नहीं आना चाहिए, क्योंकि यह उतना ही गलत होगा जितना कि बुराई का मूल कार्य था।
3. वह अंत में अपनी बात हमें यह प्रोत्साहन देते हुए समाप्त करता है कि हम बुराई को बुराई से न जीते, परन्तु भलाई से बुराई को जीत लें (रोमियों 12:21)।

ग. हम सताव की अपेक्षा कर सकते हैं - और उसके मध्य आनंद खोज सकते हैं।

1. क्या इस सब का अर्थ यह निकलता है कि हम सताव की खोज में रहें, नुकसान की ओर दौडते रहें? नहीं, परन्तु इसका अर्थ यह है कि हम उस पर विजय पा सकते हैं।
2. एक सिद्ध उदाहरण, सर्वदा के समान, मसीह यीशु है, जिसने अपनी इच्छा से क्रूस को अपनाया, मित्रों तथा विरोधियों के सामने एक अपराधी की मृत्यु मरते हुए सार्वजनिक लज्जा को सह लिया। यहां

- हम इतिहास की सर्वाधिक बड़ी हार-परमेश्वर के पुत्र की मृत्यु-को संसार की सब से बड़ी विजय में बदलते हुए देखते हैं जब वह कब्र में से विजयी रीति से जी उठा, उन सब के लिए उद्धार को प्राप्त करते हुए जो उस पर विश्वास करेंगे।
- वह आज भी इसी रीति से काम करता है, और हमें इस बात को समझने की आवश्यकता है, जैसे उसने समझा था, कि जिन्हों ने उसे मारा वे लोग ही वह कारण थे जिनके लिए उसने अपना रक्त बहाया और प्राण दिया।
- इसी प्रकार, जो आज कलीसिया को सताते हैं उन्हें मसीह यीशु की और उद्धार की अत्याधिक आवश्यकता है।

घ. आइए हम प्रार्थना करें कि परमेश्वर हम पर आनेवाले सताव का उपयोग बहुतों को अपनी ओर लाने के लिए करेगा, यहां तक की, तथा विशेषकर, उन्हें भी जो उसकी निंदा करते हैं और हमारी ओर मुक्के तानते और हमारे विरुद्ध एका करते हैं।

## पाठ 25 - जादू टोना

यह एक सामान्य घटना है कि माता-पिता अपने बच्चों को बपतिस्मा के लिए अथवा समर्पण के लिए कलीसिया में सामने लाते हैं और यदि उसकी छोटी-सी पोशाक उठ जाए तो देखा जा सकता है कि बच्चे की कमर में काला धागा बंधा है। क्या यह स्वीकार योग्य है? बिल्कुल भी नहीं! तावीज और पूजित वस्तुएँ जादू-टोना के हथियार हैं, और बाइबल यह बात अत्यधिक स्पष्ट करती है कि जादू-टोना अथवा टोटका का प्रयोग दुष्टात्माओं के साथ बुरे कामों में साझीदारी करना है। निर्ग 22:18; प्रेरि 19:18,19; गल 5:20 और प्रका 22:15 इन पदों को देखिए।

जहर के प्याले और जादू-टोना के भय ने, जब तक सुसमाचार की ज्योति नहीं आई थी तब तक अनेक देशों को अन्धकार में रखा था। आज भी शैतान लोगों को मनाने का प्रयास करता है कि वे उस पुराने मूर्तिपूजक अन्धकार में लौट जाएँ। परन्तु मसीह की अन्धकार के साथ कोई संगति नहीं होगी। जो लोग जादूकला–जादू-टोना और टोटका–करते हैं, उनका स्थान जलते हुए गन्धक की झील में होगा (प्रका 21:8)।

प्रत्येक व्यक्ति को चुनना होगा कि वह किसकी सेवा करेगा, परन्तु वह दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता। जब मसीह को उद्धारकर्त्ता और प्रभु माना जाए तो तावीज और पूजित वस्तुओं को अवश्य जला देना चाहिए।

चर्चा - आपके क्षेत्र में जादू-टोना की कौन-सी प्रथाएँ काम में लाई जाती हैं? इन्हें दूर करने के लिए आप क्या कर सकते हैं?

## पाठ 26 - मदिरापान के विरुद्ध प्रचार क्यों करें?

हर एक व्यक्ति इस बात को मानता है कि मदिरापान की आदत एक अभिशाप है जो परिवारों और जीवनों को बर्बाद कर देती है, किन्तु कुछ लोगों को लगता है कि शराब का थोड़ा बहुत प्रयोग करना अनुचित नहीं है। वे उद्धारकर्त्ता द्वारा काना के विवाह में पानी से दाखरस बनाने का (यूहन्ना 2:1-11) और पौलुस द्वारा तीमुथियुस को दवा के रूप में थोड़ा-थोड़ा दाखरस लेते रहने के निर्देश का (1 तीमु 5:23) हवाला देते हैं।

इन दोनों घटनाओं में यूनानी शब्द "वाइनॉस" का प्रयोग हुआ है जिसका अर्थ दाख (अंगूर) का रस है, जब कि मादक द्रव्य के लिए यूनानी शब्द "शेकर" है। इन दोनों शब्दों को लूका 1:15 में प्रयोग किया गया है–"क्योंकि वह (यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला) प्रभु के साम्हने महान होगा, और दाखरस (वाइनॉस) और मदिरा (शेकर) कभी न पीएगा"।

नीति 20:1; 23:29-35; यशा 28:7; होशे 4:11; 1 कुरि 6:10; गला 5:21

ये पद मदिरापान के प्रति परमेश्वर के दृष्टिकोण को दर्शाते हैं। बाइबल में मदिरा का पहला उल्लेख उत्पत्ति 9:21 में आया है, और वह नूह के नशे में होने को और उसके पुत्र हाम पर आई विपत्ति को बताता है।

मसीही जन को मदिरापान क्यों नहीं करना चाहिए के कारण

1. उसकी देह पवित्र आत्मा का मन्दिर है और उसे किसी भी प्रकार से अशुद्ध नहीं किया जाना चाहिए।
2. वह मसीह का गवाह है और यदि वह मदिरा का एक छोटा-सा घूँट भी पीता है तो एक कमजोर भाई उससे अधिक मात्रा में पीने की परीक्षा में पड़ सकता है।
3. वह अपने भाई का रखवाला है (उत्प 4:9) और उसकी जिम्मेवारी है कि पवित्र और सच्चा जीवन जीनें में अपने भाई की सहायता करे।

ऐसे अनेक कारण है कि क्यों हर एक को, भले ही वह मसीही हो या नहीं, मदिरापान से पूरी तरह दूर रहना चाहिए:

1. यह पैसों की महँगी फुजूलखर्ची है (व्यव 21:18-21; नीति 23:20)।
2. राजमार्ग (सड़क) पर दूसरों की सुरक्षा के लिए।
3. मदिरापान परिवार टूटने में सहायक होता है।

विलियम ग्लेड्स्टोन ने कहा है, "युद्ध, महामारी और अकाल से भी अधिक विनाशकारी मदिरा है।"

एक स्वाद दूसरे की ओर, एक प्याला दूसरे प्याले की ओर ले जाता है। अत: अनेक मसीही अगुवे इसी बात को पकड़े रहते हैं कि सभी परिस्थितियों में मदिरापान से पूर्णत: दूर रहें।

चर्चा - क्या इसके और भी दूसरे कारण हैं कि एक मसीही को मदिरापान क्यों नहीं करना चाहिए?

## पाठ 27 - दु:ख उठाने वाले मसीहियों की सहायता करना

अनेक अच्छे मसीही परमेश्वर की दोहाई दे रहे हैं, "क्यों? क्यों मुझे इस प्रकार दु:ख सहना जरूरी है?" कभी-कभी मित्र भी, अय्यूब के मित्रों की भाँति, निर्दयता से आलोचना करेंगे और कहेंगे कि यह उनके जीवन में किसी पाप के कारण है। जादू-टोना करने वाला किसी दूसरे पर दोष लगाएगा कि उसने इस कठोर या उग्र विपत्ति में पड़ें व्यक्ति पर शाप लगाया है। परन्तु एक सच्चे मसीही के लिए जीवन में एक योजना है, क्योंकि हर एक जीवन के लिए परमेश्वर के पास एक उद्देश्य है (रोमि 8:28)।

1. दु:ख क्यों आते हैं?
    1. कभी-कभी पाप के परिणाम स्वरूप (यूहन्ना 5:14; गिनती 12:10 में मरियम; 2 इति 16:12 में राजा आसा)।
    2. ताकि परमेश्वर के कार्य प्रकट किए जा सकें (यूहन्ना 9:2,3)।
    3. परमेश्वर की महिमा के लिए (यूहन्ना 11:4; फिलि 1:29)।
    4. शत्रु का कार्य–परमेश्वर की स्वीकृत इच्छा से–अय्यूब की पुस्तक में अय्यूब; (मरकुस 5:1-5; लूका 13:16; प्रेरि 10:38)। परमेश्वर आपकी बोझ उठाने की सीमा को, आप कितना सहन कर सकते हैं जानता है।
    5. ताड़ना - (परमेश्वर का अपनी) संतान को प्रशिक्षण देना (इब्रा 12:5-13)।
2. दु:ख के प्रति हमारी प्रतिक्रिया
    1. हो सकता है हम समर्पण के बदले विद्रोह करते हुए इसका तिरस्कार करें। ऐसी प्रवृत्ति कठोरता की ओर ले जाती है।
    2. हो सकता है हम दु:ख के बोझ से निर्बल हो जाएँ, परन्तु हमें ऐसा करने की आवश्यकता नहीं, क्योंकि परमेश्वर का अनुग्रह पर्याप्त है (2 कुरि 12:9)।
    3. हो सकता है हम उसे ग्रहण करें और सह भी लें, परन्तु उदासीनता से!
    4. हो सकता है कि हम आनन्द के साथ परमेश्वर की इच्छा के प्रति समर्पित रहें–यह विजय का उच्चतम् रूप है।

अभ्यास-कार्य - आपके झुंड में से ऐसे 3-7 व्यक्तियों के नाम की सूची बनाइए जो दु:ख उठा रहे हैं। योजना बनाइए कि इन में से प्रत्येक के लिए सेवकाई की जाए। इस सेवकाई में अपने झुंड में से अन्य सदस्यों को भी सम्मिलित कीजिए।

## पाठ 28 - बीमारों के लिए सेवकाई करना

मसीही बीमार हो जाते हैं, और प्रभु के सेवक को विश्वासयोग्यता से उनके लिए सेवकाई करनी चाहिए कि उन्हें परमेश्वर के प्रेम और उनके प्रति उसकी चिन्ता का आश्वासन देते रहें। हम बीमारी की समस्या के प्रति कुछ दृष्टिकोण पर विचार करेंगे।

1. प्रभु चंगाई के आश्चर्यकर्म करने में सक्षम है

बाइबल अनेक आश्चर्यकर्मों की सच्ची घटनाएँ बताती है। सबसे बड़ा आश्चर्यकर्म यीशु का पुनरुत्थान था परन्तु अन्य अनेक आश्चर्यकर्म किए गए थे। हमारा परमेश्वर आश्चर्यकर्म करने वाला परमेश्वर है। उसके अनेक नामों में से एक यहोवा राफी–"मैं तुम्हारा चंगा करने वाला यहोवा हूँ"–है (निर्ग 15:26)। भजन 103:3; मत्ती 19:26

लूका 18:27 देखिए। वही आज भी महान वैद्य है।

2. याकूब ५:१४-२० में बीमारों पर तेल मल कर प्रार्थना करना -
   1. बीमार अपनी कलीसिया के प्राचीनों को बुलाए।
   2. प्राचीन बीमार पर तेल मल कर विश्वास की प्रार्थना करें।
   3. याकूब कहता है कि आपस में एक दूसरे के सामने अपने-अपने पापों को मान लो।
3. कुछ बीमारियाँ ठीक नहीं होती
   1. प्रेरितों के काम 28 में पौलुस ने दो आश्चर्यकर्म किए। परन्तु उसने अपनी बीमारी से छुटकारे के लिए तीन बार प्रार्थना की और उसे अस्वीकार कर दिया गया (2 कुरि 12:7-10)। उस बीमारी का एक उद्देश्य पौलुस को नम्र बनाए रखना था।
   2. यदि हम हमेशा चंगाई प्राप्त करते रहेंगे तो कभी मरेंगे ही नहीं।

मसीही सेवक के लिए अवश्य है कि वह बीमार व्यक्ति को परमेश्वर के वचन के द्वारा दृढ़ करे। यह कितनी भयंकर बात होगी यदि उस बीमार व्यक्ति को पुनः तावीजों और पूजित वस्तुओं की ओर मुड़कर, शारीरिक रोग के साथ-साथ आत्मिक रोगी भी बनने दिया जाए।

मृत्यु शैय्या का वह दृश्य जिसमें एक संत परमेश्वर की इच्छा में शान्त एवं प्रसन्न है, एक आशीषमय प्रस्थान है। यीशु प्रतिज्ञा करता है, 'मेरा बल पर्याप्त है' बीमारी में भी!

चर्चा - बीमारों को सांत्वना देने वाले कुछ शास्त्र-वचन कौन-कौन से हैं?

## पाठ 29 - मृत्यु के समय की सेवकाई

जीवन अल्प एवं नाशवान है। यह आज है तो कल नहीं होगा। इस पृथ्वी पर पैदा हुए सारे लोगों में से केवल हनोक और एलिय्याह ही मृत्यु से बचे। आज जीवित सभी लोगों में से हर एक मरेगा, केवल प्रभु की उन सन्तानों को छोड़कर जो कलीसिया के ऊपर उठाए जाने के समय उससे हवा में भेंट करेंगे। इब्रानियों 9:27 पूर्णतः सत्य है।

जब कलीसियाई सदस्यों में मृत्यु आती है तो मसीही सेवक पर भारी जिम्मेवारी आती है। परिवार के सदस्य तथा मित्रगण बहुत ही शोक में होते हैं, क्योंकि बिछड़ना हमेशा दुःखदाई होता है। ऐसे में विश्वासियों को संगठित किया जाना चाहिए कि वे विलाप करने वालों के साथ समय व्यतीत करें; उनके लिए भोजन की व्यवस्था करें; मृत शरीर को गाड़े जाने के लिए तैयार करने में और कब्र की तैयारी में सहयोग दें। रोने वालों के साथ रोना चाहिए ताकि टूटे हृदयवालों के प्रति मसीह की दया दिखाई जाए।

यदि मरने वाला व्यक्ति विश्वासी रहा हो तो दु:खित संबंधियों को सांत्वना देना बहुत आसान होता है क्योंकि उस प्रिय की आत्मा शान्ति और आनन्द प्राप्त कर चुकी है। सचमुच मसीह की संगति में रहना इस संसार द्वारा दी जा सकने वाली किसी भी बात से अधिक अच्छा है। बिछड़ने के दु:ख के बावजूद शव-यात्रा एक उत्सव-स्वरूप होनी चाहिए।

मृत्यु के समय एक मसीही अगुवे को बड़ी दृढ़ता से उस परिवार को किसी भी मूर्तिपूजक प्रथा की ओर वापस जाने से रोकना चाहिए। आत्माओं के प्रति विलाप करना, शव के साथ धन संबंधी वस्तुएँ दफनाना, मदिरापान तथा अन्ध-विश्वास से जुड़ी रीति-रस्में निभाना इत्यादि का मसीही दफन क्रिया में कोई स्थान नहीं है। परन्तु अक्सर अविश्वासी रिश्तेदार और मित्र, मृत्यु के प्रति उनकी धारणाओं से जुड़ी निराशा और भय की बातों को बीच में लाने का भरसक प्रयास करते हैं। इसका दृढ़ता से विरोध कीजिए। मसीहियों को इस प्रकार एकत्रित कीजिए कि जब तक मृत शरीर को दफना नहीं दिया जाता वे वहाँ उपस्थित रहें तथा गाते और प्रार्थना करते हुए हर सम्भव सहायता करते रहें।

इस समय दिया जाने वाला संदेश सब के लिए इस बात की चेतावनी होनी चाहिए कि यह जीवन केवल क्षणिक है जिसमें हमें लम्बे, लम्बे अनन्तकाल के लिए तैयारी करनी होती है।

एक बुद्धिमान मनुष्य ने अपने शिष्यों से कहा कि मरने के एक दिन पहले वे अपनी मृत्यु की तैयारी कर लें। परन्तु उन्होंने आपत्ति प्रकट की, "हम तो कल भी मर सकते हैं।" "बिल्कुल सही!", उसने उत्तर दिया, "तो आज ही तैयारी करो।"

चर्चा - आपके कलीसिया के किसी सदस्य की मृत्यु होने पर ऐसे समय में सहायता करने के अन्य व्यावहारिक तरीके क्या-क्या हैं?

## पाठ 30 - मंगेतरों को परामर्श देना

मंगनी, समुदाय के सम्मुख यह घोषणा है कि वह जोड़ा शीघ्र ही, संभवत: एक वर्ष के भीतर, विवाह करने वाला है। यह समय एक-दूसरे को जानने का हो सकता है। परन्तु उन्हें इस स्वतंत्रता का फायदा नहीं उठाना चाहिए क्योंकि अभी उनका विवाह नहीं हुआ है। भविष्य की खुशी के लिए यह आवश्यक है कि विवाह के समय तक वे दोनों पवित्र (अछूते) रहें। विवाह की विशेष सुविधाओं को विवाह तक बचाकर रखना अवश्य है--ऐसा न हो कि प्रेम घृणा में बदल जाए और आपसी सम्मान पूरी तरह नष्ट हो जाए (2 शमू 13:15)।

कलीसिया के अगुवे के लिए यह उचित समय है कि उस जोड़े को इफिसियों 5 और तीतुस 2 का हवाला देते हुए एक मसीही परिवार स्थापित करने हेतु निर्देश

प्रदान करे। दोनों को सीखने दीजिए कि हर समस्या और गलतफहमी पर दोनों साथ-साथ प्रार्थना करें। उन्हें प्रोत्साहित कीजिए कि वे दोनों जीवनभर वचन और व्यवहार द्वारा एक-दूसरे के प्रति अपने प्रेम को प्रगट करें। विवाह सबसे पुरानी मानव संस्था है! उद्धार के निर्णय के बाद, एक युवा के लिए, जीवन साथी का चयन करना एक सबसे बड़ा निर्णय हो सकता है। यह आवश्यक है कि इस निर्णायक परिस्थिति में आत्मिक अगुवा दृढ़ परामर्श और सहारा दे।

सुखी विवाह के सिद्धान्त

1. मसीही केवल मसीहियों से ही विवाह कर सकते हैं (2 कुरि 6:14-17)।
2. बहुत अधिक प्रार्थना कीजिए और परमेश्वर की इच्छा जानिए।
3. विवाह के लिए तब तक ठहरे रहिए जब तक आप दूसरे व्यक्ति को पूरी तरह, उसके भले और बुरे गुणों को, नहीं जान लेते। जल्दबाजी में किए गए विवाह हानिकर होते हैं।
4. प्रेम के लिए रुके रहिए, मात्र मोह ही पर्याप्त नहीं है। विवाह सम्पूर्ण जीवन के लिए होता है; और एक सुखी परिवार का निर्माण करने के लिए ईश्वरीय प्रेम की आवश्यकता होती है।
5. उस समय तक रुके रहिए जब तक आपकी उम्र विवाह के योग्य नहीं हो जाती। विवाह वयस्कों के लिए होता है बच्चों के लिए नहीं, क्योंकि इसमें भारी जिम्मेवारियाँ शामिल होती हैं।
6. नैतिक समस्याओं का समाधान होने तक रुके रहिए। किसी व्यक्ति को सुधारने के उद्देश्य से उससे विवाह न कीजिए।
7. लड़की के माता-पिता की सहमति मिलने तक रुके रहिए। यह बहुत महत्वपूर्ण है।
8. आर्थिक स्थिरता, धन नहीं बल्कि कुछ सुरक्षा, का निश्चय होने तक रुके रहिए।
9. सार्वजनिक मसीही विवाह का ही आग्रह कीजिए। भाग जाने या गुप्त विवाह करने का विचार क्षण भर के लिए भी मत कीजिए। विवाह इतना पवित्र बन्धन है कि उसमें इन बातों का कोई स्थान नहीं।

अभ्यास-कार्य - "सुखी वैवाहिक जीवन व्यतीत करने के कदम" इस विषय पर जवान लोगों की कक्षा में सिखाने हेतु एक पाठ तैयार कीजिए।

## पाठ 31 - सन्तानहीन दम्पति को परामर्श कैसे दें

जब विवाहित दम्पति सन्तान की कामना करते है और वर्षों तक उन्हें कोई सन्तान नहीं होती तो उनकी निराशा बढ़ती जाती है और अक्सर उनके मसीही विजय को छीन

लेती है। वे अपने मित्रों को अपने छोटे बच्चों के हाथ पकड़कर और नन्हें बालकों को गोद में उठाकर कलीसिया में आते देखते हैं और पूछते हैं, "परमेश्वर ने हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर क्यों नहीं दिया?" कुछ कड़वाहट में भरकर कलीसिया छोड़ देते हैं। कुछ टोन्हों की ओर जाते हैं और अपनी जमा-पूँजी और परमेश्वर के साथ के अपने संबंध को खो देते है। सन्तानहीन दम्पतियों को आपकी प्रार्थना, आपके परामर्श और आपके सहारे की आवश्यकता होती है। वे अक्सर राहेल की तरह कहते हैं, "मुझे भी सन्तान दे नहीं तो मर जाऊँगी" (उत्प 30:1)।

हन्ना के बाँझपन के वर्ष और उसके पति का सहयोगी आचरण सन्तानहीन दम्पत्ति के लिए एक आदर्श और आशीष का कारण हो सकता है। हन्ना की कोई सन्तान नहीं थी परन्तु उसके पति एलकाना की विशेष निष्ठा पहले शमूएल 1:5 में दिखाई गई है। "वह हन्ना से प्रीति रखता था; तौभी यहोवा ने उसकी कोख बन्द कर रखी थी।" एक बाँझ स्त्री के पति को उसे उसके परिवार में वापस भेज देने का कोई अधिकार नहीं है। उसे निश्चय ही एलकाना के समान होना चाहिए।

आपकी कलीसिया की हन्नाओं का ध्यान इन सच्चाइयों की ओर ले जाइए:

1. वे अवश्य ही निरंतर प्रार्थना करती रहें, जैसे हन्ना करती थी। परमेश्वर ने किसी उद्देश्य से उसकी कोख बन्द कर दी थी और परमेश्वर ने ही अपने सही समय पर उसकी कोख खोली। उसने इब्राहीम और सारा को उस समय एक सन्तान दी जब वे सन्तान उत्पन्न करने के लिए बहुत बूढ़े हो चूके थे (उत्प 21:2)। भजन 113:9 एक अच्छा पद है!
2. धीरज धरें और प्रभु में आनन्दित रहें। राहेल की भाँति अपने पति को तंग न करें। उन आशीषों के लिए धन्यवाद दें जो आपके पास है और आपके चेहरे से आपका आनन्द प्रकट हो। उदासीन चेहरा केवल आपके पति के प्रेम को खत्म कर देगा और आपको एक दु:खित व्यक्ति बना देगा।
3. यदि प्रभु आपको सन्तान न दे, तौभी आप एक माँ का हृदय रखते हुए अन्य बच्चे के प्रति अपना प्रेम प्रगट कर सकती हैं। अनेक अनाथ और तिरस्कृत बच्चे हैं जिनकी चिन्ता करने की आवश्यकता है। बाइबल क्लब या सण्डे स्कूल चलाने के द्वारा आपको आत्मिक बच्चे पाने का सुअवसर प्राप्त होगा।

दबोरा "इस्राएल में माता" बनी थी (न्यायि 5:7)।

चर्चा - उन सेवकाइयों पर चर्चा कीजिए जो आपकी कलीसिया की सन्तानरहित माताएँ विकसित कर सकती हैं। आप उन्हें कैसे प्रोत्साहित करेंगे?

## पाठ 32 - विधवाओं के प्रति सेवकाई

संभवत: आपकी कलीसिया में कुछ वृद्ध महिलाएँ, विधवाएँ होंगी जो प्रभु से

प्रेम करती हैं और सभाओं में नियमित हैं। हो सकता है कि उन्हें लगे कि उन्हें कोई नहीं चाहता और वे अकेली हैं। उन्हें भी प्रभु की सेवा में अपने वरदानों का उपयोग करते रहना चाहिए (1 पत 4:10)। उनसे इन विधवाओं के विषय में बात कीजिए:

1. नाओमी अपने पोते की दाई बनी (रूत 4:16) और अपने विश्वास को आने वाली पीढ़ियों के लिए आगे बढ़ा सकी। नानी-दादी कलीसिया के छोटे बच्चों की चिन्ता करने में बहुत सहायक हो सकती है, और बदले में उन्हें प्यार मिलेगा।
2. सारपत नगर की विधवा ने परमेश्वर के जन की पहुनाई की (1 राजा 17)। वृद्ध महिलाएँ पहुनाई करने की बहुमूल्य सेवा कर सकती है।
3. हन्नाह 84 वर्ष की एक विधवा थी जो "उपवास और प्रार्थना कर करके रात दिन उपासना किया करती थी .... उसके विषय में बातें करने लगी" (लूका 2:36-38)। वृद्ध महिलाएँ अच्छी प्रार्थना योद्धा बन सकती हैं।
4. एक और विधवा थी जिसने "अपनी घटी में से अपनी सारी जीविका" परमेश्वर को देना ठीक समझा (लूका 21:4)।
5. संभवत: दोरकास भी, जो बहुतों को सांत्वना देती थी और उनके लिए कुरते और कपड़े बनाती थी, एक विधवा थी; क्योंकि जो स्त्रियाँ वहाँ रोती खड़ी थी वे सब विधवाएँ थीं (प्रेरि 9:39)। वह आवश्यकता में पड़े हुओं की सहायता करती थी।
6. अपने नाती तीमुथियुस को सेवकाई के लिए तैयार करने में नानी लोइस का भी योगदान था (2 तीमु 1:5)।

जीवन का यह समय अद्‌भुत रीति से फलदायक हो सकता है। केवल अनन्तकाल की बुलाहट का इन्तजार करते रहे इससे यह कितना भला है!

चर्चा - पवित्र शास्त्र के इन वचनों द्वारा विधवाओं के लिए प्रस्तुत की गई सेवकाइयों के सुझावों पर पुन: विचार कीजिए। क्या आप इनमें और भी कुछ जोड़ सकते हैं?

## पाठ 33 - उद्धार न पाए हुए जीवन-साथी के साथ मसीही विश्वासी

जिन दम्पतियों में एक ही साथी विश्वास में होता है ऐसों को विशेष देखभाल और प्रोत्साहन की आवश्यकता होती है। उनके लिए आपके परामर्श में निम्नलिखित बातें सम्मिलित होनी चाहिए।

1. विवाह एक पवित्र बंधन है जिसके द्वारा दो व्यक्ति एक देह होने के लिये एकसाथ जोड़े जाते हैं, तब भी जब उन में से एक जन विश्वासी और

दूसरा अविश्वसी हो (1 कुरिंथि 7:1213)।

2. विवाह बंधन में बने रहने के द्वारा, विश्वासी जन अपने अविश्वासी साथी और बच्चों के उद्धार की संभावना को बनाये रखता/रखती है (1 कुरिंथि 7:14)।
3. यह महत्वपूर्ण है कि हमारी परिस्थितियां जो भी हो हम उनमें परमेश्वर की महिमा करने के तरीकों को काम में लायें (1 कुरिंथि 7:15-17)।
4. जो मसीही अविश्वासि के साथ विवाह बंधन में बंधे हों वे पवित्र आत्मा की सामर्थ्य पर भरोसा कर सकते हैं कि उन्हें सामर्थ्य प्रदान करे कि वे मसीह की गवाही देते रहें और परमेश्वर की उपस्थिति के प्रकाश में जीवन जीयें (यूहन्ना 1:7)।
5. 1 पतरस 3:1-2 इस बात का भरोसा देता है कि अविश्वासी पति/पत्नी अपने विश्वासी पत्नी/पति के दृढ़ मसीही जीवन तथा पवित्रता के कारण जीते जा सकते हैं।

चर्चा - एक कलीसिया का अगुआ इन उद्धार न पाए हुए पति और पत्नियों के साथ मित्रता का संबंध कैसे बना सकता है? इन लोगों को कलीसिया और उसके लोगों की ओर–तथा मसीह की ओर–आकर्षित करने के लिए आप कौन-सी गतिविधियों का सुझाव दे सकते हैं?

## पाठ 34 - प्रभु के दिन का पालन करना

प्रभु का दिन, रविवार, यह नया नियम की वह सच्चाई है जिसका आधार पुराना नियम के सब्त के दिन में है।

1. सब्त का दिन और प्रभु का दिन
   1. सब्त का दिन सप्ताह का सातवाँ दिन है और प्रभु का दिन सप्ताह का प्रथम दिन है (प्रेरितों 20:7)।
   2. सब्त का दिन परमेश्वर के द्वारा सृष्टि की रचना करने के बाद लिए गये विश्राम का स्मरण-दिवस है जबकि प्रभु का दिन मसीह के पुनरुत्थान का स्मरणोत्सव मनाना है, जो सप्ताह के पहले दिन अर्थात् रविवार के दिन हुआ था (मत्ती 28:1-7)।
   3. पेन्तेकुस्त का दिन, जब विश्वासियों पर पवित्र आत्मा उतरा वह दिन रविवार था।
2. सब्त के दिन को मनाना
   1. चौथी आज्ञा है कि सब्त को स्मरण रखा जाये और विश्राम दिवस के रूप में पवित्र माना जाये (निर्गमन 20:8)।

2. यीशु ने सिखाया कि सब्त का दिन मनुष्य के लिये बनाया गया था। दूसरे शब्दों में यह कि सब्त को मनाना हमारे लिये आशीष होना है, बोझ नहीं होना है (मरकुस 2:22-28)।
3. विश्वासी होने के नाते, हम मसीह में स्वतंत्र किये गये हैं, हमारा न्याय इस बात से नहीं होना है कि हम सब्त के दिन को कैसे मनाते हैं (कुलुस्सियों 2:16)।

3. प्रभु के दिन को मनाना
1. इसे ऐसा दिन बनाइये जो प्रभु का आदर करता हो; विश्वासियों के साथ प्रार्थना और स्तुति-आराधना करने तथा रोटी तोड़ने का विशेष दिन बनाइये (प्रेरितों 20:7)।
2. यह वह दिन हो जब हम अपनी भेटें और दशमांश एकत्रित करें (2 कुरिन्थियों 16:2)।
3. यह दिन परमेश्वर की प्रसन्नता का दिन है। इस दिन बीमारों को मिलने जाइए और परमेश्वर के नाम से दया के अन्य कार्य कीजिए।
4. इसलिये कि रविवार का दिन अनेक पास्टर्स के लिये बहुत अधिक सेवकाई का दिन हो जाता है, कुछ एक अपने सब्त के विश्राम के लिये सप्ताह का कोई अन्य दिन रखते हैं।

चर्चा - यीशु का मत्ती 12:8 में (सब्त के दिन का प्रभु) से क्या अर्थ है?

उत्पत्ति की पुस्तक में सृष्टि के वर्णन में पहले प्रत्येक छः दिनों के लिये ''सांझ हुई फिर भोर हुआ'' का उल्लेख है। सातवें दिन अर्थात् विश्राम के दिन के लिये सांझ और भोर नहीं हुई। यह बात हमें विश्राम के बारे में और परमेश्वर अपनी सृष्टि का अनंतकाल में आनंद उठा रहा है इसके बारे में क्या सुझाव देती है?

## पाठ 35 - पितृ-दिवस

परमेश्वर ने पति को घर के मुखिया के रूप में रखा है (उत्प 18:19 इफि 5:23)। मसीही पिताओं को प्रोत्साहन की आवश्यकता होती है कि वे अपने परिवार का याजक होने की जिम्मेवारी को निभा सकें। क्यों न कलीसिया के पिताओं को सम्मानित करने के लिए एक विशेष सभा का आयोजन किया जाए? इसे पहले से ही निर्धारित करके इसकी पूर्व-घोषणा कीजिए और सूचना दीजिए कि इस दिन बच्चे तथा वयस्क भी अपने-अपने पिता के साथ बैठेंगे। एक पिता को पवित्र शास्त्र से पढ़ने और दूसरे को प्रार्थना करने कहिए। आप श्रोताओं में से सबसे वृद्ध पिता को, सबसे जवान पिता को और सबसे अधिक बच्चोंवाले पिता को सम्मान दे सकते हैं।

उस दिन का संदेश मसीह को आदर देने वाले पिता के लिए बाइबलीय मानकों पर केन्द्रित होगा। वह अपनी पत्नी से प्रेम रखे (इफि 5:25); आरोग्य में, बीमारी में, निर्धनता में, समृद्धि में उससे प्रेम करता रहे। वह अपनी पत्नी के प्रति विश्वासयोग्य

रहे और दु:ख के समय उसे सांत्वना प्रदान करे (1 शमू 1:8)।

अवश्य है कि पिता बच्चों को प्रभु के लिए प्रशिक्षित और अनुशासित करने में सक्रिय साथी हो (नीति 22:6)। उसकी जिम्मेवारी है कि प्रतिदिन की पारिवारिक प्रार्थना के लिए पारिवारिक वेदी की स्थापना करे। वह जिम्मेवार है कि भोजन के समय आशीष माँगे। माता-पिता मिलकर प्रार्थना करेंगे और अपने बच्चों को छोटी उम्र में ही प्रभु के पास लाने का प्रयत्न करेंगे (मत्ती 19:13,14)।

उसे अपनी पत्नी और बच्चों से प्रेम रखना चाहिए, परन्तु उसे मसीह से और अधिक प्रेम रखना चाहिए। एक मसीही पिता अपने जीवन में मसीह को सदैव प्रथम स्थान देगा (लूका 14:26)।

अभ्यास-कार्य - पितृ-दिवस की आराधना के लिए उपयुक्त हो ऐसे संदेश के लिए विषयों की सूची बनाइए।

## पाठ 36 - मातृ-दिवस

अच्छी पत्नी और अच्छी माता परमेश्वर की ओर से अद्‌भुत वरदान होती है (नीति 31:10)। पत्नियों को सराहना और प्रशंसा की आवश्यकता होती है और कलीसिया को सुचिन्तित रहना चाहिए कि उनके द्वारा घर में की जाने वाली सेवकाई का तथा उनकी गवाही का सम्मान करे।

मातृ-सम्मान में आयोजित सभा में बच्चों द्वारा माता को समर्पित कोई गीत हो सकता है तथा किसी बड़े बच्चे द्वारा अपनी माता के लिए आदरवचन प्रस्तुत किए जा सकते हैं। प्रत्येक बच्चा अपनी माता को भेंट देने हेतु फूल ला सकता है। संदेश संभवत: बाइबल की किसी महिला पर आधारित हो सकता है।

अभ्यास-कार्य - अपनी कलीसिया के लिए मातृ-दिवस हेतु कार्यक्रम की योजना बनाइए। उसमें भाग लेने वालों के नामों की तथा प्रत्येक के द्वारा किए जाने वाले कार्यों की सूची बनाइए।

## पाठ 37 - पारिवारिक वेदी की स्थापना करना

एक सफल मसीही परिवार का रहस्य उसकी पारिवारिक वेदी होता है, जहाँ मसीह यीशु को घर का मुखिया माना जाता है, और परिवार उसके विषय में सीखने तथा उसकी आराधना करने एकत्रित होता है।

यदि आप पारिवारिक आराधना की पद्धति का वर्णन करते हुए मसीहियों से निवेदन करेंगे कि वे ऐसा करना आरम्भ करें, तो कुछ लोग तो आपकी बात समझ लेंगे, परन्तु अन्य लोग नहीं समझ पाएँगे कि उन्हें क्या करना है। क्यों न एक सभा में इसका प्रदर्शन किया जाए? एक परिवार को चुन लीजिए और उसके साथ मिलकर

पारिवारिक वेदी का एक उदाहरण तैयार कीजिए। वे किसी कोरस अथवा प्रचलित भक्ति-गीत के पद से आरम्भ कर सकते हैं। जो बच्चे पढ़ सकते हैं, वे बारी-बारी पवित्र शास्त्र पढ़ सकते हैं तथा छोटे बच्चे कोई मुखाग्र-पद सुना सकते हैं। संभवत: पिता पवित्र शास्त्र से पढ़े गए उस अँश पर कुछ टिप्पणी करेंगे तथा प्रार्थना द्वारा इस समय का समापन करेंगे। वह परिवार मंच पर से चला जाए तो पारिवारिक आराधना के लिए माता-पिता और बच्चों का एकत्रित होना कितना महत्वपूर्ण है इस पर एक छोटा संदेश दिया जा सकता है।

प्रदर्शन प्रस्तुत करने वाला परिवार दृढ़ होगा तथा अन्य परिवार प्रेरित होंगे कि वे भी अपने घरों में पारिवारिक आराधना आरम्भ करें।

परिवार के हर एक सदस्य के लिए यह कितना अधिक अंतर लाएगा!

अभ्यास-कार्य - कक्षा द्वारा पारिवारिक वेदी की सभा का प्रदर्शन कीजिए।

## पाठ 38 - पूर्ण परिवार को मसीह में लाना

सम्पूर्ण परिवारों को स्वर्ग की ओर निर्देशित करने की सेवकाई आपके लिए सबसे महत्वपूर्ण सेवकाइयों में से एक होगी। यह आप माता-पिता की ऐसी अगुवाई करते हुए करेंगे कि वे परमेश्वर के सत्य को अपने बच्चों तक पहुँचाने में उसके आज्ञाकारी रहेंगे। इस से संबंधित कुछ सुझाव नीचे दिए गए हैं :

1. माता-पिता के इस उत्तरदायित्व पर कि उन्हें अपने बच्चों को परमेश्वर के वचन से घेर कर रखना चाहिए, सार्वजनिक रूप से प्रचार कीजिए तथा निजी रूप से परामर्श प्रदान दीजिए। इसके लिए व्यवस्थाविवरण 6:6-9 और नीतिवचन 6:20-23, तथा भजन 119:11 भी, उपयुक्त पाठ हैं।
2. माता-पिता को प्रोत्साहित कीजिए कि वे अपने बच्चों के मसीही मित्रों के लिए अपने घर और अपने जीवन खुले रखें। उन्हें बताइए कि उनका उत्साही, निष्ठावान और सच्चे दिल से मसीही होना तथा कलीसिया में सहयोगी होना उनके बच्चों की खातिर कितना महत्वपूर्ण है। माता-पिता में परमेश्वर के प्रति प्रेम व्याप्त हो यह एक दृढ़ परिवार के लिए आवश्यक बातों में से एक बात है ।
3. अपनी कलीसिया को परिवार की ओर महत्वपूर्ण ध्यान देने वाली बनाए रखिए। विश्वासियों को प्रोत्साहित कीजिए कि वे दूसरे परिवारों के बच्चों के लिए प्रार्थना करें और उनकी सहायता करें। ऐसे कार्यक्रम बनाइए जो कि सभी वयस्क लोगों को कलीसिया के सारे बच्चों और जवानों से परिचित रखेंगे। परमेश्वर के लोगों को 'पीढ़ियों में मतभेद' (जनरेशन गैप) का शिकार नहीं बनना चाहिए।

4. व्ययस्क बच्चों के माता-पिता को दहेज की कठोर प्रथा से जुड़ी बुराइयों के विषय में शिक्षा दीजिए। अत्यधिक दहेज की माँग जब पवित्र विवाह को अनेक वर्षों तक असंभव बना देती है तो बहुत-से जवान पाप में पड़ जाते हैं।

बच्चे प्रभु की ओर से अद्‌भुत वरदान हैं और उन्हें उद्धारकर्ता के पास लाना आपकी कलीसिया के माता-पिता के लिए एक बड़े आनन्द की बात होगी, एक ऐसा आनन्द जो अनन्तकाल तक बना रहेगा।

चर्चा - ऊपर दिए गए चार बिन्दुओं में से प्रत्येक पर विचार कीजिए। क्या वे आपकी कलीसिया के लिए व्यावहारिक सहायता प्रदान करेंगे? क्या आप अन्य विचारों का भी सुझाव दे सकते हैं?

## पाठ 39 - अयाजकों को सेवा के लिए अग्रसर करना

बहुत संभव है कि आप अपनी कलीसिया में, नेतृत्व की क्षमताओं में सबसे अधिक योग्य व्यक्ति होंगे, और आपके सामने यह परीक्षा जरूर आएगी की कलीसिया का सारा भार अपने ही कन्धों पर उठाए रखे। परन्तु यह एक दु:खद, दु:खद गलती होगी। क्यों?

सर्वप्रथम 1 पतरस 4:10 पढ़िए। बिल्कुल स्पष्ट निर्देश है : "जिस को जो वरदान मिला है, वह उसे . . . एक दूसरे की सेवा में लगाए।" आपके सदस्यों के लिए अवश्य है कि प्रभु में बढ़ने हेतु वे अपने वरदानों का उपयोग करें और आपके लिए अवश्य है कि उन्हें प्रशिक्षित तथा प्रोत्साहित करें। एक जलाशय जिसमें पानी बाहर जाने के लिए कोई रास्ता न हो, उसका पानी गतिहीन हो जाता है। आपके अयाजक मसीहियों में से जीवित जल के सोते बहते रहने चाहिए।

एक सुसमाचार दल बनाइए। एक गीत का अगुवा तो दूसरा एकाकी गीत गाने वाला हो सकता है। एक व्यक्ति गिटार बजाने वाला हो सकता है तो दूसरा गवाही दे सकता है। अपनी आराधना सभा में उन्हें हिस्सा दीजिए। कुछेक को प्रार्थना समूह अथवा घरेलू बाइबल अध्ययन में अगुवाई करने कहिए। कुछ लोग संडे स्कूल की कक्षाओं में शिक्षा दे सकते हैं, दूसरे लोग सप्ताह भर बच्चों के क्लब का आयोजन कर सकते हैं। कठपुतली की सेवकाई विकसित कीजिए। और सबसे बढ़कर, उन्हें किसी को मसीह के पास लाने की कला सिखाइए।

चर्चा - उन अन्य तरीकों पर चर्चा कीजिए जिन के द्वारा आपके अयाजक सदस्यों को परमेश्वर के प्रति अपने प्रेम को उसकी सेवा में व्यक्त करने हेतु अग्रसर किया जाएगा।

# पाठ 40 - स्त्रियों के वरदानों का उपयोग करना

आपकी कलीसिया की स्त्रियों को प्रभु के कार्यों के मात्र दर्शक बनने नहीं देना चाहिए। उनके पास ऐसे वरदान हैं जो कलीसिया के लिए आशीष, प्रभु के लिए महिमा और उनके स्वयं की आत्माओं के लिए शक्ति उत्पन्न कर सकते हैं।

अपने झुंड की स्त्रियों के विषय में जानकारी उपलब्ध कीजिए। उन्हें नीचे लिखी सेवकाइयों में से एक के द्वारा अपने प्रभु की सेवा करने हेतु प्रेरित करने तथा तैयार करने के हर संभव प्रयास कीजिए।

1. स्त्रियों के मध्य -
    1. एक धर्मसेविका के रूप में बीमारों और शोकितों से भेंट करना।
    2. प्रार्थना समूह में अगुवाई करना या अपने घर में प्रार्थना सभा आयोजित करने की सेवा करना।
    3. बाइबल अध्ययन में अगुवाई करना।
    4. नये मसीहियों को शिष्यत्व में बढ़ाना, संभवत: एक बड़ी बहन/छोटी बहन की भूमिका निभाना।
2. बच्चों के मध्य -
    1. संडे स्कूल कक्षा में पढ़ाना।
    2. पड़ोस में बच्चों के लिए बाइबल अध्ययन क्लब चलाना।
3. घर में -
    1. अपने बच्चों को प्रभु का अनुकरण करने का प्रशिक्षण देना।
    2. साथी मसीहियों की, तथा अमसीहियों की भी, पहुनाई करना।
    3. अपने पति की सहयोगी बनना, जो बचाया हुआ है उसे प्रोत्साहित करना और जो बचाया हुआ नहीं है उसे मसीह तक लाने के प्रयास करना।

चर्चा - अपने झुंड की स्त्रियों के लिए आप और कौन-कौन सी सेवकाइयाँ जोड़ सकते हैं?

# 5

# पवित्र जीवन

## पवित्र सेवा के लिए तैयारी

ये पाठ पोर्टेबल स्कूल के सभी पाठ्यक्रमों में सबसे अधिक महत्वपूर्ण हो सकते है क्योंकि "जो मन में भरा है, वही मुँह पर आता है" (मत्ती 12:34)। केवल पवित्र जीवन ही आत्मिक फल उत्पन्न कर सकता है और मसीही कार्यकर्ता को उस हर एक बात के प्रति निरंतर सतर्क रहना चाहिए जो उसकी भीतरी विजय को छीन सकती है और उसकी गवाही को नष्ट कर सकती है। जब हम "दाखलता में बने रहते हैं" (यूहन्ना 15:1-17), तब पवित्र आत्मा हमें अपने पवित्र स्वभाव से भरता है। वही हमारे पवित्र जीवन के लिये स्रोत है।

इस पाठ्य-सामग्री का बहुत-सा भाग डगलस एल्बन की "100 बाइबल लेसन्स्", रेव्ह. आर. स्टैनली की "प्रीचर्स एण्ड पीपल्", और साथ ही डॉ. लिलियन स्टैनली की "दी आइडिएल वुमॅन" पुस्तकों से लिया गया है।

विषय-वस्तु


1. प्रभु का भय मानो
2. पवित्र आत्मा से परिपूर्ण जीवन
3. शैतान का सामना करो
4. प्रभु की इच्छा की खोज
5. मनन समय
6. अलगाव
7. चरवाहे का व्यक्तिगत जीवन
8. भीतरी प्रेरणाएँ
9. आत्मिक अगुवे की योग्यताएँ
10. व्यभिचार
11. परिवार में अगुवाई
12. केवल सत्य!
13. आर्थिक प्रबन्ध
14. अनुशासित अध्ययन
15. अपने देह को स्वस्थ रखिए
16. आलस्य
17. स्तुति
18. जब परीक्षाएँ आती हैं
19. अनुकरण करने वाले
20. विजय निश्चित है!

# पाठ 1 - प्रभु का भय मानो

सही और गलत प्रकार के भय होते हैं। "डरो मत" यह पवित्र शास्त्र का एक बहुमूल्य संदेश है जो लगभग 50 बार प्रयुक्त हुआ है और इसके अलग-अलग रूपों में यह 366 बार आया है। क्या प्रभु के वचन याद हैं, "मैं हूँ, डरो मत"? परन्तु प्रभु का भय होना एक ऐसी बात है जो हम सभी में होना अवश्य है। अय्यूब 28:28; भजन 19:9; 2 शमूएल 23:3; व्यवस्थाविवरण 6:13 इन वचनों को देखिए।

1. यहाँ कुछ ऐसी बातें हैं जिनसे हमें भयभीत नहीं होना चाहिए:
    1. मूरतें अथवा अन्य देवता (2 राजा 17:38)।
    2. मनुष्य (1 शमूएल 15:24; नीतिवचन 29:25)
    3. पृथ्वी पर की विपदाएँ, क्योंकि वे हमारे उद्धारकर्त्ता का लौटना निकट होने का प्रतीक हैं (लूका 21:25-28)।
    4. भविष्य में मिलने वाले दंड (इब्रा 10:27)।
    5. हमे 'भय' से भयभीत नहीं होना है। क्योंकि विश्वासी अपनी चिन्ताओं को प्रभु पर डाल देता है (1 पत 5:7)।

मात्र एक ही भय रह जाता है और वह प्रभु परमेश्वर का पवित्र भय मानना है।

2. प्रभु का भय क्या है?
    1. यह बुराई से घृणा करना है (नीति 8:13)।
    2. यह बुद्धि है (भजन 111:10)।
    3. यह धन है (नीति 15:16; यशा 33:6)।
    4. यह जीवन का सोता है (नीति 14:27)।
    5. यह शुद्ध है (भजन 19:9)।
    6. यह सदाकाल तक बना रहता है (भजन 19:9)।
    7. यह ईश्वरीय होता है (इब्रा 12:28)।
3. प्रभु का भय मानने के क्या परिणाम होते हैं?
    1. इससे प्रभु प्रसन्न होता है (भजन 147:11)।
    2. इसके होते हम परमेश्वर को भाते हैं (प्रेरि 10:35)।
    3. इसके होते प्रभु अपनी सन्तानों पर दया करता है (भजन 103:13)।
    4. यह आशीष लाता है (भजन 112:1)।
    5. यह बुराई से अलगाव लाता है (नीति 16:6)।
    6. यह मसीही संगति उत्पन्न करता है (मलाकी 3:16)।
    7. यह प्रार्थनाओं के उत्तर मिलना संभव कराता है (भजन 145:19)।
    8. यह लम्बी आयु प्रदान करता है (नीति 10:27)।

चर्चा - भयभीत हृदय की कमजोरी पर वियज पाने के तरीकों पर चर्चा कीजिए। फिर प्रभु का भय मानने की बुद्धिमानी पर चर्चा कीजिए।

# पाठ 2 - आत्मा से परिपूर्ण जीवन

पवित्र आत्मा प्रत्येक विश्वासी में निवास करता है (यूहन्ना 14:16-17); निश्चय ही हमें प्रोत्साहित किया गया है कि हम पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो (इफिसियों 5:8)। परन्तु संभव है कि पवित्र आत्मा निवास करता हो परन्तु उसके जीवन का संचालन न करता हो। वह निवासी हो सकता है परन्तु प्रधान नही। जैसे ही हम अपने जीवन का नियंत्रण आत्मा के हाथों में सौंप देते हैं, वह हमें अपने आप से अधिकाधिक परिपूर्ण करता है (लूका 11:13)। परिपूर्णता तब प्राप्त होती है जब विश्वासी सचेत रहते हुए पवित्र आत्मा को अपने जीवन में प्रत्येक छोटी-बड़ी बात पर प्रभुता करने वाला संपूर्ण नियंत्रक मान लेता है।

"परिपूर्ण होते जाओ" यह मूल यूनानी भाषा में आज्ञासूचक प्रगतिशील है। भरा जाना अवश्य ही नियमित एवं निरंतर होना चाहिए। प्रेरितों के काम 2:4 में प्रेरित पतरस आत्मा से परिपूर्ण किया गया, पुन: किया गया (प्रेरि 4:8), और पुन: किया गया (प्रेरि 4:31)। हर दिन एक नई परिपूर्णता की आवश्यकता होती है।

1. पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होने के लिए पहले से आवश्यक बातें
    1. अवश्य है कि हमारे पापों की क्षमा हुई हो (प्रेरि 2:38)।
    2. अवश्य है हम परमेश्वर की संतान हो गये हो (गल 4:6)
    3. अवश्य है कि हमें परिपूर्ण किए जाने की इच्छा हो और उसकी मांग करें (यूहन्ना 7:37-39 और यशा 44:3)।
    4. अवश्य है कि हम में विश्वास हो (यूहन्ना 7:39)।
    5. अवश्य है कि हम परमेश्वर के आज्ञाकारी हो (प्रेरि 5:32)।
    6. कभी कभी हमें प्रतीक्षा करनी होती है (लूका 24:49; प्रेरितों 1:4)।
    7. हमें पवित्र आत्मा के लिये प्रार्थना करनी चाहिये (लूका 11:13)।
    8. हमें उस सत्य को आत्मसात करना चाहिये (यूहन्ना 1:12)।
2. आत्मा से परिपूर्ण होने के परिणाम
    1. हमें गवाही देने की सामर्थ मिलेगी (प्रेरि 1:8)।
    2. हमें विजयी मसीही जीवन जीने की सामर्थ मिलेगी (प्रेरि 20:22-24)।
    3. प्रभु को महिमा प्राप्त होगी (यूहन्ना 16:14)।

निष्कर्ष - हम तालाब नहीं, नहर हैं। हमें छलकना चाहिए। आशीषों को व्यक्त करना अवश्य है। पवित्र आत्मा के कार्यों के बाइबलीय चित्रों पर ध्यान दीजिए :

1. अनंत जीवन के लिये उमड़ता हुआ सोता (यूहन्ना 4:14)।
2. जीवन के जल का सोता जो भीतर से छलकता है (यूहन्ना 7:37-39)।
3. पवित्र आत्मा हमारे मरनहार देह को जीवन देता है (रोमि 8:11)।

चर्चा - शायद कक्षा में कुछ लोगों ने यह जान लिया हो कि वे पवित्र आत्मा से

भरे जाने का अनुभव प्राप्त नहीं कर रहे हैं। अंगीकार और प्रार्थना का समय एक बड़ी आशीष का माध्यम बन सकता है।

## पाठ 3 – शैतान का सामना करना – 1 पतरस 5:8,9

हमें कभी भूलना नहीं चाहिए कि परमेश्वर की हर एक संतान पर शैतान आक्रमण करता है। यह पाठ उन आक्रमणों के वार बचाने के कुछ व्यावहारिक तरीके प्रस्तुत करेगा।

1. शैतान के मसीहियों पर आक्रमण करने के तरीके (2 कुरि 2:11)
    1. वह हमें आलसी बनाता है।
    2. वह हमें कर्त्तव्यों के भार से दबा देता है।
    3. वह हमें परेशानी, उदासिनता और दिवास्वप्न के द्वारा पीड़ित करता है।
    4. हमारी भावनाओं को ठेस पहुँचती है और हम अत्याधिक भावुक हो जाते हैं।
    5. हम आलोचना से सहत ही निरुत्साहित हो जाते है–हम भूल जाते हैं कि हमें आलोचना के लिए तैयार रहना चाहिए।
    6. हमारा उत्साह भंग हो जाता है हम निराश हो जाते हैं।
    7. हम आत्मिक घमंड की परीक्षा में हार जाते हैं।
2. शैतान का सामना कैसे करें
    1. समस्या को शैतान के आक्रमण के रूप में पहचानिए (याकूब 4:7)।
    2. सामना कीजिए; परमेश्वर के सारे हथियार धारण कीजिए (इफिसियों 6:10-18)।
    3. मसीह को पहन लीजिए (रोमि 13:14)।
    5. वचन का उपयोग कीजिए (मत्ती 4:4,7,10)।
    6. अपनी इच्छा शक्ति का प्रयोग करते हुए कहिए : "मैं तुझे चुनता हूं प्रभु! मेरे भीतर निवास करने वाले मसीह की सामर्थ द्वारा मैं प्रण करता हूँ कि मैं पाप पर विजय पाऊँगा और जयवंत होऊँगा।"
    7. प्रभु की सहायता और सामर्थ्य के लिये प्रार्थना कीजिए (इफि 6:18)।
    8. शैतान के द्वारा लगाये जाने वाले दोषों पर जयंवत होने के लिये मसीह के लहू पर भरोसा करें – "और वे मेम्ने के लोहू के कारण ... उस पर जयवंत हुए" (प्रका 12:11)।

चर्चा – आपको शैतान के आक्रमणों का कैसा अनुभव हुआ है? उसे हराने का सबसे प्रभावी माध्यम कौन-सा था?

# पाठ 4 - प्रभु की इच्छा की खोज

एक समस्या प्रत्येक मसीही के समक्ष आती है कि परमेश्वर की इच्छा निश्चित रूप से कैसे जान लें। परमेश्वर के लोगों में से हर एक जन के लिए एक ईश्वरीय योजना है; जो हमारे व्यक्तित्व, योग्यता, आवश्यकता और परिस्थिति के अनुकूल होती है (इफि 2:10)।

परमेश्वर की योजना जो आपके लिए है वह अत्यंत व्यक्तिगत है, वह मात्र आपके लिए है (भजन 32:8)।

- यह अत्यंत विवरणसहित है (भजन 37:23)।
- यह निश्चित और विशिष्ट है (यशा 30:21)।
- परमेश्वर चाहता है कि हम उसकी योजना के विषय में उससे पूछ-ताछ करें (भजन 143:8)। और प्रतिदिन के विवरण के लिए अत्यधिक प्रार्थना में लगे रहें।
- हर एक विश्वासी के लिए परमेश्वर की योजना सर्वदा भली, भावती और सिद्ध होती है (रोमि 12:2)।

1. परमेश्वर की योजना में सर्वदा ये विशेषताएँ सम्मिलित होती हैं -
   1. पवित्रता के लिए पाप से अलगाव (1 थिस्स 4:3)।
   2. प्रार्थना और धन्यवाद (1 थिस्स 5:17,18)।
   3. भले काम करना (1 पत 2:15)।
2. मार्गदर्शन की पद्धतियाँ -
   1. परमेश्वर प्राय: पवित्र शास्त्र के पदों द्वारा मार्गदर्शन करता है। अपने आप को परमेश्वर के वचन से परिपूर्ण कीजिए। परमेश्वर की इच्छा कभी भी बाइबल के विपरीत नहीं होती।
   2. एक भीतरी दृढ़ विश्वास जो कि परमेश्वर के आत्मा द्वारा दिलाया जाता है (रोमि 8:16; प्रेरि 13:2; यूहन्ना 16:13)।
   3. परिस्थितियों के द्वारा। परमेश्वर एक द्वार बन्द करता है तो दूसरा खोल देता है। परमेश्वर की सन्तान के साथ होने वाली कोई भी बात आकस्मिक घटना नहीं होती।
   4. कभी-कभी चिन्ह के द्वारा (न्यायि 6:37-39); परन्तु सतर्कता बरतने की आवश्यकता है कि आप परिस्थितियों को उपयुक्त बना लेने के प्रयास नहीं करेंगे।
3. अगुवाई प्राप्त करने के लिए जार्ज म्यूलर का सिद्धान्त
   1. अपनी स्वयं की इच्छा को समर्पित कीजिए। पूर्णत: आत्मा की अगुवाई के प्रति खुले रहिये।

2. परमेश्वर के वचन के द्वारा पवित्र आत्मा की इच्छा जानने का प्रयास कीजिए।
3. परमेश्वर द्वारा उत्पन्न की जाने वाली परिस्थितियों पर ध्यान दीजिए।
4. मार्गदर्शन प्राप्त होने के लिए प्रार्थना कीजिए।
5. परमेश्वर में आशा रखिए।

चर्चा – क्या आपको परमेश्वर की अगुवाई पाने का निश्चित अनुभव हुआ है? आपने उसकी अगुवाई को कैसे निश्चित किया?

## पाठ 5 – मनन समय

मनन समय मसीही के जयवन्त जीवन का रहस्य है। इसके बिना आत्मिक हार निश्चित है।

1. प्रात:काल मनन समय के लिए इब्राहीम का उत्कृष्ट उदाहरण
   1. वह बड़े सवेरे उठता था। यह एक उत्कृष्ट अभ्यास है (उत्पत्ति 19:27)।
   2. परमेश्वर से मिलने के लिए उसका एक विशेष स्थान था (उत्पत्ति 12:7-8)। हमारा भी होना चाहिए।
   3. वह इसे अनियमितता से नहीं परन्तु नियमितता से करता था।
   4. वह प्रभु के सम्मुख खड़ा रहा, उसकी प्रतिक्षा करते हुए, ताकि प्रभु स्वयं उससे बातें करे।
2. मनन समय के लिए सामग्री
   1. बाइबल। एक निश्चित योजना के अनुसार, निष्ठापूर्वक बाइबल का अध्ययन कीजिए।
   2. कॉपी और पेन। परमेश्वर के वचन से कुछ शिक्षा लिख लेने के लिए एक कॉपी और पेन रखिए।
   3. प्रार्थना के निवेदन लिखी हुई कॉपी। इसमें प्रार्थनाओं को मिले उत्तर लिखने के लिए भी खाली स्थान हो।
3. मनन समय के लिए एक योजना
   1. संभव हो तो अपना मनन समय प्रतिदिन एक ही समय रखिए।
   2. एक व्यवस्थित योजना का लक्ष्य कीजिए, संभवत: आधे समय पढ़ना और आधे समय प्रार्थना करना।
   3. बहुत ही नियमनिष्ठ मत रहिए। यदि आत्मा अगुवाई करता है तो प्रार्थना करते रहिए। यदि वचन कोई नया प्रकाश प्रदान करता है तो पढ़ते रहिए और परिपूर्ण होते जाइए।
   4. सुझाया गया क्रम : एक छोटी प्रार्थना, बाइबल पढ़ना और फिर प्रार्थना।

वचन का प्रयोग प्रार्थना और निवेदन हेतु आधार के रूप में कीजिए।

## पाठ 6 - अलगाव - 1 यूहन्ना 2:15

"तुम न तो संसार से प्रेम रखो...।" यहाँ "संसार" का अर्थ क्या है? अगला पद इसे स्पष्ट करता है: इसका अर्थ है वर्तमान सांसारिक प्रणाली जो शैतान द्वारा नियंत्रित है।

1. कुछ बातें जिन्हें हम जानते हैं कि गलत हैं
    1. एक विश्वासी और एक अविश्वासी के बीच विवाह (2 कुरि 6:14-17; आमोस 3:3)।
    2. सभी अधर्म और अन्धकार के सभी काम (2 कुरि 6:14)। इसमें व्यवसाय हेतु साझेदारी भी सम्मिलित हो सकती है।
    3. बलियाल; वह पुराना शैतान और धर्मनिन्दक (2 कुरि 6:15)।
    4. मूरतें (2 कुरि 6:16)।
    5. झूठे शिक्षक (1 तीमु 6:5)।
    6. पाप और अनैतिकता के सभी ज्ञात रूप (मदिरापान, इत्यादि) (1 पत 1:16)।
2. अनुकरण करने हेतु मूलभूत नियम
    1. मुझे उस प्रत्येक बात से अलग रहना चाहिए जो मेरे उस विश्वास को डगमगा सकती है जो परमेश्वर में है।
    2. मुझे उस प्रत्येक बात से अलग रहना चाहिए जो मेरी गवाही को नष्ट करेगी।
    3. मुझे उस प्रत्येक बात से अलग रहना चाहिए जो मेरी नैतिकता को कम करेगी और मुझे पाप की ओर ले जाएगी।
    4. यदि मेरा कार्य मेरे भाई के लिए ठोकर का कारण ठहरता है तो मुझे वह कार्य नहीं करना चाहिए (1 कुरि 8:13)।
    5. मुझे ऐसी हर एक वस्तु से अलग रहना चाहिए जो मेरे शरीर को शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक रूप से हानि पहुँचाती है।
    6. क्या यह यीशु मसीह को प्रसन्न करता है? यदि यीशु इस कार्य को नहीं करेगा तो मुझे भी ऐसा कार्य नहीं करना चाहिए (1 पत 2:21)।
    7. क्या यह मेरी गवाही को दृढ़ करेगा? या वह इसे कमजोर बनाएगा? (2 कुरि 6:17)।

चर्चा - क्या पापमय व्यवहारों से अलग होने में आपने कोई संघर्ष किया था? क्या अभी भी संघर्ष के क्षेत्र बाकी हैं? आप कैसे उनका निराकरण कर सकते हैं?

## पाठ 7 - चरवाहे का व्यक्तिगत जीवन

चरवाहे का व्यक्तिगत जीवन सर्वाधिक महत्व का है क्योंकि लोग रविवार के उपदेशों को सुनते हैं और यह देखते हैं कि पूरे सप्ताह भर उन्हें किस प्रकार पालन किया गया है।

वयस्क प्रेरित पौलुस, युवा प्रचारक तीमुथियुस को लिखे अपने पत्रों में बार-बार, जीवन की पवित्रता तथा धार्मिकता पर बल देता है। यदि प्रचारक अपने उपदेशों के अनुरूप जीवन व्यतीत नहीं कर रहा है तो इसे लोग शीघ्र ही जान लेंगे।

1. चरवाहे को धार्मिक जन होना चाहिए–एक धर्मी और पवित्र व्यक्ति जिसमें प्रभु यीशु मसीह की चमक दिखाई देती हो।
2. उसे अपनी पत्नी और अपने परिवार के साथ के सम्बन्धों में आदर्श होना चाहिए। अवश्य है कि वह इस संबंध में अपने झुंड के लिए एक आदर्श ठहरे।
3. उसे प्रार्थना का जन होना चाहिए। उसके लोग उससे यह आशा रखते हैं कि वह प्रतिदिन बहुत समय–घंटो–प्रार्थना में व्यतीत करे। उसे यह प्रार्थना की आवश्यकता शैतान के हमलों से बचने के हेतु आत्मिक सामर्थ्य पाने के लिये है, परमेश्वर की पवित्रता के वरदान में बने रहने के लिए है। परमेश्वर के जन के सम्मुख शैतान अनेक परीक्षाएँ भेजेगा।
4. उसे प्रभु के सम्मुख ही रहना चाहिए जब तक हर एक खोट दूर न हो जाए (यशा 52:11)।
5. उसे अपने झुंड के लिए प्रार्थना करनी चाहिए (1 शमू 12:23; कुलु 1:9)। यदि संभव हो तो उसकी प्रार्थनाएँ उसके अपने लोगों के लिए, एक-एक व्यक्ति के लिए, एक-एक का नाम लेकर, होनी चाहिए।
6. उसे ऐसा जन होना चाहिए जिसमें खोए हुए और मरते हुए लोगों के प्रति दया और करुणा हो (प्रेरि 20:31)।

परमेश्वर कहता है: "हे यहोवा के पात्रों के ढोने वालों, अपने को शुद्ध करो" (यशा 52:11)।

चर्चा - कुछ ऐसे मसीही अगुवों के नाम दीजिए जो आपके लिए उदाहरण रहे हों। उनके उल्लेखनीय गुण क्या-क्या थे?

## पाठ 8 - भीतरी प्रेरणाएँ

परमेश्वर के सेवक को एक सही प्रेरणा से कार्य करना चाहिए–प्रभु के नाम को महिमा देने के लिए। पौलुस की प्रेरणा पैसा अथवा प्रसिद्धि नहीं थी, परन्तु लोगों का हृदय–उनका उद्धार तथा उन्हें विश्वास में उन्हें दृढ़ करना थी।

उसका आग्रह और उसकी धुन उसे निरंतर आगे बढ़ने को बाध्य करती रही (1 कुरि 1:15-18)।

लोग विश्वास कर लें इस एक बात के लिए वह खाना-पीना तक छोड़ने को तैयार था (1 कुरि 9:4)।

उसने कुरिन्थुस में वेतन लेने से भी इन्कार कर दिया ताकि सन्देह से बचे और अधिक आत्माओं को जीत सके। उसने स्वयं को समाज के विभिन्न वर्गों के अनुकूल बना लिया था (1 कुरि 9:19-23)।

यदि अधिक लोग बचाए जा सकते हो तो वह विवाह करने, घर और बच्चों की इच्छा रखने से बचे रहने को तैयार था।

अद्‌भुत संदेश, समय की कमी, मृत्यु की निकटता और मसीह का आगमन ही उसकी प्रेरणाएँ थी कि सब कुछ परमेश्वर की महिमा के लिए करे (1 कुरि 10:31; कुलु 3:17)।

चर्चा - वे कौन-कौन से व्यक्तिगत त्याग थे जो पौलुस ने सेवकाई के खातिर किए थे? क्या आप को लगता है कि वे महत्त्वपूर्ण थे?

पौलुस की उन चार प्रेरणाओं पर टिप्पणी कीजिए जो इस पाठ में सूचीबद्ध हैं।

## पाठ 9 - आत्मिक अगुवे की योग्यताएँ

1. उसे अवश्य ही निष्कलंक, ईमानदारी की धाक रखने वाला, धर्मी और सुनाम व्यक्ति होना चाहिए (तीतुस 1:6)।
2. उसे अवश्य ही एक ही पत्नी का पति होना चाहिए और यदि उसके बच्चे हैं तो वे विश्वासयोग्य, आज्ञाकारी और नियंत्रित होने चाहिए(तीतुस 1:6)। यही परख है। यदि कोई अपने घर को भली-भाँति नियंत्रित करता है तो वही कलीसिया में शासन कर सकता है।
3. उसे अवश्य ही जिद्दी नहीं होना चाहिए; वह तानाशाह न हो। उसे जल्दी क्रोधित होने वाला नहीं होना चाहिए, वह पियक्कड़ न हो, वह हिंसक न हो और वह पैसों का लालची न हो (तीतुस 1:7)। यह महत्वपूर्ण है। वरना कलीसिया का धन उसके लिए फन्दा बन जाएगा।
4. वह पहुनाई करने में रुचि रखने वाला हो, साथी विश्वासियों और अजनबियों के प्रति प्रेम प्रगट करने वाला और वह उस सबसे जो भला, पवित्र और लाभदायक है प्रेम रखता हो (तीतुस 1:8)।
5. आत्मिक अगुवे की और भी विशेषताएं और गुण पहले तीमुथियुस 3:2-12 में मिलते हैं।

चर्चा - (1) क्या पहला तीमुथियुस के वचनों में कोई गुण हैं तो तीतुस के

शास्त्रभाग में नहीं हैं? (2) इन में से प्रत्येक पर विचार कीजिए और यह बताइए कि वह गुण एक कलीसिया के अगुआ में होना क्यों महत्वपूर्ण है? (3) क्या अन्य और भी विशेषताएँ हैं जिन्हें इस सूची में जोड़ सकते हैं?

## पाठ 10 - व्यभिचार

आत्मिक अगुवे को, व्यभिचार के पाप के प्रति परमेश्वर द्वारा दी गई चेतावनी की ओर अवश्य ध्यान देना चाहिये। सातवी आज्ञा कभी भी रद्द नहीं की गई है (निर्गमन 20:14,17)।

जब हम यह देखेंगे कि परमेश्वर व्यभिचार से कितनी घृणा करता है तब ही मात्र हम विवाह की पवित्रता को देख सकेंगे। क्या आपको याद है कि परमेश्वर ने व्यभिचार करने वाले दोनों जनों के लिये मृत्युदण्ड की आज्ञा दी थी (लैव्यव्यवस्था 20:10)? अवश्य है कि आत्मिक अगुवा सब प्रकार के कामुक/लैंगिक गलत व्यवहारों से और गुणों से अपने आप को दूर रखें।

शैतान अपनी शक्ति से हर संभव प्रयास करेगा कि परमेश्वर के सेवक को पराजित करे। उसे इससे अधिक आनन्द और किसी बात से नहीं मिलता कि जो व्यक्ति अपनी सेवकाई की ऊँचाई पर है उसे गिरा दे। वह सेवक और गिरता जाता है; गम्भीर रीति से गिर जाता है और कई बार वह अपने साथ उन्हें भी नीचे ले आता है जो प्रभु के साथ चलने में कभी उसके अनुयायी रहे हो। दु:खद सत्य यह है कि ऐसे अनेक आत्मिक अगुवे हैं जो कि आत्मिक विजय तथा सौभाग्य के शिखर पर पहुँचने के बाद पराजय की काली खाई में गिर गए क्योकि वे स्त्रियों के साथ के अपने सम्बन्धों में सतर्क नहीं रहे। उनकी अपनी सेवकाई नष्ट हो गई, उनके चरित्र पर असाध्य दाग लग गया और मसीह यीशु की कलीसिया उपहास की पात्र बनी।

परमेश्वर के सेवक को आकर्षण के विरुद्ध निरन्तर सतर्क रहना चाहिए। उसे हर आकर्षण को बढ़ने से पहले ही रोक देना चाहिए। जब कभी वह किसी स्त्री को परामर्श देता है अथवा उसके साथ प्रार्थना करता है तो अवश्य ही उसके साथ उसकी पत्नी अथवा कलीसिया के किसी वृद्ध को होना चाहिए। उसे नैतिक दुर्व्यवहार की हर एक अभिव्यक्ति से दूर रहना चाहिए।

आपको बहुत अधिक प्रार्थना करनी चाहिए ताकि परमेश्वर आपको शैतान के तीरों से बचाए, परन्तु इसके साथ ही आपको खतरे की हर एक चेतावनी के प्रति सतर्क भी रहना चाहिए। अवश्य है कि हम जागते रहें और प्रार्थना भी करते रहें।

चर्चा - शिमशोन तथा दाऊद पर विचार कीजिए और बताइए कि स्त्रियों के साथ के उनके गलत संबंधों ने कैसे उन पर महादु:ख लाया।

## पाठ 11 - परिवार में अगुवाई

पुलपिट पर की धार्मिकता के साथ-साथ घर में भी धार्मिकता होनी चाहिए। एली याजक को दंड मिला क्योंकि वह अपने दुष्ट पुत्रों को नियंत्रित न कर सका, जब कि परमेश्वर ने पहले इब्राहीम के परिवार में उसकी सफलता को पहचाना तथा उसके बाद उसे बड़ी जिम्मेवारियाँ सौंपी।

1. मसीही अगुवे को एक आदर्श पति होना चाहिए। अपनी पत्नी के प्रति उसकी निष्ठा देखकर दूसरी स्त्रियाँ उसके सामने परीक्षा नहीं ला पाएँगी। उसका अपनी पत्नी के साथ एक सहयोगी के समान व्यवहार करना स्त्रियों के प्रति उस सम्मान का प्रदर्शन करेगा जो कलीसिया का आदर्श है।

२. उसके सन्तानों से यह प्रगट होना चाहिए कि वे एक प्रेमी और सुव्यवस्थित परिवार के हैं (1 तीमु 3:12)। उन्हें आज्ञाकारी और नियंत्रित रहना चाहिए। बाहरवालों के लिए कठिन होगा कि किसी ऐसे व्यक्ति का सम्मान करें जिसके अपने बच्चे उसका आदर नहीं करते।

३. अगुवे का घर साथी विश्वासियों और बाहरवाले लोगों के लिए भी खुला रहना चाहिए (तीतुस 1:8)। उसके घर में भक्ति का वातावरण होना चाहिए ताकि आने वाले अतिथि यह आसानी से पहचान सकें कि उस घर का मुखिया मसीह है।

चर्चा - कौन-सी बात एक मसीही अगुवे के बच्चों पर असर डालेगी कि कलीसिया के दूसरे जवानों के लिए आदर्श बनें? उनका प्रशिक्षण कब आरम्भ होना चाहिए?

## पाठ 12 - केवल सत्य!

"तुम्हारी बात हाँ की हाँ या नहीं की नहीं हो" (मत्ती 5:37)।

मसीही सेवक के लिए कोई "छोटे सफेद झूठ" नहीं होते। उसे एक ऐसा जन होना अवश्य है जिस पर भरोसा रखा जा सके। धोखे के बारे में प्रभु के बड़े कड़े कथन हैं—भजन 101:7 देखिए।

1. बढ़ा-चढ़ाकर बोलना - प्रचारक लोग अक्सर बढ़ा-चढ़ाकर बोलने का पाप करते हैं। वे अक्सर बहुत बड़ी भीड़ के उपस्थित होने की तथा अनेकों के द्वारा मन-पवित्तन किये जाने की रिपोर्ट देते हैं जब कि कार्य वास्तव में छोटा होता है। ऐसा प्रचारक के लिए महिमा लाने हेतु किया जाता है, परमेश्वर के लिए नहीं।

2. प्रतिज्ञाएँ पूरी करना - यदि कोई प्रतिज्ञा की जाती है तो उसे पूरा करना चाहिए। अन्यथा वह प्रतिज्ञा एक झूठ बन जाती है और परमेश्वर के पास झूठों

के लिए कोई आशीष नहीं है।

चर्चा – भजन 101:7; नीति 12:22; 19:5; कुलु 3:9 और प्रका 21:8 इन पदों को पढ़कर उन पर अपने विचार दीजिए।

## पाठ 13 – अर्थिक प्रबन्ध

आप अपेक्षा करेंगे कि उधार वापस करने में, संसार भर के सारे लोगों में, मसीही कर्मचारी ही सबसे अधिक ईमानदार और सबसे अधिक विश्वासयोग्य होगा। दु:खद बात है कि ऐसा नहीं होता। बहुत–से व्यापारी परमेश्वर के सेवकों को कर्ज देने या उधार में रुपया देने से इनकार करते है क्योंकि वे उनसे धोखा खा चुके हैं। एक मसीही अगुवे के लिए यह कितनी दु:खदायी बात है कि उसके कारण प्रभु का नाम अनादर पाता है।

पौलुस का निर्देश एकदम स्पष्ट था : आपस के प्रेम को छोड़ और किसी बात में किसी के कर्जदार न हों (रोमि 13:8)। व्यक्तिगत धन तथा कलीसिया के पैसों के प्रबन्ध में अगुवे को पूरी रीति से ईमानदार होना चाहिए। पैसा देने की प्रतिज्ञा अवश्य पूरी करनी चाहिए। नहीं तो उसकी सेवकाई का अन्त असफलता में होगा और परमेश्वर का नाम अपमानित होगा।

चर्चा – रोमियों 12:17 पढ़िए। आपके विचार से इसका अर्थ क्या है? क्या आप ऐसे मसीही कर्मचारियों को जानते हैं जो अपने आर्थिक प्रबन्ध के मामलों में लापरवाह या बेईमान रहे हैं? इसका मसीह के कार्य पर क्या प्रभाव पडा था?

## पाठ 14 – अनुशासित अध्ययन

प्रेरित पौलुस ने युवा सेवक तीमुथियुस को परामर्श दिया था : "पढ़ने में लौलीन रह" (1 तीमु 4:13)। जो कोई वचन का प्रचार करता है उसे समस्त उपलब्ध सहायक अध्ययन सामग्रियों की सहायता से वचन की गहराई में जाना चाहिए। यह महत्वपूर्ण सुझाव स्मरण रखिए : 'लोग जब भी आपको सुनते हैं, हर बार कम–से–कम कुछ नयी बातें सीखें।'

टीकाएँ तथा अध्ययनयुक्त बाइबलों का अधिकाई से उपयोग करना चाहिए, साथ ही साथ उन सब पुस्तकों का भी जो पिछले सारे दिनों और समयों में परमेश्वर के लोगों द्वारा लिखी गई हैं।

चर्चा – आपने हाल ही में क्या पढ़ा जिसने आपको परमेश्वर के वचन में दृढ़ किया है? कुछ विचार–विषय बताइए।

## पाठ 15 - अपनी देह को स्वस्थ्य रखिए

देह परमेश्वर का मन्दिर है; इसकी सही देखभाल की जानी चाहिए (1 कुरि 3:16)। संतुलित भोजन खाइए और ज्यादा खाने से बचिए। रात्री में जल्दी सोइए और सुबह जल्दी उठिए। प्रतिदिन कुछ व्यायाम कीजिए।

अच्छे स्वास्थ की आदतें आप को परमेश्वर की सेवा में कुछ और वर्ष देंगी। 'सादा जीवन और उच्च विचार'–यही आपके जीवन का नारा होना चाहिए।

चर्चा - जिनसे शारीरिक स्वास्थ्य का लाभ होगा ऐसे कुछ शारीरिक व्यायाम का प्रदर्शन कीजिए। उन अन्य बातों की चर्चा कीजिए जो आपके स्वास्थ्य को प्रभावित करती हैं।

## पाठ 16 - आलस्य

पौलुस के पास, "ताकि तुम आलसी न हो जाओ" ऐसा लिखने का अपना एक कारण था (इब्रा 6:12)। मसीही कर्मचारी के ऊपर कोई निरीक्षक नहीं होता जो उसके ईमानदारी से परिश्रम में बिताए गए घंटों को जाँचता रहे। वह पुलपिट पर जाता है और उसी संदेश को बार-बार दोहराता है जिसे वह पहले भी प्रचार कर चुका है। प्राय: उसके प्रचार के पीछे कोई सामर्थ नहीं होती; क्योंकि उसने प्रार्थना में थोड़ा ही समय बिताया होता है। उसके लोगों को लगता हैं कि उनका कोई चरवाहा नहीं है, क्योंकि वह लोगों के घर जाकर भेंट करने तथा परामर्श देने में कम समय देता है।

कटनी का समय थोड़ा है तथा "जो बेटा कटनी के समय भारी नींद में पड़ा रहता है, वह लज्जा का कारण होता है" (नीति 10:5)। "अब तुम्हारे लिए नींद से जाग उठने की घड़ी आ पहुँची है" (रोमि 13:11)। आप मसीह के दास, उत्कृष्ट बुलाहट के भागीदार तथा महिमामय कार्य के लिए जिम्मेवार हैं। सुबह जल्दी उठिए; आराधना और सेवा के लिए एक समय-सारिणी का पालन कीजिए ताकि हर एक घंटा लाभपूर्ण हो सके। "हे सोने वाले जाग" (इफि 5:14)।

चर्चा - वे कौन-सी परिस्थितियाँ है जो एक प्रचारक को आसनी से आलसी बना देती हैं? क्या आप आलसी प्रचारकों को जानते हैं? क्या उनके लोगों ने उनका आदर किया?

## पाठ 17 - स्तुति

क्या आप आत्मिक अन्धकार के समय से गुजर रहे हैं? क्या आप जंगल के अनुभव से थक गए हैं? क्या आपने किसी बोझ से अपना सिर झुका लिया है?

स्तुति ही उदासी एवं आत्मिक पराजय की सुरंग को खोलने की कुंजी है। स्तुति आपकी औषधि है; यह आपके देह, आत्मा, प्राण में जादू कर देगी (नीति

15:13-17:22)। स्तुति कीजिए! अपनी हालतों के लिए दूसरों पर और परमेश्वर पर दोष लगाने में अपना समय और अपनी शक्ति बर्बाद न कीजिए। सारी परिस्थितियों एवं हालातों पर से अपनी दृष्टि हटाइए और उसे परमेश्वर पर केन्द्रित कीजिए। अपने घाव एवं दर्द को भुला दीजिए। आपके लिए एक अवसर है कि अपनी समस्याओं को स्तुति में बदल दें; संसार को यह बता दें कि इन अँधेरे समयों में भी एक जन है जो स्तुति के योग्य है।

कभी-कभी स्तुति करना सरल नहीं होता—इसी लिए हमें निर्देश दिया गया है कि परमेश्वर को स्तुति का बलिदान निरंतर चढ़ाएँ।

जब आप प्रार्थना के लिए घुटनों पर आते हैं, अपनी बिनतियों को भूल जाइए और भजन संहिता 103 या दाऊद का कोई और स्तुति-गीत पढ़िए और आराधना में परमेश्वर की स्तुति-प्रशंसा करने में ध्यान केन्द्रित कीजिए।

"मैं फिर कहता हूँ आनन्दित रहो।"

चर्चा - 2 इतिहास 20:22 पढ़िए तथा ध्यान दीजिए कि स्तुति करने का क्या प्रभाव पड़ा था। भजन संहिता की पुस्तक को ध्यान से पढ़िए और उन अनेक आदेशों पर ध्यान दीजिए जो परमेश्वर की प्रशंसा करने के लिए दिए गए हैं।

## पाठ 18 - जब परीक्षाएँ आती हैं

परमेश्वर के दास पर परीक्षाएँ आएँगी ही : यह उसपर निर्भर करता है कि वह अपना बचाव करे। जब आप अपने भीतर पाप की ओर एक कदम बढ़ाने की इच्छा महसूस करते हैं तो पवित्र आत्मा आपको ये बातें याद दिलाकर पीछे हटाए :

1. परमेश्वर के विषय में सोचिए (उत्प 39:9; 1 शमू 2:22-25; याकूब 4:4)।
2. अपने विषय में सोचिए (1 कुरि 6:18; नीति 6:32)।
3. अपने जीवन-साथी के विषय में सोचिए (मलाकी 2:14-16)।
4. पाप में आपका साथ देने वाले साथी के विषय में सोचिए (मत्ती 18:6)।
5. अपने बच्चों के विषय में सोचिए (गिनती 14:33)।
6. परिवार के विषय में सोचिए (उत्प 12:17; 20:18)।
7. लज्जा एवं पश्चात्ताप के विषय में सोचिए (नीति 5:11-14; 6:32,33)।
8. कलीसिया के विषय में सोचिए (1 कुरि 5:1-6; 1 शमू 2:24)।
9. गैर मसीहियों के विषय में सोचिए (रोमि 2:22-24)।
10. सुसमाचार के विरोधियों के विषय में सोचिए (2 शमू 12:13-14)।
11. अपनी सेवकाई के विषय में सोचिए (न्यायि 16:19,20; 1 कुरि 9:27)।
12. परमेश्वर के न्याय के विषय में सोचिए (इब्रा 13:4; यहेज 16:38)।

13. अनन्तकाल के विषय में सोचिए (गल 5:19-21)।

14. अन्ततः भविष्य की उस महिमा के विषय में सोचिए जो यदि आप विजयी होंगे तो मिलेगी (प्रका 14:4)।

चर्चा - उपरोक्त कारणों में से कौन-सा कारण आपके लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण है? क्यों?

## पाठ 19 - अनुकरण करने योग्य आदर्श

हम पसंद करें या न करें, लोग उस व्यक्ति का अनुकरण करेंगे जो पुलपिट पर खड़ा होता है, उसकी अच्छी और बुरी दोनों बातों की नकल की जाएगी। पौलुस इफिसियों 5:1 में कहता है, "परमेश्वर के सदृश्य बनो।" और यदि इस सलाह का पालन किया जाए तो असफल होने का खतरा ही नहीं होता। परन्तु एक शारीरिक मनुष्य एक अगुवे का ही अनुसरण करना पसंद करता है, और आत्मिक अगुआ अपने झुंड के सामने रखे जाने वाले आदर्श के लिए जिम्मेवार होता है।

यदि वह ऐसा मनुष्य है जो परमेश्वर के साथ अपनी चाल के विषय में बहुत ही सावधान है तो लोग भी उसके पीछे धार्मिकता के मार्ग पर चलेंगे। परन्तु यदि उसे पाप के साथ खेल करना या अपने मसीही माप-दंड के साथ थोड़ा बहुत समझौता कर लेना एक आसान-सी बात जान पड़ती है तो संभवतः वे लोग उससे भी आगे पाप में जाएँगे। यदि वह खोए हुओं को ढूँढने और आत्माओं को जीतने की लगन रखता है तो उसे कुछ ऐसे स्वयंसेवक मिल जाएँगे जिन्हें वह साक्षी देने का प्रशिक्षण देना आरंभ कर सकता है। परन्तु यदि अगुआ ही खोए हुओं तक पहुँचने में धीमा है तो उसके लोग मात्र रविवारीय मसीही, वचन को मात्र सुनने वाले होंगे उस पर चलने वाले नहीं होंगे। यदि उसकी जीवन-शैली त्यागपूर्ण है, दान देने वाली है तो शीघ्र ही कंजूस मसीही अपना पर्स खोलेंगे और प्रभु को भेंट देने में आनन्द महसूस करेंगे।

पौलुस ने थिस्सलुनिकियों की प्रशंसा करते हुए कहा था: "तुम ... हमारी और प्रभु की सी चाल चलने लगे" (1 थिस्स 1:6)। उसने निर्दोष जीवन जीने का दृढ़ निश्चय किया था और कहता है, "मैं तुमसे बिनती करता हूँ कि मेरी सी चाल चलों" (1 कुरि 4:16)।

चर्चा - आपका आदर्श किस प्रकार के मसीही को उत्पन्न करेगा?

## पाठ 20 - विजय निश्चित है!

फिलिप्पियों अध्याय 3 और 4 पढ़िए।

परमेश्वर के अनेक सेवक हीनता की भावना के शिकार होते हैं जो उन्हें अंदर-ही-अंदर काटती है और निष्क्रिय बना देती है। वे अपने को प्रभु का सेवक बताने

में भी कायर होते है। परन्तु परमेश्वर उन्हें "परमप्रधान परमेश्वर के दास" मानता है (दानि 3:26)। परमेश्वर की सेवा करने में पौलुस की यही मनोवृत्ति थी (1 तीमु 1:11-12)।

परमेश्वर ने हमें सामर्थ की आत्मा दी है। प्रेरितों 1:8 में सामर्थ के लिए ग्रीक शब्द 'डायनामाइट' का प्रयोग हुआ है। इस ईश्वरीय सामर्थ के विरुद्ध कोई भी सामर्थ टिक नहीं सकती।

परमेश्वर ने आपको जो सामर्थ दी है उसे कम न आँकिए। असंभव के लिए प्रयास कीजिए। सारे संभावित क्षेत्रों में पहुँचिए। कभी मत सोचिए कि आप धनी एवं उच्च शिक्षा प्राप्त लोगों तक नहीं पहुँच सकते।

"छोटा" पौलुस ने महान कार्य किए क्योंकि उसे परमेश्वर की सामर्थ में भरोसा था। उस सामर्थ को समझिए और काम कीजिए। परमेश्वर को आपके द्वारा अपनी महान सामर्थ प्रकट करने का अवसर दीजिए।

परमेश्वर को आपकी आवश्यकता है।

चर्चा - निर्गमन 4:2; न्यायियों 15:15; 1 शमूएल 17:40; जर्कयाह 4:10; मत्ती 13:32 और यूहन्ना 6:9 इन पदों को पढ़िए और उन कमजोर वस्तुओं पर ध्यान दीजिए जिनका प्रयोग परमेश्वर ने अपनी सामर्थ को प्रकट करने तथा बड़े-बड़े परिणाम के कार्य करने के लिए किया।

पहले कुरिन्थियों 1:27-29 में एक महान सच्चाई पाई जाती है। इन पदों को मुखाग्र कीजिए।

# 6 डिनॉमिनेशनल संबंध

**हर एक डिनॉमिनेशन** की अपनी विशिष्टताएँ होती हैं, और इसलिए कि यह पाठ्यक्रम सभी कलीसियाओं के लिए है, लिखित पाठों में प्रत्येक का पूर्ण विवरण देना असंभव होगा। तथापि शिक्षिक अपने समूह के डिनॉमिनेशन का इतिहास और उसकी विशिष्टता प्रस्तुत करने हेतु नीचे दिए निर्देशों का प्रयोग कर सकेंगे।

इस पाठ्यक्रम की समाप्ति पर नये प्रचारक को महसूस होना चाहिए कि वह अपनी सेवा के क्षेत्र से पूर्णत: परिचित हो गया है; और उसे एक अयाजकीय प्रचारक के रूप में कार्य आरम्भ करने में आसानी लगनी चाहिए।

## संस्था संबंधित पाठ

पाठ 1: डिनॉमिनेशन का विदेशों में इतिहास, अन्य डिनॉमिनेशन्स् से उसकी जड़ें; उसके संस्थापक; आरम्भिक अगुवे; उसके संगठन के कारण।

पाठ 2: डिनॉमिनेशन का भारत में इतिहास; अन्य राज्य जहाँ यह कार्यरत है; प्रत्येक राज्य में कलीसिया का आकार, उन अन्य कलीसियाओं में अगुवे।

पाठ 3: सिद्धान्त-संबंधी विशेषताएँ; दूसरे डिनॉमिनेशन्स् से भिन्नता
4: विशेष बल दी जाने वाली बातें और सेवकाइयाँ
5: इन विशिष्टताओं के लिए पवित्र शास्त्र का आधार

पाठ 6: डिनॉमिनेशन का राष्ट्रीय संगठन, मुख्य कार्यालय तथा अधिकारी वर्ग; अधिकारियों की निर्धारित सेवा-अवधि तथा उनके चुनाव का तरीका।

पाठ 7: उस डिनॉमिनेशन की शिक्षण संस्थाएँ एवं अस्पताल; उसके कार्यालय के प्रमुख; उसके वार्षिक सम्मेलन और अन्य राष्ट्रीय सभाएँ।

पाठ 8: उसका जिला कार्यालय एवं अधिकारी; जिलो में होने वाली सभाएँ और जिले की गतिविधियों की समय-सारणी।

पाठ 9: उसकी स्थानीय शैक्षणिक एवं चिकित्सा संबंधी सुविधाएँ। जिले में गाँवों की संख्या, उन गावों की संख्या जिनमें पास्टर या प्रचारक हैं।

पाठ 10: भावी प्रचारकों को तैयार करने डिनॉमिनेशन की प्रशिक्षण संस्थाएँ।

## अयाजकीय पास्टर्स संबंधित पाठ

पाठ 11: डिनॉमिनेशन के प्रति नये प्रचारक की जिम्मवारियाँ; उससे अपेक्षित सेवाएँ।

पाठ 12: डिनॉमिनेशन की आराधना संबंधी निर्देशिका का प्रयोग करते हुए नए विश्वासियों को बपतिस्मा के लिए तैयार करना।

पाठ 13: सदस्य पाप में पड़ जाए तो प्रचारक को क्या करना चाहिए; इस समस्या को सुलझाने के लिए उस डिनॉमिनेशन का तरीका।

पाठ 14: यदि प्रचारक का जादू-टोना करने वालों अथवा अन्य जातियों के अगुवों द्वारा विरोध किया जाए तो उसे क्या करना चाहिए।

पाठ 15: विवाह के लिए किस प्रकार तैयारी की जाती है?

पाठ 16: कलीसिया में दान एकत्रित करना तथा पैसों का हिसाब रखना।

पाठ 17: गाँवों में कलीसिया-भवनों का निर्माण करना।

पाठ 18: पड़ोसी गाँवों में कलीसियाई कार्य करना। सुसमाचार दल।

पाठ 19: सुसमाचार-प्रचार सप्ताहों की सेवकाई के लिए पूरे जिले में प्रचारकों की अदला-बदली हेतु सहयोग।

पाठ 20: यदि कलीसिया में कोई गम्भीर समस्या आ जाए तो प्रचारक परामर्श और सलाह लेने के लिए किसके पास जाएँ।

# संदर्भिका


1. एल्बन, डगलस। '100 बाइबल लेसेन्स्'
गॉस्पल लिटरेचर सर्विस, मुम्बई, भारत।
2. बाल्चिन, जॉन। 'काम्पैक्ट सर्वे ऑफ द बाइबल'
बेथनी हाऊस पब्लिशर्स, मिनियापोलिस, एम एन।
3. ईवान्स, विलियम। 'द ग्रेट डॉक्ट्रिन्स ऑफ द बाइबल' एण्ड
'हाऊ टू प्रीपेयर सर्मन्स्'
मूडी बाइबल इंस्टीट्यूट ऑफ शिकागो,
मूडी प्रेस। अनुमति द्वारा प्रयोग।
4. मैक्गी जे. वरनॉन। 'बुक्स ऑफ द बाइबल' एण्ड
'ब्रीफ्रिंग द बाइबल',
थ्रू दी बाइबल बुक्स्, पासादेना, सी ए।
5. मीड, हेनरीटा। 'व्हाट द बाइबल इज आल अबाउट्'
रीगल बुक्स, डिव आफ गॉस्पल लाइट,
पी. ओ. बॉक्स 3875, वेनचूरा,
सी ए 93006। अनुमति द्वारा प्रयोग।
6. स्टैनली, डॉ. लिलियन। 'द आईडियल वूमन', और
स्टैनली, रेव्ह. आर.। 'प्रीचर्स एण्ड पीपल'
ब्लेसिंग बुक्स्, पोस्ट बैग 609, वेल्लोर 632006, भारत।



इन पुस्तकों के प्रकाशकों के प्रति अत्यंत आभार प्रगट किया जाता है, जिन्होंने **पोर्टेबल बाइबल स्कूल्स्** की पाठय-पुस्तिका में इनका प्रयोग करने के लिए अनुग्रह-सहित अनुमति दी है।